फ़िराक़ गोरखपुरी

बज़्मे ज़िन्दगी : रंगे शायरी

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

रघुपति सहाय 'फ़िराक़' गोरखपुरी

बज़्मे-ज़िन्दगी : रंगे-शायरी

फ़िराक़े-हमनवा-ए-मीर-ो-ग़ालिब अब नये नग़्मे
वो बज़्मे-ज़िन्दगी बदली वो रंगे-शायरी बदला

बज़्मे-ज़िन्दगी : रंगे-शायरी

(रघुपति सहाय 'फ़िराक़' गोरखपुरी)

चयन एवं रूपान्तर

डॉ० जाफ़र रज़ा

सम्पादक : लक्ष्मीचन्द्र जैन



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय ग्रन्थमाला :
सम्पादक एवं नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन

ग्रन्थांक : ३१०
प्रथम संस्करण : नवम्बर १९७०
(समारोह-संस्करण)



बज़्मे-ज़िन्दगी : रंगे-शायरी

(कविता)

फ़िराक़ गोरखपुरी



प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

मुद्रक

सन्मति मुद्रणालय,

दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५

० ० ० ०

BAZME-ZINDAGI
RANGE - SHAIRI
(Poems)

Firaq Gorakhpuri

Published by : BHARATIYA JNANPITH
3620/21, Netajee Subhash Marg, Delhi-6
Phone : 272582. *Gram* : 'JNANPITH' Delhi-6

Price
Rs. 12/- Only

मूल्य : बारह रुपये।

प्रस्तुति

'बज़्मे ज़िन्दगी : रंगे शायरी' का प्रकाशन उस अवसर पर हो रहा है जब २७ नवम्बर १९७० को रघुपति सहाय 'फ़िराक़' गोरखपुरी को उन की उर्दू काव्यकृति 'गुले नग़मा' के लिए पुरस्कार-समर्पण-समारोह आयोजित है।

यह पाँचवाँ समारोह है। प्रत्येक समारोह के अवसर पर भारतीय ज्ञानपीठ ने पुरस्कृत कृति का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया है, या, यदि पुरस्कृत कृति हिन्दी की हुई तो, उस का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में तथा अँगरेज़ी में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस प्रकार इस श्रृंखला में अब तक भारतीय ज्ञानपीठ, शंकर कुरुप की मलयालम काव्य-कृति 'बाँसुरी' (ओटक्कुषल्), ताराशंकर बन्द्योपाध्याय के बाँग्ला उपन्यास 'गणदेवता', डॉ० पुट्टप्पा और डॉ० उमाशंकर जोशी की क्रमशः कन्नड़ और गुजराती काव्य-कृतियाँ, 'श्री रामायण दर्शनम्' एवं 'निशीथ', और सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य-संकलन 'चिदम्बरा' के मलयालम, बाँग्ला, कन्नड़, गुजराती, मराठी, तेलुगु और अँगरेज़ी अनुवाद पाठकों को भेंट कर चुकी है। श्री 'फ़िराक़' की पुरस्कृत कृति 'गुले नग़मा' का हिन्दी रूपान्तरण यद्यपि प्रकाशित हो चुका है, किन्तु 'फ़िराक़' के कृतित्व का जितना बड़ा अवदान उर्दू शायरी को प्राप्त हुआ है उस का पूरा और प्रामाणिक आकलन अपेक्षित लगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम ने 'फ़िराक़' साहब से अनुरोध किया। उन्होंने सहर्ष हमारा प्रस्ताव स्वीकार किया और उन के परामर्शानुसार प्रयाग विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के प्राध्यापक डॉ० जाफ़र रज़ा ने एक प्रारम्भिक संचयन (शब्दार्थ सहित) तैयार किया। डॉ० रज़ा ने जो हिन्दी काव्य के भी गम्भीर-अध्येता हैं, 'गुले नग़मा' के हिन्दी रूपान्तरण की पाण्डुलिपि भी तैयार की थी, अतः उन्हें मालूम था कि हिन्दी में 'फ़िराक़' के काव्य-कृतित्व का प्रतिनिधित्व करने वाले संकलन की कमी को पूरा करने के लिए नये संकलन में क्या-कुछ, और विशेष होना चाहिए। भारतीय ज्ञानपीठ को यह गर्व है कि हिन्दी में उस के द्वारा सब से पहले प्रकाशित प्रचुर मात्रा में उर्दू काव्य को देवनागरी लिपि में प्रस्तुत करने का श्रेय काव्यमर्मज्ञ श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय को है जो ज्ञानपीठ के मन्त्री रह चुके हैं। गोयलीयजी द्वारा प्रस्तुत इस प्रकार के प्रथम संकलन 'शेरो-शायरी' का प्रधान सम्पादकीय जब मैं ने लोकोदय ग्रन्थमाला का सम्पादक होने के नाते लिखा था तब से अब तक हिन्दी पाठकों के सामने उर्दू का काव्य सैकड़ों छोटे-बड़े संग्रहों और संकलनों के रूप में इतनी व्यापकता से आ चुका है कि हिन्दी-उर्दू का अन्तर, अब न भाषा

का अन्तर रहा और न लिपि का ही, क्योंकि देवनागरी लिपि ने उर्दू काव्य के लिए भी अपने-आप को प्रतिष्ठित कर लिया है।

उर्दू और हिन्दी काव्य की आत्मा और उस की भाषा किस सीमा तक एक हो सकती है और भारतीय सन्दर्भ में किस प्रकार वह एक हो गयी है, इस का प्रमाण 'फ़िराक़' की क्रान्तिकारी शायरी है। उस शायरी का प्रामाणिक प्रतिनिधित्व करने के लिए तथा पुरस्कार-समर्पण समारोह को विशेष सार्थकता देने के लिए इस संकलन 'बज़्मे ज़िन्दगी : रंगे शायरी' का प्रकाशन आयोजित हुआ है। डॉ० रज़ा की प्रारम्भिक पाण्डुलिपि का सम्पादन करते समय मैं ने यह प्रयत्न किया है कि संकलन में ऐसी चुनी हुई नयी सामग्री भी अधिक-से-अधिक मात्रा में आये जो अब तक के प्रकाशनों में विशिष्ट हो; तथा सामग्री की प्रस्तुति इस प्रकार हो कि 'फ़िराक़' साहब ने उर्दू शायरी का जो कायाकल्प किया है वह प्रक्रिया स्वयं मुखरित हो। पुस्तक का नामकरण 'बज़्मे ज़िन्दगी : रंगे शायरी' 'फ़िराक़' साहब के उस शेर पर आश्रित है जो उन के जीवन के व्यापक परिवेश का, उन के काव्य की उपलब्धि का दर्पण है :

'फ़िराक़' हमनवा-ए-मीर-ो-ग़ालिब अब नये नग़मे
वो बज़्मे-ज़िन्दगी बदली, वो रंगे-शायरी बदला

संकलन का प्रारम्भ 'फ़िराक़' की रुबाइयों के विभाजन को व्यक्त करने वाले जिन शीर्षकों से हो रहा है—'सुन्दरम्, सत्यम्, शिवम् तथा अन्य'— वे वर्गीकरण की बारीक रेखाओं को नहीं, 'फ़िराक़' के काव्य की आत्मा को ध्वनित करते हैं—उन का काव्य जो भारतीय साहित्य की मूल उद्भावनाओं को आत्मसात् करता है और भारतीय जीवन के परिवेश को, उस के यथार्थ को, उस में व्याप्त नयी चेतनाओं और प्रेरणाओं को प्रतिबिम्बित करता है।

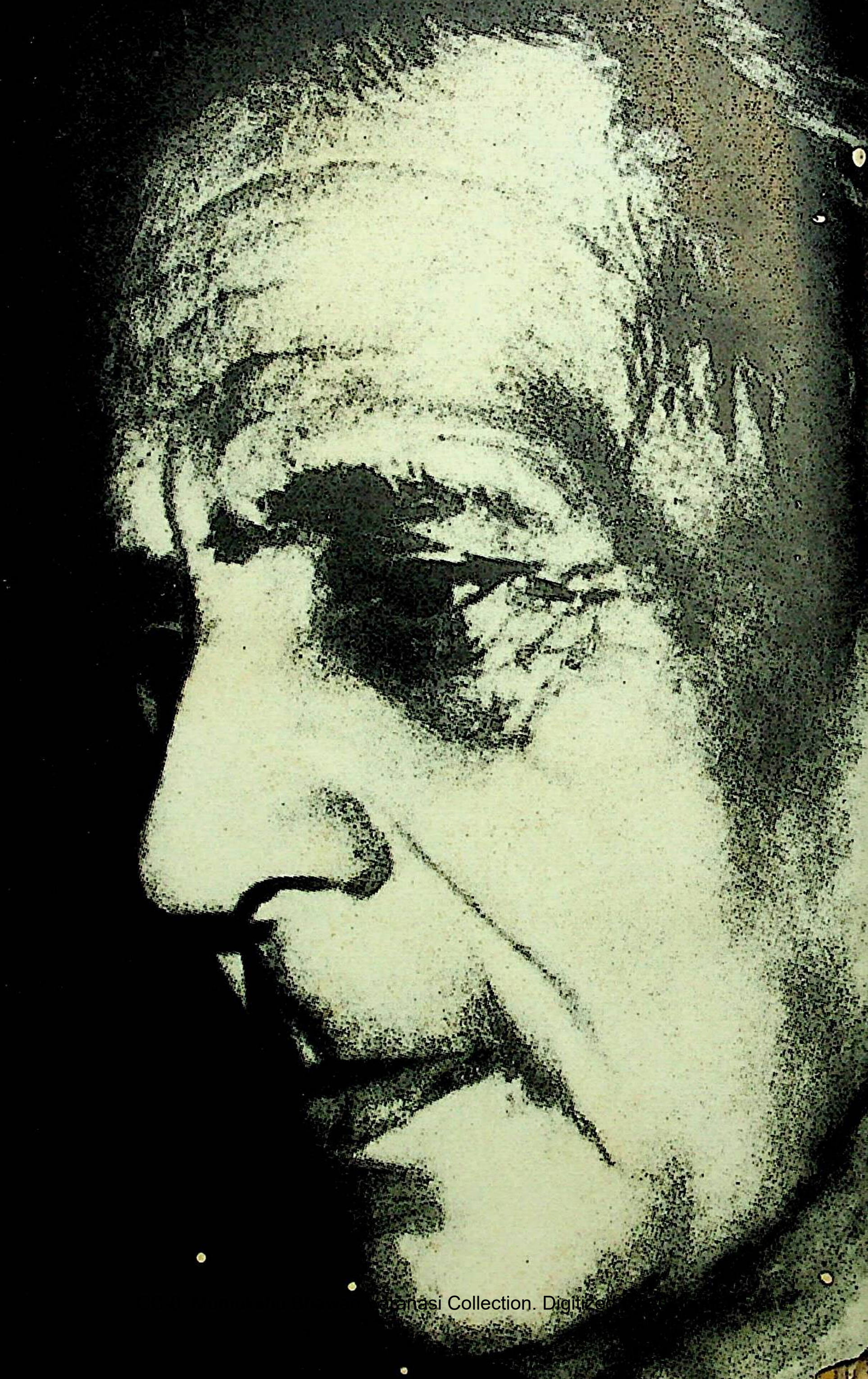
इस संकलन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है, स्वयं फ़िराक़ साहब की लिखी भूमिका 'मैं और मेरी शायरी' जिस में की कुछ पंक्तियाँ यूँ हैं : "यह मेरी दृढ़ और अटल राय है कि उर्दू लिपि या नागरी लिपि में इस संग्रह से पहले मेरे जितने संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, इस संग्रह का पल्ला उन सब पर भारी है। यह संग्रह मेरी कविताओं का प्रतिनिधि संग्रह है। जिस ने इसे पढ़ लिया, उस ने मेरी कविता का हीरा या मुख्य तत्त्व पा लिया।"

इस संकलन का सम्पादन-प्रकाशन जितने कम समय में सम्भव हुआ है उसे देखते हुए पाठकों को इस से अधिकाधिक सन्तोष होगा, ऐसी हमारी धारणा है।

—लक्ष्मीचन्द्र जैन

क़लम की चन्द जुम्बिशों से और मैंने क्या किया
यही कि खुल गये हैं कुछ रमूज़-से हयात के

—'फ़िराक़'



मैं और मेरी शायरी

मैं २८ अगस्त १८९६ ई० को गोरखपुर में पैदा हुआ। मेरे पिता थे बाबू गोरखप्रसाद जो उस समय से ले कर १९१८ तक, जब उन की मृत्यु हुई, गोरखपुर और आस-पास के ज़िलों के सब से बड़े वकीले-दीवानी थे। मैं कई लेहाज़ से एक असाधारण बालक था। घर और घर वालों से असाधारण हद तक गहरा और प्रबल प्रेम था। सहपाठियों और साथियों से भी ऐसा ही प्रेम था। मुहल्ले-टोले के लोगों से अधिक-से-अधिक लगाव था। मैं इस लगाव-प्रेम की तीव्रता, गहराई, प्रबलता और लगभग मुझे हिला देने वाले तूफ़ानों को जन्म भर भूल नहीं सका। इतना ही नहीं, घर की हर वस्तु—बिस्तर, घड़े, दूसरे सामान, कमरे, बरामदे, खिड़कियाँ, दरवाज़े, दीवारें, खपरैल—मेरे कलेजे के टुकड़े बन गये थे। मुहल्ले की गलियाँ, मुहल्ले वालों के घर, पेड़ और चबूतरे सभी मेरे खून, मेरी नाड़ी, मेरे दिल की धड़कन बन गये थे। तरकारियों और फ़स्लों में दिये जाने वाला पानी, जीव-जन्तुओं का अपने बच्चों को दूध पिलाना, चिड़ियों के चहचहे और उन की उड़ान, लोगों के दुख-सुख की कहानी मुझे आनन्दित या दुखी कर के जड़ से हिला कर रख देती थीं। लोकगीत, तुलसी-कृत रामायण के पाठ, सूर और मीरा के पद और दूसरे गीत नश्तर की तरह मेरे दिल में उतर जाते थे। माँ-बाप, अध्यापकों और साथियों से मैं कुछ नहीं कहता था, मन-ही-मन मैं सभी बातों से तड़प-तड़प कर रह जाता था।

रात को जब सोता था, तो नींद ज़रा देर से आती थी। जहाँ मैं सोता था उस बरामदे के सामने दूर तक मैदान थे, खेत थे, और बड़े-बड़े पुराने पेड़ थे। इन सब पर रात का पर्दा गिर पड़ता था तो रात की रहस्यमयता में मैं डूब जाता था। रात का अन्धकार और उस अन्धकार की गहराई, तारों की झिलमिलाहट, रात के धुँधलके में स्थूल वस्तुओं की अपनी परछाइं ये सब दृश्य मुझ पर छा जाते थे और मुझे एक विचित्र दशा में डाल देते थे।

मौसमों का जुलूस मुझे बहुत प्रभावित करता था। बरसात, जाड़ा और तपती हुई गरमी, सूर्योदय और सूर्यास्त, मुझे एक प्रभावशाली मानवीय नाटक की तरह प्रभावित करते थे। मैं पेड़ों में भी किसी प्राणी के धड़कते हुए दिल का अनुभव करता था। लहलहाते हुए खेतों में मैं फ़स्लों की नहीं जोबन की लहलहाहट और लहर देखता था। जिन दृश्यों से मैं गुज़रता था उन्हें छाती से लगा लेने

को जी चाहता था। इन तमाम बातों को लड़कपन बीत जाने के पचास वरसों के बाद अपनी एक कविता 'हिंडोला' में मैं ने व्यक्त कर दिया है।

जब मैं लगभग ९-१० वरस का हो गया तो मुझे स्कूल में दाखिल कर दिया गया। स्कूल में भी और घर पर भी पढ़ाने को मुझे सौभाग्य से बहुत योग्य अध्यापक मिले। बचपन में पढ़ी जाने वाली किताबों में ही जहाँ-जहाँ शैली और भाषा का रचाव या सौन्दर्य था, वह रचाव और सौन्दर्य मेरे दिल में डूब जाता था। आवाज़ की पहचान और परख मुझ में बचपन ही से थी। मातृभाषा की शिक्षा ने खड़ीबोली का रूप धारण कर लिया था और खड़ीबोली का प्रचलित, स्वाभाविक, सर्वव्यवहृत, सब से उन्नत और विकसित रूप उर्दू थी। मुझे हिन्दी भी पढ़ायी गयी थी, उर्दू के साथ-ही-साथ। लेकिन हिन्दी खड़ीबोली के रूप में मुझे उर्दू से कम जानदार और कम रची, कम स्वाभाविक और बिलकुल अप्रचलित नज़र आयी। ये बातें तो मेरे लड़कपन की हैं। पचासों बरस बाद मुझे यह अनुभव हुआ कि स्वभावगत खड़ीबोली के उर्दू रूप में यानी उस के स्वाभाविक गद्य में वे खटके हैं, वे तार-सम हैं, वे खनक हैं, जो आप से आप उर्दू कविता के शब्द-क्रमों और छन्दों के साँचों में ढल जाते हैं। अभ्यस्त और सिद्धहस्त हाथों में ये खटके और ये तार-सम एक रवानी पैदा कर देते हैं, एक गति और बहाव पैदा कर देते हैं, जिसे 'बन्दिश की चुस्ती' कहते हैं और जो उर्दू की लाखों पंक्तियों को सुनते ही ज़बान पर चढ़ा देती है।

इन स्पष्ट सच्चाइयों के होते हुए मैं कविता-प्रेम के मुआमिले में उर्दू की तरफ़ झुक सकता था। मेरे लड़कपन में या शुरू जवानी तक, खड़ीबोली की हिन्दी कविता ने या तो जन्म नहीं लिया था या बिलकुल बचपन की हालत में थी। लेकिन अगर मुझे शुरू जवानी में या होश सँभालते छायावादी या आज के खड़ीबोली-हिन्दी-कवियों की रचनाएँ हाथ आ जातीं, तो वे मुझे कदापि खींच न पातीं, उन में खड़ीबोली का चमत्कार है ही नहीं।

मैं ने १९१३ ई० में जुबली हाई स्कूल, गोरखपुर से हाई स्कूल पास किया। मैं ने और दूसरों ने पिताजी को यह राय दी कि मुझे प्रान्त के सब से सुप्रसिद्ध विद्यालय म्योर सेंट्रल कॉलिज, इलाहाबाद में दाखिल कर दिया जाये। ऐसा ही हुआ और रहने के लिए मैं ने हिन्दू बोर्डिंग हाउस पसन्द किया, जो आज महामना पं० मदनमोहन मालवीय कॉलेज कहा जाता है। मैं उम्र के १७वें साल में था। जहाँ तक अँगरेज़ी भाषा का सम्बन्ध है, मेरी शिक्षा की नींव की ईंटें ऐसी ठीक और जँची-तुली रखी गयी थीं कि छठे दर्जे से अब तक मुझे याद है कि, मैं ने अँगरेज़ी लिखने में व्याकरण या शब्द-प्रयोग की कोई ग़लती नहीं

की। इस हद तक तो मुझे अँगरेज़ी भाषा आ ही गयी थी! कॉलेज में आ कर लॉजिक (न्यायशास्त्र), इतिहास और अँगरेज़ी साहित्य के गद्य-पद्य की ऐसी किताबें पढ़ने को मिलीं, जिन से मेरे अँगरेज़ी ज्ञान को असाधारण बढ़ावा मिला। और मैं अँगरेज़ी में निवन्ध इत्यादि लिखने का अभ्यास अपने अन्दर पैदा करने लगा। अभी उर्दू-शाइरी मैं केवल पढ़ता ही था, उर्दू में शाइरी करता नहीं था। अभी मैं एफ़० ए० में ही था कि मेरे पिताजी को, परिवार को और मुझे धोका दे कर मेरा व्याह करा दिया गया। यह ब्याह मेरे जीवन की एक-मात्र दुःखान्त और विनाशकारी दुर्घटना साबित हुआ।

इस दुर्घटना के वाद से ही मेरे शरीर, मेरे दिल, मेरे दिमाग़, मेरी आत्मा में विनाशकारी भूकम्प, ज्वालामुखियों का फटना, घृणा और क्रोध के तूफ़ान उठते रहे हैं। इन का मुक़ाविला करते हुए, विषपान करते हुए और नफ़रत के अग्निकुण्ड में जलते हुए, मैं अब तक जीता रहा हूँ! मैं अपने लिए वही चाहता था, जो हिन्दू-शास्त्रों में एक सन्तोषजनक जीवन के सम्बन्ध में कहा गया है—यानी एक ऐसी अर्धांगिनी, जिसे मैं पसन्द कर सकूँ और प्यार कर सकूँ और जो मुझे भी अपना प्यार दे सके। और ऐसी ही सन्तान भी, मैं चाहता था। अपनी सन्तान को यह जानते हुए भी कि वो मेरी सन्तान है, मैं अपनी सन्तान मान नहीं सका! सफल और सन्तोषजनक घरेलू जीवन से वढ़ कर मैं किसी और अवस्था को समझ नहीं सकता था और न मान सकता था। मेरी उजड़ी ज़िन्दगी और विषम जीवन की सफलता, विद्या-प्राप्ति जीवन के किसी क्षेत्र में ख्याति, उस का वदला नहीं हो सकती। फिर भी मैं ने इस का प्रयास किया और करता रहा हूँ कि अपने वास्तविक जीवन से साहित्य, दर्शन, मानव-कल्याण और समाज की उन्नति में ज़ेहनी तौर पर दिलचस्पी लेता रहूँ। बचपन में ही जो गम्भीरता मेरी अर्धचेतना में आ चुकी थी, वही जीवन की न टाली जाने वाली मुसीवतों में आगे आयी। मैं अध्ययन और मनन के दरवाज़े से अपनी गला घोंटने वाली ज़िन्दगी को छोड़ कर भागने की कोशिश करता रहा हूँ। मैं अपनी कविता को जिसे असाधारण लोकप्रियता मिल चुकी है, पंकज यानी कमल का वह फूल समझ रहा हूँ, जिस की जड़ें कीचड़ में हों।

व्याह होने के वाद पूरे साल भर मुझे नींद न आयी। न दिन को, न रात को। मैं हैरत करता हूँ कि मैं पागल क्यों नहीं हो गया या मर क्यों नहीं गया। लेकिन मुझ को अपने नरकवत् जीवन का बड़ा मँहगा दाम देना पड़ा (बी० ए० में मुझे संग्रहणी का असाध्य रोग हो गया, जिस से वैद्यराज स्व० श्री त्र्यम्बक शास्त्री ने मुझे वचाया। एक साल वी० ए० में पढ़ना छोड़ देना पड़ा। मुझे वहुत-से लोग एक

हँसमुख और ज़िन्दादिल आदमी समझते हैं। मेरी ज़िन्दादिली वह चादर है, वह परदा है, जिसे मैं अपने दारुण जीवन पर डाले रहता हूँ। व्याह को छप्पन बरस हो चुके और इस लम्बे अरसे में एक दिन भी ऐसा नहीं बीता कि मैं दाँत पीस-पीस कर न रह गया हूँ। मेरे सुख ही नहीं मेरे दुख भी मेरे व्याह ने मुझ से छीन लिये। पिता-माता, भाइयों-बहनों, दोस्तों किसी की मौत पर मैं रो नहीं सका।

मैं पापिन ऐसी जली कोयला भई न राख।

अध्ययन और मनन-चिन्तन ने मुझे दुःख से मुक्त तो नहीं कर दिया लेकिन कुछ सँभाले ज़रूर रखा। बी० ए० पास करने के पहले ही मेरे पूज्य पिताजी की मृत्यु हो चुकी थी लेकिन बी० ए० के नतीजे में मैं पूरे सूबे में चौथे नम्बर पर पास हुआ था और मुझे डिप्टी-कलक्टरी और आई० सी० एस० के लिए चुन लिया गया था लेकिन घरेलू जीवन इतना उजाड़ हो चुका था कि मैंने उसे और उजाड़ बनाने में ही अपना कुशल समझा। सब बड़े ओहदों और पदों से इस्तीफ़ा दे कर मैं १९२० ई० में स्वराज्य-आन्दोलन में कूद पड़ा और डेढ़ बरस के लिए जेल भी भुगता। जेल से छूट कर जब आया तो पं० जवाहरलाल नेहरू ने मुझे अखिल भारतीय काँग्रेस के दफ़्तर में 'अण्डर सेक्रेट्री' की जगह दिला दी। सेक्रेट्री वो स्वयं थे। इस तरह कई बरस बीत गये। अपना दुःख तो बयान ही कर चुका हूँ। घर बिलकुल बे रुपये-पैसे का हो चुका था। कुछ जायदाद ज़रूर बच गयी थी। मैं ख़ुद नहीं बता सकता कि इस दस-बारह बरस के अरसे में मैंने अपना और एक अनाथ परिवार का पालन-पोषण कैसे किया। ख़ैर जो गुजरना था गुज़र गया। जब पं० जवाहरलाल नेहरू योरप चले गये तो मैं भी काँग्रेस के अण्डर-सेक्रेटरी के पद से अलग हो गया और कुछ कॉलेजों में अध्यापक की हैसियत से दो-तीन साल काम करता रहा और उसी हैसियत से प्राइवेट तौर पर आगरा विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी और प्रथम स्थान में एम० ए० पास किया। एम० ए० का नतीजा निकलते ही मेरी मातृ-संस्था इलाहाबाद युनिवर्सिटी ने मुझे अँगरेज़ी का अध्यापक बे-अर्जी दिये ही नियुक्त कर दिया। बी० ए० करने के १२ बरस बाद दर-बदर की ठोकरें खा कर मुझे यह स्थान मिला, जहाँ थोड़ा-बहुत आर्थिक चिन्ताओं से छुटकारा मिला। तमाम परेशानियों के होते हुए अध्ययन, चिन्तन और विवेक का सिलसिला जारी रहा। मैं किताबों का कीड़ा कभी नहीं रहा। जितना पढ़ता था उस से कई गुना ज़्यादा सोचता-विचारता था।

युनिवर्सिटी में अध्यापक का पद ग्रहण करने के बाद मुझे चुनी हुई किताबों के अध्ययन, जीवन और जीवन की समस्याओं पर मनन-चिन्तन, अपने मानसिक

जीवन की पृष्ठभूमि को भरपूर बनाने, अपनी रचना और लेखन शैली को क्रमशः अधिक विकसित करने का अवसर मिलने लगा। अँगरेज़ी साहित्य और विश्व-साहित्य के पठन-पाठन से मेरी लेखन-शैली में प्रौढ़ता आती गयी। मुझे उर्दू कविता को अधिक रचाने और सँवारने के मौक़े हाथ आने लगे। यूँ तो युनिवर्सिटी-अध्यापक का पद ग्रहण करने से तेरह-चौदह बरस पहले ही उर्दू काव्य रचना का अभ्यास प्राप्त करना मैं ने शुरू कर दिया था। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण तात्त्विक सत्य को बता देना आवश्यक समझता हूँ। मुझे, उर्दू-काव्य साहित्य में, और गद्य साहित्य में भी, अच्छी से अच्छी और सुन्दर से सुन्दर, ऊँची से ऊँची चीज़ें मिल चुकी थीं और मिलती रहती थीं। इन बातों के होते हुए भी मुझे मजमूई हैसियत से एक असन्तोष का आभास होता रहता था। शायद इस कारण से कि मेरे अन्दर हिन्दू विचारों और हिन्दू संस्कृति की गहरी से गहरी, बहुमूल्य से बहुमूल्य सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ विद्यमान थीं जो उर्दू कविता में कम ही मिलती थीं। हिन्दू संस्कृति का मिज़ाज और उस मिज़ाज की ध्वनि, उर्दू कविता में कदाचित् ही मिलती थी। अलबत्ता खड़ी बोली की शैली, उर्दू कविता में बहुत रचे हुए ढंग से और रंगारंग तरीक़ों से उपलब्ध थी।

जीवन का काव्यात्मक और कलात्मक अनुभव प्राप्त करना और दूसरों तक इस अनुभव को पहुँचाना साहित्य का एक मात्र लक्ष्य है। हिन्दू संस्कृति और इस संस्कृति के मिज़ाज ने मुझे यह अनुभव कराया कि प्रेमी-प्रेमिका का सम्बन्ध, घरेलू जीवन, सामाजिक जीवन, प्रकृति के दृश्य, धरती, नदियाँ, सागर, पहाड़, लहलहाते खेत, बाग़ और जंगल, अग्नि, हवा, सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, मौसमों का जुलूस—किसी भी ईश्वर-पैग़म्बर, धार्मिक ग्रन्थ, काबा या काशी से कहीं अधिक दिव्य और पवित्र हैं। भौतिकता के चमत्कार के अनुभव को ही मैं उच्च से उच्च आध्यात्मिकता महसूस करता था। जिसे हम भौतिक कहते हैं वही दिव्य भी है और उस के अतिरिक्त कोई विचार दिव्य नहीं है। लेकिन जिस ठंडे रूप से मैं यह बातें कह रहा हूँ अगर यही बातें इसी ढंग से मैं कविता में कहता, तो मुझे सन्तोष न होता। मैं जिन विषयों पर काव्य-रचना करना चाहता था—स्वर, ध्वनि और संकेत के सहारे उन्हें काव्यात्मक और कलात्मक बना कर दिव्य भी बनाता था। साथ-ही-साथ ठेठ मानवता का लबो-लहजा भी अपनी कविता में मुझे पैदा करना था। कविता में बातें कहनी पड़तीं लेकिन यह भी देखना और करना होता है कि :

बात पहुँचती है कहाँ से कहाँ

ऐसा करने ही से सत्य अधिक से अधिक परिचित होता है और अधिक रहस्यमय और संगीतमय वन जाता है। मुझे उस ज़मीन को, जिसे उर्दू के बड़े-बड़े कवियों ने अपने कलेजे के ख़ून से सींच कर तैयार किया था, फिर से तोड़ना और जोतना था। अपनी कविता की शैली को मुझे एक सहज सुझाव देना था। उस के साथ ही साथ मानवता और दिव्यता प्रदान करना था। जिन विषयों को मुझे वाणी देनी थी, वे अनित्य होते हुए भी अमृतपान कर चुके हैं और अमरत्व प्राप्त कर चुके हैं। दिव्यता, भौतिकता से पृथक् वस्तु नहीं है। यही अनुभव अनेक पहलुओं से व्यक्त करना—मेरे लिए कविता का मुख्य लक्ष्य रहा है।

साधारण से साधारण विषयों को सुगम से सुगम भाषा में और स्वाभाविक से स्वाभाविक शैली में इतना उठा देना कि पंक्तियों की उँगलियाँ सितारों को छू लें, यही उच्चतम काव्य-रचना है। मैं प्रकृति या परमाणुओं के अतिरिक्त आत्मा या परमात्मा के अलग और स्वतन्त्र अस्तित्व को नहीं मानता। संस्कृत काव्य में रसों का सिद्धान्त भौतिकता में निहित गुणों के अनुभव करने-कराने का ही दूसरा नाम है। देखना यही रहता है कि ये रस किन गहराइयों से निकलते हैं। क्या वे केवल होंठ और जीभ को ही छू पाते हैं या हमारी चेतना के तालुओं को भी छू लेते हैं। अब मैं एक ऐसी वात कहने का साहस करूँगा जो कुछ लोगों को शायद चकित कर दे। साहित्य वनता तो शब्दों से है, लेकिन ये शब्द जब एक नीरवता में लय और लीन हो जायें, जब शेर विस्मृत हो जाये और उस से उत्पन्न होने वाली एक अकथनीय स्थिति पैदा हो जाये, वही स्थिति साहित्य और काव्य की सब से बड़ी देन है। महाभारत का युद्ध तो हम कविता का सहारा लिये विना भी लड़ सकते हैं। औद्योगिक क्रान्ति, फ़्रांस की क्रान्ति, रूस की क्रान्ति, चीन की क्रान्ति को साहित्य और कविता का बहुत कम सहारा लेना पड़ा। महान् से महान् कार्य, जो संसार में हो रहे हैं, वह साहित्य के सहारे नहीं हो रहे हैं। साहित्य किसी राजनीतिक दल का सदस्य नहीं है। वह इतिहास का स्वयंसेवक भी नहीं है। साहित्य हमारी चेतना की वह तपस्या है, वह साधना है, जिस से हमारी विश्व या आत्मचेतना दिव्य वन जाये। चेतना-प्राप्ति किसी दूसरे उद्देश्य या लक्ष्य का साधन मात्र नहीं है बल्कि वह स्वयं अपना लक्ष्य है। बर्नार्ड शॉ ने अपने एक नाटक में उस समय का चित्रण किया है, जब मनुष्य विकास और उन्नति की अन्तिम मंज़िलों तक पहुँच चुकेगा। यहाँ पहुँच कर बर्नार्ड शॉ एक सवाल उठाता है—उस स्थिति को प्राप्त कर के या उस सिद्धि को पा कर मनुष्य क्या किया करेगा ? जवाब देता है कि वह जीवन कारोबारी जीवन नहीं होगा। राजनीति, अर्थशास्त्र और दौड़-धूप के कामों से वह जीवन मुक्त

होगा। वह जीवन एकमात्र विचारों और अनुभवों में निमग्न रहेगा। साहित्य हमें उस कर्म और कार्य-मुक्त, वन्धनग्रसित जीवन से छुटकारा दिलाने में सहायक होता है। ज्ञान-ध्यान आडम्बर नहीं है, हम भले उन्हें ज्ञान-ध्यान से रहित हो कर एक आडम्बर वना दें। अपना एक शेर मुझे याद आया :

जाओ न तुम इस वेख़बरी पर कि हमारे
हर ख़्वाव से इक अह्द की वुनियाद पड़ी है

यहाँ 'अह्द' का मतलव 'युग' है। दुनिया और मानवजाति कर्म के वन्धन ग्रहण कर के आगे वढ़ती है और आगे वढ़ती जायेगी और ज्यूँ-ज्यूँ आगे वढ़ती जायेगी कर्म हलका होता जायेगा और कम से कम हो कर रह जायेगा। विज्ञान और वैज्ञानिक आविष्कारों की उन्नति इसी ओर संकेत कर रही है। मशीनों ने इसी लिए जन्म लिया है कि मनुष्य को कम से कम शारीरिक वल लगाये बिना ही सव कुछ मिलता रहे और जो कुछ वह चाहता है, सव कुछ होता रहे। कर्म का महत्त्व एक वीच की मंज़िल है।

मैं ने अपनी रचना में यही प्रयास किया है कि हम काव्यात्मक और कलात्मक चेतना से, मनन और विवेक से ऐसे अनुभव प्राप्त कर सकें जिस से संसार से अलग किसी ख़ुदा, ईश्वर, मज़हव, पूजा-पाठ, सिज्दा-दण्डवत् या साम्प्रदायिकता का कोई स्थान न हो। हिन्दू-विचार साम्प्रदायिक विचार नहीं है। किसी विशेष जाति या सम्प्रदाय को दूसरी जातियों और सम्प्रदाय से अलग कर के हिन्दू विचारों का निर्माण नहीं हुआ है। जव ये विचार ईश्वरवादिता से मुक्त हैं, तो सम्प्रदायवादिता में कैसे जकड़े रह सकते हैं। मेरी कविताओं की अपील सार्वजनिक है। आज योरुप, अमरीका और दूसरे देशों में भी भारतीय विचारधारा का गहरा अध्ययन किया जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि मैं ने सामाजिक या राजनीतिक जागृति पैदा करने के लिए कविताएँ रची ही न हों, 'धरती की करवट', 'मार्क्स और लेनिन की सेवाएँ' 'इकावे-वीन रोटियाँ', 'हिंडोला' मेरी वे कविताएँ हैं, और मेरी वहुत-सी रूवाइयाँ मेरी वे रचनाएँ हैं जिन में कर्म के महत्त्व को समझने के लिए समाज को ललकारा गया है, लेकिन यहाँ भी चिन्तन और मनन कलात्मक हैं। ये कविताएँ सामयिकता से ऊपर के स्तरों को छूती हैं। इन में कर्म के लिए उपदेश नहीं है वल्कि कर्म अपनी सीमाओं में रहता हुआ भी दिव्य वन गया है। अन्त में यही कहूँगा कि मेरे नज़दीक कविता वही है, जिस की शव्दावली कोषों के उन शव्दों से न वनायी जाये जो समाज में प्रचलित नहीं हैं। जैसा कि अँगरेज़ी के

महाकवि वर्डस्वर्थ ने वताया है—शब्दों और वाक्यों में भाव और रस तभी पैदा होता है जब भावनाओं से प्रेरित हो कर सैकड़ों बरस तक जनसाधारण की शब्दावली में अपने आन्तरिक अनुभवों को व्यक्त करे। कविता की भाषा न कोषों में दफ़्न रहती है, न दावात की रोशनाई में। करोड़ों की बोल-चाल को सुसंगठित कर के कविता की भाषा बनती है। यही किया है सूर ने, तुलसी ने, कबीर और मीरा ने। और यही किया है समझदार उर्दू कवियों ने। जिस तरह देहात का दर्जी फूहड़पन से कपड़े को काट कर और भद्देपन से सी कर कोट, क़मीज़, कुरता और दूसरे वस्त्र बनाता है, उसी तरह खड़ीबोली को फूहड़ या मुर्दार ढंग से प्रयोग कर के कविता रचना, नागरता को चौपट कर देता है। खड़ीबोली के साथ बेढंगेपन का व्यवहार कर के उसे अपरिचित शब्दों से बोझिल कर के, शब्द-क्रम विगाड़ कर कविता करना खड़ीबोली की कोई सेवा नहीं है। अलबत्ता हमें एक दूसरे ख़तरे से भी सावधान रहना है, वह खतरा यह है कि हम केवल ऊपरी चमक-दमक और दिखावे की भाषा को खड़ीबोली कविता की भाषा न बनने दें। यह भाषा केवल शुद्ध, स्वाभाविक या टकसाली नहीं होनी चाहिए, इसे प्रभावात्मक भी होना चाहिए, जिस में हमारी चेतना डूब सके, जो हमारी चेतना को तल्लीन बना सके, जो कविता में संगीत और कर्णप्रिय झंकारें पैदा कर सके। शैली को न तो ठुकराने से काम चलता है, न उस के ऊपरी और बाहरी सजावटों या बनावटों से काग़ज़ी फूल तराशने से काम चलता है। साधारण शब्दों के जीवित और दुखती हुई रगों को छू देने से जो भाषा बनती है, वही कविता की भाषा है।

मेरी कविताओं का यह संकलन रवा-रवी या हलचल में पड़ कर इस के कुछ टुकड़े ले भागने के लिए प्रकाशित नहीं हो रहा है। ठहर-ठहर के डूब-डूब के पढ़ने के लिए और बार-बार पढ़ने के लिए इन कविताओं की रचना हुई है। मैं युनिवर्सिटी में १९३० से १९५८ तक काम कर चुकने के बाद १९५९ ई० में रिटायर हो गया।

अब मैं ७५ बरस का हो रहा हूँ और शिथिलताएं मुझ पर छाती जा रही हैं। यह मेरी जीवन की संध्या है। शाइरी मैं ने इरादे से कभी नहीं की। किसी गुप्त-स्रोत से अकस्मात् उत्पन्न होने वाली प्रेरणाएँ, मुझ से काव्य-रचना कराती रही हैं। जब कोई कविता स्वयं गुनगुनाती हुई मेरे अन्तःकरण से निकल कर पंक्तियों का रूप धारण कर के आरम्भ हो जाती थी, तो पूरी कविता इसी प्रारम्भ से बनती चली जाती थी। मेरा हाथ और क़लम इसी प्रेरणा के बस में होता था। कविता करना तो दूर रहा, मैं साधारण मनोरंजन

के लिए अध्ययन के लिए या किसी हृदयग्राही कार्य के लिए हिसाब-किताब लगा के, हानि-लाभ जोड़ के, जबरदस्ती किसी इरादे को अपने ऊपर लाद कर किसी काम को काम या कर्त्तव्य समझ कर कदाचित् ही कोई काम करता था। मालूम होता है कि मेरा पूरा अस्तित्व गुप्त शक्तियों के हाथ में रहा है। मेरा सब-कुछ करना-धरना इन्हीं शक्तियों के द्वारा रहा है। मैं ने अपना जीवन-सम्बन्धी अध्ययन और विद्या-सम्बन्धी विचार, कविता सम्बन्धी धारणाएँ और अन्य केन्द्रित विचार इस कथन में बताने का यत्न किया है। बयान लम्बा होता जाता है, अपने आप को कहाँ तक समझूँ या समझाऊँ। कुछ आप भी मुझे, इन कविताओं द्वारा, इस कथन द्वारा सही या ग़लत समझने का प्रयत्न करें और देखें कि मेरी कविताओं में हर-एक के दिल का चोर कहाँ तक निकला है। क्या इन कविताओं को पढ़ कर गुनगुना कर आप अपने-आप को फिर से पा सके हैं? अगर आप इन के ज़रिये कुछ भी अपने आप को पा सके हैं, जीवन को कहीं से भी छू सके हैं, मेरे अनुभवों को अपना जीवन-साथी बना सके हैं, तो मैं इसे अपनी कविताओं की सफलता समझूँगा। कहा गया है कि अगर हम शेक्सपियर की कोई रचना पढ़ते हुए उस से सही ढंग से और सही मात्रा तक प्रभावित हो सकें तो उतनी देर के लिए हम शेक्सपियर के बराबर हो जाते हैं। 'फ़िराक़' ने बस इतना ही चाहा है कि इन्सानी ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बना ले और इन्सानी 'फ़िराक़' की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बना ले। मेरा अलग-अलग कोई अस्तित्व नहीं है। मैं आप ही लोगों में से एक आप ही लोगों जैसा व्यक्ति हूँ। कार्लाइल ने ठीक ही कहा है कि पूरा समाज गुप्त और अर्ध-चैतन्य ढंग से जिन बातों को धुँधले ढंग से अनुभव करता है कवि उन्हीं अनुभवों को धुँधलके से उभार कर खुली रोशनी में प्रस्तुत करता है। इतना कह के आप लोगों से रुख़सत चाहूँगा। अब मेरे जीवन और मेरे संगीत दोनों को नींद आ रही है:

अब तुम से रुख़सत होता हूँ आओ सँभालो साज़े-ग़ज़ल
नये तराने छेड़ो, मेरे नग़्मों को नींद आती है।

अब इस संकलन के बारे में दो एक ज़रूरी बातें:

सब से पहले मैं श्री पद्मकुमार जैन का आभारी हूँ कि उन्होंने 'गुले-नग़्मा' की कुछ रचनाओं को इस संग्रह में सम्मिलित करने की अनुमति दे दी। इस संग्रह के बड़े हिस्से में मेरी वे नयी रचनाएँ शामिल की गयी हैं, जो 'गुले-नग़्मा' के प्रकाशन के बाद मेरे क़लम से निकली हैं।

प्रोफ़ेसर एहतेशाम हुसैन, जिन के सम्बन्ध में मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि अब से लगभग चालीस बरस पहले वे अँगरेज़ी क्लास में मेरे शिष्य रह चुके हैं, उन्होंने अपना बहुत समय लगा कर परिश्रम के साथ इस संग्रह की पाण्डुलिपि को आद्योपान्त देखने की ज़हमत की।

इस संकलन की पाण्डुलिपि 'गुले-नग़मा' के उस उर्दू संस्करण से, जिस पर मुझे ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया है और दूसरे उर्दू संकलनों 'गुलबाँग,' 'पिछली रात' आदि से तैयार किया गया है। इस संकलन में शामिल सभी रचनाओं का चयन और नागरी लिपि में रूपान्तरित करने में डॉक्टर जाफ़र रज़ा, प्राध्यापक, उर्दू विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने अनथक मेहनत की है। मैं उन का हृदय से आभारी हूँ।

यह मेरी दृढ़ और अटल राय है कि उर्दू लिपि या नागरी लिपि में इस संग्रह से पहले मेरे जितने संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, इस संग्रह का पल्ला उन सब पर भारी है। यह संग्रह मेरी कविताओं का प्रतिनिधि संग्रह है। जिसने इसे पढ़ लिया, उस ने मेरी कविता का हीरा या मुख्य तत्त्व पा लिया।

रघुपति सहाय "फ़िराक़"

८।४, बैंक रोड,
इलाहाबाद-३
१२ अक्टूबर, १९७०

अ । नु । क्र । म

● रुबाइयात

● ग़ज़लियात

• मंज़ूमात (कविताएँ) :

• अन्य रचनाएँ

फ़िराक़ गोरखपुरी

बज़्मे-ज़िन्दगी रंगे शायरी

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

०
०
०
सुन्दरम्
० ०

पैग़म्बरे-इश्क़ हूँ समझ मेरा मुक़ाम

सदियों में फिर सुनाई देगा ये पयाम
वो देख कि आफ़ताब सिजदे में गिरे
वो देख उठे देवता भी करने को सलाम

रस की आवाज़ है कि अमृत की फुवार
ये रूप कि प्यार की हो जैसे चुमकार
ये लोच ये धज ये मुस्कुराहट ये निगाह
ये मौजे-नफ़स कि साँस लेती है बहार

नज़रों की शुआओं[१] में स्वाती की फुवार
ज़ुल्फ़ों की घटा में मौजे-अब्रे-कोहसार[२]
वो जाने-वफ़ा तमाम दिल-ही-दिल है
सर-ता-ब-क़दम[3] है आया हुआ प्यार

है रूप में वो खटक वो रस वो झनकार
कलियों के चटख़ते वक़्त जैसे गुलज़ार[४]
या नूर की उँगलियों से देवी कोई
जैसे शबे-माह बजाती हो सितार

महताब[५] में सुर्ख़ अनार जैसे छूटे
या क़ौसे-क़ुज़ह[६] लचक के जैसे टूटे
वो क़द है कि भैरवी सुनाये जब सुब्ह
गुलज़ारे-शफ़क़[७] से नर्म कोंपल फूटे

रंगत है कि घुँघरुओं की मद्धम झनकार
जोबन है कि पिछली रात बजता है सितार
सरशार फ़ज़ाओं[८] की रगें टूटती हैं
चटख़ाता है उँगलियाँ जवानी का ख़ुमार

---

१. किरणों। २. पहाड़ी बादलों की लहर। ३. सिर से पैर तक। ४. उपवन। ५. चाँद। ६. इन्द्रधनुष। ७. ऊषा के उपवन। ८. उन्मत्त वातावरण।

ये चेहरा खिला हुआ ये महके हुए होंट
ये गेसुओं की लपट ये लहके हुए होंट
ये ताज़ादमी ये मुस्कुराहट ये नशात[1]
साँसों की ठंडी लौ से दहके हुए होंट

चेहरा देखे तो रात ग़म की कट जाय
सीना देखे तो उमड़ा सागर हट जाय
साँचे में ढला हुआ ये शाना[2] ये बग़ल
जैसे गुले-ताज़ा खिलते-खिलते फट जाय

ज़ुल्फ़ों से फ़ज़ाओं में उदाहट का समाँ
मुखड़ा है कि आग में तरावट का समाँ
ये सोज़ो-गुदाज़े-क़दे-राना जैसे
हीरे की मिनार में घुलावट का समाँ

शबनम से ये शोलों की जबीं[3] घुलती है
किरणों से ये कलियों की गिरह खुलती है
ये रंग ये रस ये मुस्कुराहट ये निखार
या नूर की मौजों में शफ़क़ घुलती है

मौजे-मये-नाब[4] बहकी-बहकी-सी ये चाल
घनघोर घटाएँ बिखरे-बिखरे-से ये बाल
छलकी-छलकी नयी जवानी की शराब
क़द है कि भरा-भरा है मीना-ए-जमाल[5]

१. प्रसन्नता। २. कन्धा। ३. पेशानी। ४. लाल शराब की लहर। ५. सौन्दर्य की मदिरा।

उमड़ी है बदमस्त काली ज़ुल्फ़ों की घटा
अह्ले-दिल[1] का जुनूँ[2] सहरा-सहरा[3]
लहका हुआ सीना लड़खड़ायी हुई चाल
उठती हुई मौजे-हुस्न दरिया-दरिया

उठने में हिमालय की घटाओं का उभार
अन्दाज़े-निशस्त[4] चढ़ती नद्दी का उतार
रफ़्तार में मद-भरी हवाओं की सनक
गुफ़्तार[5] में शबनम की रसीली झनकार

जैसे शबतार में सितारे टूटें
जैसे गुलज़ार में शरारे[6] फूटें
जिस तरह से झलकियाँ दिखाता है ख़याल
ये आँखें यूँ ही तेरे नज़ारे लूटें

अबरू[7] हिलते हैं या लचकती है कटार
ये रूप की रहमतों की जैसे चुमकार
ये लोच ये धज ये मुस्कुराहट ये निगाह
ये मौजे-नफ़स[8] कि साँस लेती है बहार

है तीर निगाह का कि फूलों की छड़ी
क़तरे हैं पसीने के कि मोती की लड़ी
कोमल मुस्कान और सरकता घूँघट
सुब्हे-अलस्त[9] है उम्मीदवारों में खड़ी

---

१. दिल वाले। २. दीवानापन। ३. जंगल-जंगल। ४. बैठने की मुद्रा। ५. वाणी। ६. चिनगारियाँ। ७. भवें। ८. साँसों की लहर। ९. सृष्टि की भोर।

हर साँस में गुलज़ार - से खिल जाते थे
हर लमहा जन्नत की हवा खाते थे
क्या तुझ को महब्बत के वो अय्याम[1] हैं याद
जब परद-ए-शब बजते थे दिन गाते थे

वो आँख खुली दिन की करामात हुई
हर मस्त निगह रम्ज़ो - कनायात[2] हुई
छलकाता हुआ मयकदा दिन डूब गया
गेसूए - सियहताब[3] खुले रात हुई

है अक्से-जबीं या है क़मर[4] की ज़ंजीर
ये रात और ये आकाश-गंगा की लकीर
या तेरी नज़र के फूल अम्बर पे खिले
बालेन्दु ने या कमान से छोड़ा कोई तीर

जमुना की तहों में दीपमाला है कि ज़ुल्फ़
जोबन शबे-क़द्र ने निकाला है कि ज़ुल्फ़
तारीको - ताबनाक शामे - हस्ती
ज़िन्दाने - हयात[5] का उजाला है कि ज़ुल्फ़

माँ और बहन भी और चहेती बेटी
घर की रानी भी और जीवन-साथी
फिर भी वो कामिनी सरासर देवी
और सेज पॅ बेसवा वो रस की पुतली

---

१. दिन। २. इशारा तथा रहस्य। ३ चमकीले काले केश। ४. चन्द्रमा। ५, जीवन-कारागार।

ढलका आँचल दमकते सीने पँ अलक
पलकों की ओट मुस्कुराहट की झलक
वो माथे की कहकशाँ[1] वो मोती-भरी माँग
वो गोद में चाँद-सा हुमकता बालक

आँगन में लिये चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पँ झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी

नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पँ इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिये

आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पँ ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है

१. आकाशगंगा।

रक्षा-बन्धन की सुब्ह रस की पुतली
छायी है घटा गगन को हलकी - हलकी
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के है बाँधती चमकती राखी

मण्डप के तले खड़ी है रस की पुतली
जीवन-साथी से प्रेम की गाँठ बँधी
महके शोलों के गिर्द भाँवर के समय
मुखड़े पर नर्म छूट-सी पड़ती हुई

चौके की सुहानी आँच मुखड़ा रौशन[1]
है घर की लक्ष्मी पकाती भोजन
देते हैं करछुली के चलने का पता
सीता की रसोई के खनकते बरतन

हौदी पॅ खड़ी खिला रही है चारा
जोबन-रस अँखड़ियों से है छलका-छलका
कोमल हाथों से है थपकती गरदन
किस प्यार से गाय देखती है मुखड़ा

वो गाय को दुहना वो सुहानी सुब्हें
गिरती हैं भरे थन से चमकती धारें
घुटनों पॅ वो कलश का खनकना कम-कम
या चुटकियों से फूट रही हैं किरणें

१. उज्ज्वल।

८

मथती है जमे दही को रस की पुतली
अलकों की लटें कुचों पँ लटकी-लटकी
वो चलती हुई सुडौल बाँहों की लचक
कोमल मुखड़े पर एक सुहानी सुरखी

ये ईख के खेतों की चमकती सतहें
मासूम क्वाँरियों की दिलकश[1] दौड़ें
खेतों के बीच में लगाती हैं छलाँग
ईख उतनी उगेगी जितना ऊँचा कूदें

बालों में खुनुक सियाह रातें ढलतीं
गालों की शफ़क़ की ओट शम्एँ[2] जलतीं
तारों की सरकती छाँव में बिस्तर से
इक जाने-बहार उठती है आँखें मलती

पहले मिसरे में हुस्न का ख़त्ते-जबीं[3]
और दूसरे मिसरे में लटों की तज़ईं[4]
चौथा हो निकलता हुआ यूँ तीसरे से
जैसे भीगी मसें हों अबरू से हसीं

है ग़ाज़-ए-रू-ए-दोस्त शाइर का ख़याल
जज़्ब[5] इस में मुशाहदे[6] के बीसों महो-साल
जलवा - गहे - हुस्न हर तराना है मेरा
आईना-दर-आईना है ये बज़्मे - जमाल[7]

---

१. मनमोहक। २. दीपक। ३. पेशानी की रेखा ४. शृंगार। ५. लीन। ६. अनुभव। ७. सौन्दर्य-सभा।

०
०
सत्यम्
० ०

ऐ मादरे - हिन्द सुब्ह तेरी तेरी शाम

हैं साक़ी-ए-दौरां के छलकते हुए जाम
लमहों में तेरे राज़े - अबद पिनहाँ हैं
तेरी हर सांस एक पैग़ामे - दवाम

ले ऐ माता निज़ामे-शम्सी[१] का सलाम
दे ऐ माता निज़ामे-शम्सी को पयाम
ऐ हिन्द तेरा नज़ूल[२] आलम में है
सीने में फ़ज़ाओं[३] के ख़ुदा का इल्हाम[४]

इनसान को इनसान बनाया तू ने
विज्दान[५] को विज्दान बनाया तू ने
हर फ़न को आईना हक़ीक़त का किया
हर इल्म को इरफ़ान[६] बनाया तू ने

बादल का धुवाँ सरफ़राज़े-कोहसार[७]
जल्वागहे-देवलोक दश्तो-गुलज़ार
गाती हुई अप्सराएँ जैसे गुज़रें
नदियों ने तेरी वो छेड़ रक्खा है सितार

फेरी तेरे दर की जो लगा जाते थे
सीने की दबी ज्योति जगा जाते थे
सुनते हैं अलावा दौलते-दुनिया के
सायल[८] तेरे कुछ और भी पा जाते थे

पैग़ाम तेरा बात अटल है ऐ हिन्द
हर दौर तेरा एक ही पल है ऐ हिन्द
शामों पँ तेरी शामे-अबद का साया
हर सुब्ह तेरी सुब्हे-अज़ल है ऐ हिन्द

---

१. विश्व-व्यवस्था। २. अस्तित्व। ३. सम्पूर्ण वातावरण। ४. दैव-वाणी। ५. अनुभूति। ६. ब्रह्म-ज्ञान। ७. पहाड़ की ऊँचाई। ८. माँगने वाले।

हर नक़्श अजन्ता का वो चलता जादू
वो हुस्नो-जमाल के बदलते पहलू
वो बुत-साज़ी[1] कि जान पत्थर में पड़े
है ताज कि रुख़सारे-फ़ज़ा पर आँसू

शोले-से जबीनों से लपक जाते हैं
मुरझाये हुए चेहरे दमक जाते हैं
इन चेहरों में जिन पर है अटी गर्दे-मलाल
रुख़ भीष्मो-अर्जुन के झलक जाते हैं

पहुँचे हैं कहाँ-कहाँ ये तेरे फ़नकार[2]
शिव का ताण्डव है या है सृष्टि-शृंगार
पेशानी-ए-शिव दमे-हलाहलनोशी
वो अबरुओं पर चढ़ी कमानों का उतार

माता तेरे फ़रज़न्द[3] भरत का किरदार
वो तख़्तो-ताज छोड़ने का ईसार[4]
रहते हुए राम की ग़रीबुल-वतनी
ठोकर से क़दम के वो अहल्या-उद्धार

तहज़ीब[5] की पहली सुब्ह की पाक दुआएँ
गूँजी हुई हैं फ़ज़ा में ऋषियों की सदाएँ
ऐ गंगो-जमन की गुनगुनाती लहरो
देती हैं सुनाई तुम में वेदों की ऋचाएँ

---

1. मूर्ति-कला। 2. कलाकार। 3. सुपुत्र। 4. त्याग। 5. सभ्यता।

वो तेरे मुफ़क्किरों[1] का क़ल्बे-हुशयार[2]
पलकों में जिन की बन्द रूहे-बेदार[3]
वो जैन और बुद्ध मत की ग़ायर-नज़री
इनकार को कर दिया रश्क़े-इक़रार

दिल में तेरे हैं आज क्या-क्या संकोच
दस्तो-पा में हैं ख़ारज़ारों के ख़रोंच
फिर माँग रहा है दौरे-हाज़िर का रुकाव
वो नर्मरवी वो तेरी रफ़्तार का लोच

क़ौमीयतें बीसों ही मगर एक मिज़ाज
नस्लें हैं पचीसों ही मगर एक मिज़ाज
है वुसअ़ते-क़ल्ब[4] ज़र्रे-ज़र्रे में तेरे
यानी तेरी ख़ाक पें तअ़स्सुब[5] का एलाज

हम सब तेरा दुख-दर्द मिटा सकते हैं
फिर धरती को तेरी स्वर्ग बना सकते हैं
तेरी धरती का दूध पीकर माता
तक़दीर से हम आँख लड़ा सकते हैं

हम को रूदादे-ख़ुशगुमानी न सुनायें
फ़िरदौस-ओ-जहन्नुम की कहानी न सुनायें
हर जग में हमें तुझ से मिले हैं अहकाम[6]
हम को अहकामे-आसमानी न सुनायें

---

१. चिन्तकों। २. कुशल हृदय। ३. जाग्रत आत्मा। ४. हृदय की विशालता। ५. पक्षपात। ६. आदेश।

ऐ काश कि राज़हाए - फ़ितरत[1] समझें
ऐ काश कि रम्ज़हाए - कसरत[2] समझें
ऐ काश कि हर मज़हबो - मिल्लत वाले
गूनागूँ[3] ज़िन्दगी की वहदत[4] समझें

ऋषियों ने तेरे ज़ीस्त[5] की तक़सीम[6] न की
मिल्लत-बाज़ी से उन को वहशत[7] ही रही
दुनिया भी है उक़्बा[8] भी है हर दौरे-हयात
जो लमहा - ए - अज़ल[9] है आख़रत भी वही

दुनिया की नयी क़ौमो यूँ ही बातें बनाव
अफ़साने रूसूमो - अक़ायद के सुनाव
हासिल है हमें बलूग़े - रूहानी[10] तुम
मज़हब के खिलौने से अभी जी बहलाव

आकाश के मन्दिर में तेरा दर्शन है
स्वप्नों में चराग़े - सरमदी रौशन है
रुख़सारों में पहली सुब्ह की नर्म दमक
मुखड़े पँ तेरे अजब सुहानापन है

गहरा हर क़ौम से तेरा नाता है
हम पर ही नहीं माँ तुझे प्यार आता है
औरों का भी हक़ है मामता पँ तेरी
सुनते हैं तेरा नाम जगतमाता है

---

१. प्रकृति के भेद। २. प्रचुरता के संकेत। ३. चित्र-विचित्र। ४. एकत्व। ५. जीवन। ६. बँटवारा। ७. घबराहट। ८. परलोक। ९. सृष्टि का क्षण। १०. आत्मा की परिपक्वता।

तेरे लिए काश जीते - मरते माता
तुझ से रस लेके निखरते माता
तेरे ख्वाबों की काश बनते ताबीर[1]
हम हिन्द को काश हिन्द करते माता

तहज़ीबों को बक़ा[2] के असरार[3] बता
तू राहे - सलामती भटकतों को सिखा
रफ़्तारे - ज़माना में तवाज़ुन[4] आ जाय
वो राज़े - एतदाल[5] दुनिया को सिखा

---

१. परिणाम। २. अनश्वरता। ३. भेद। ४. सन्तुलन। ५. सन्तुलन का भेद।

०
०
शिवम्
० ०

ऐ मानी - ए - कायनात मुझ में आ जा

ऐ राज़े-सिफ़ातो-ज़ात मुझ में आ जा
सोता संसार झिलमिलाते तारे
अब भीग चली है रात मुझ में आ जा

हर ऐब से माना कि जुदा हो जाये
क्या है अगर इनसान ख़ुदा हो जाये
शाइर का तो बस काम ये है हर दिल में
कुछ दर्दे-हयात और सिवा हो जाये

तारीकी[१] का रहे ज़माने में न दाग़
उस नूरे-हयात का लगाते हैं सुराग़[२]
मौजे-नफ़से-सर्द दिये जाती है लव
धारे पॅ फ़ना के हम जलाते हैं चराग़

दिन डूब गया तो बात कुछ और भी है
आँख ओझल वारदात कुछ और भी है
ख़ामोशो-ओ-तीरगी-ओ-खुन्की के सिवा
ऐ अन्जुमो-माह[३] रात कुछ और भी है

इनसान को महज़ खाते-पीते गुज़रे
इस मंज़िल से वो पाँव आगे न धरे
वहशी के अमल की इन्तिहा सैदो-शिकार
गर इश्क़ न हो अमल तरक़्क़ी न करे

हर जिस्म को हम करते रहे जान-नुमा
फ़ितरत को बनाते गये इनसान-नुमा
ग़द्दार अनासिर[४] को किया हम ने मुतीअ[५]
होता गया क़ह्रमान रहमान-नुमा

१. अँधेरा। २. पता। ३. सितारे एवं चाँद। ४. पंचतत्त्व। ५. आज्ञाकारी।

कह दो बामे - फ़लक से हो और बलन्द
सय्यारों[1] की रफ़्तार भी हो जाय दोचन्द
बेलाग महो - मेह्र खिंचे जाते हैं
पड़ती है कहाँ निगाहे - शाइर की कमन्द

इन नग़्मों में तासीरे - शिफ़ा है जो बहम
राज़ उस का तुम्हें आज बताते हैं हम
दिल के सोज़े-निहाँ में हो कर तहलील[2]
कुछ नश्तरे - तेज़ बन गये हैं मरहम

खोयी हुई हस्ती का बहम हो जाना
आज़ादे - फ़रेबे - कैफ़ो - कम हो जाना
तू राज़े - हयात पूछता है मुझ से
वो राज़ है शाइस्ता-ए-ग़म हो जाना

सहरा में ज़मानो - मकाँ के खो जाती है
सदियों बेदार रह के सो जाती है
अक्सर सोचा किया हूँ ख़लवत में फ़िराक़
तहज़ीबें क्यों ग़ुरूब हो जाती हैं

अल्फ़ाज़ के परदों में करो इस का यक़ीं
लेती है साँस नज़्मे - शाइर की ज़मीं
आहिस्ता ही गुनगुनाओ मेरे अशआर
डर है न मेरे ख़्वाब कुचल जायें कहीं

---

१. नक्षत्रों । २. विलयन (यहाँ 'लीन' होने से तात्पर्य है)।

वो फूट मज़ाहिबे - जहाँ ने डाली
अख़लाक़ में भी पड़ गयी नफ़सी-नफ़सी
अख़लाक़ हयाते - इज्तिमाई[1] की है देन
माहौल की मीरास नहीं बँट सकती

खुलता नहीं ये भेद है क्या बात है क्या
इल्हाम कहें इस को कि समझें इल्क़ा[2]
हाँ फ़िक्रे - सुख़न के वक़्त कानों में फ़िराक़
अकसर परे जिब्रील की आयी है सदा

पाते जाना है और न खोते जाना
हँसते जाना है और न रोते जाना
अव्वल और आख़िरी पयामे - तहज़ीब
इन्सान को इन्सान है होते जाना

इक राज़ से कर रहा हूँ तुझ को आगाह
ममनूअ - ओ - हराम[3] कुछ नहीं है वल्लाह
जिस काम में मह्वीयते - कामिल[4] न रहे
ऐ दोस्त समझ ले कि है वो काम गुनाह

हर साज़ से होती नहीं ये धुन पैदा
होता है बड़े जतन से ये गुन पैदा
मीज़ाने - नशातो - ग़म[5] में सदियों तुल कर
होता है हयात में तवाज़ुन पैदा

---

१. सामूहिक जीवन। २. दैवी शक्ति द्वारा अनायास मन में कोई विचार उत्पन्न होना। ३. निषेध व वर्जित। ४. पूर्ण लगन। ५. .ख़ुशी और ग़म के तराज़ू।

ग़ैरत को सुस्त असास कर देता है
एहसान भी बदहवास कर देता है
इन्सान का जज़्बा-ए-तशक्कुर[1] हमदम
अक्सर मुझ को उदास कर देता है

मन मोह ले सौ रंग से रहती दुनिया
ये वह्मे-हसीं ये ख़ूबसूरत धोका
इस दुख-भरी दुनिया का मगर असली रूप
जब आँख खुली फ़िराक़ देखा न गया

हर चीज़ यहाँ अपनी हदें तोड़ती है
हर लमहे पॅ सद अक्से-बक़ा छोड़ती है
एक सब्ज़ा-ए-पायमाल की पत्ती भी
हमदम क़ल्बे-अदब में जड़ फोड़ती है

जाग उट्ठेगी रूह तुम तो सो जाओगे
सरचश्मा-ए-ज़िन्दगी में धो जाओगे
खो जाओगे जब मनाज़िरे-फ़ितरत में
अपने से बहुत क़रीब हो जाओगे

दुनिया है फ़साना ब-हदीसे-दिगराँ[2]
कहते जिसे आ रहे हैं उनवाँ-उनवाँ[3]
दुनिया किस की ग़लत-बयानी है फ़िराक़
हर छूट में जिस के बो'दे-हक़ाइक़[4] पिनहाँ

---

१. आभार-भाव। २. दूसरे की ज़बानी ख़बर। ३. तरह-तरह से। ४. यथार्थों की रद्दो।

ऐ सब से पुरानी क़ौम दुनिया की सलाम
ऋषियों ने बताये तुझे वो राज़े-दवाम[1]
कहते हैं जिन्हें रूहे-रवाने-तहज़ीब[2]
मुज़मर[3] जिनमें हैं ज़िन्दगी के पैग़ाम

इक हल्क़ा-ए-नूर था अबद का मंज़र
आवेज़ाँ थे बेशुमार ख़ुर्शीदो-क़मर[4]
ताहद्दे-नज़र सिलसिला-ए-मौजूदात
हर शै से उभर रही थी तक़दीरे-बशर

हर बात का हो चला है साक़ी बिस्तार
संसार अपनी हदों को करता चला पार
मय के क़तरे लगा रहे हैं साक़ी
दुनिया की इकाइयों पॅ सिफ़रों की क़तार

गो बज़्मे-सुख़न में आप लाये तशरीफ़
ख़ुश होंगे सुनके काफ़िया-ओ-रदीफ़
इस का क्या कीजिएगा ऐ हाकिमे-वक़्त
अहसासे-लतीफ़ से जो होगी तकलीफ़

इक हलक़ा-ए-ज़ंजीर तो ज़ंजीर नहीं
इक हलक़ा-ए-तस्वीर तो तस्वीर नहीं
तक़दीर तो क़ौमों की हुआ करती है
इक शख़्स की क़िस्मत कोई तक़दीर नहीं

---

१. स्थायित्व का रहस्य। २. संस्कृति का आत्मस्रोत। ३. छिपे। ४. सूरज एवं चाँद

हर जलवे से इक दरसे-नुमू[1] लेता हूँ
लबरेज़ कई जामो - सुबू[2] लेता हूँ
पड़ती है जब आँख तुझ पै ऐ जाने-बहार
संगीत की सरहदों को छू लेता हूँ

क़ामत[3] है कि अँगड़ाइयाँ लेती सरगम
हो रक़्स में जैसे रंगो-बू का आलम
जगमग - जगमग है शबनमिस्ताने - इरम[4]
या क़ौसे - कुज़ह[5] लचक रही है पैहम[6]

ख़ामोश फ़ज़ा साफ़ चमक जाती है
बिजली कोई लहरा के लपक जाती है
अमृत की फुवार है कि नवरस आवाज़
या पिघली हुई सुब्ह छलक जाती है

रग-रग की लचक में पेंग लेती है बहार
गर्दिश में निगाह सात रंगों की फुवार
सदहा[7] महो - ख़ुर्शीद बरस जाते हैं
बेलाग हँसी की ये सुनहरी बौछार

नग़्मे की अलाप है कि क़ामत का तनाव
बजती गत का उतार, आँखों का झुकाव
आ-आ के रागनी खड़ी होती है
देखे कोई सिजिल बदन का ये रचाव

---

१. विकास का पाठ। २. प्याला और घड़ा। ३. आकार। ४. स्वर्ग में ओस से भीगी जगह।
५. इन्द्रधनुष। ६. लगातार। ७. सैकड़ों।

क़तरे अरक़े-जिस्म[१] के मोती की लड़ी
है पैकरे-नाज़नीं कि फूलों की छड़ी
गर्दिश में निगाह है कि बटती है हयात
जन्नत भी है आज उमीदवारों में खड़ी

कल लन्दनो-न्यूयार्क में गूँजी ये सदा
मालूम भी है रोज़े-हिसाब[२] आ पहुँचा
कब तक ये मुलूकियत[३] के ख्वाबे-नोशीं[४]
भागो-भागो कि एशिया जाग उठा

है शाम का आसमान कि ज़ुल्फ़ों का धुआँ
बगुलों की कज-क़तार[५] क़ामत की कमाँ
ये शाने-सुबुकरवी[६] कि तारे रुक जायँ
धारे पॅ माहे-नौ[७] की किश्ती है रवाँ

मोती की कान रस का सागर है बदन
दर्पन आकाश का सरासर है बदन
अँगड़ाई में राजहंस तोले हुए पर
या दूध भरा मानसरोवर है बदन

रश्के-दिले-कैकई[८] का फ़ितना है बदन
सीता के बिरह का कोई शोला है बदन
राधा की निगाह का छलावा है कोई
या कृष्ण की बाँसुरी का लहरा है बदन

---

१. शरीर के पसीने की बूँदें। २. क़यामत का दिन, प्रलय-दिवस। ३. साम्राज्यवाद। ४. स्वप्नों का रसास्वादन करने वाले। ५. टेढ़ी पंक्ति। ६. धीरे चलने की शान। ७. दूज का चाँद। ८. कैकेयी के हृदय की ईर्ष्या।

यूँ इश्क़ की आँच खा के रंग और खिले
यूँ सोज़े-दरूँ[1] से रूए-रंगीं चमके
जैसे कुछ दिन चढ़े गुलिस्तानों में
शबनम सूखे तो गुल का चेहरा निखरे

काटे कटती नहीं ये ज़ुलमात[2] की रात
इक जादू-ए-शबताब है ये रात की रात
भीगी फ़ज़ा में ज़ुल्फ़ों की घटायें
आईना-आईना है बरसात की रात

चढ़ती जमुना का तेज़ रेला है कि ज़ुल्फ़
बल खाता हुआ सियाह कौंदा है कि ज़ुल्फ़
गोकुल की अंधेरी रात देती हुई लौ
घनश्याम की बाँसुरी का लहरा है कि ज़ुल्फ़

रग-रग में थरथराये रूहे-नग़मात
हर तार में यूँ चलती हुई नब्ज़े-हयात
बेख़ुद होती चली है नमनाक फ़ज़ा
ज़ुल्फ़ों में ढल रही है मयख़ाने की रात

चंचल आँखों में गुनगुनाती हुई शाम
गर्दिश में नज़र की थरथराती हुई शाम
वो फूटी झुटपुटे के तारों की किरन
पलकों की ओट कुनमुनाती हुई शाम

---

१. आन्तरिक वेदना। २. अन्धेरा।

चिलमन[1] में मिज़्ह[2] की गुनगुनाती आँखें
चौथी की दुल्हन-सी कुछ लजाती आँखें
जोबन-रस की सुधा लुटाती हर आन
पलकों की ओट मुस्कुराती आँखें

आहू-ए-सियाहो-शोख़[3] कुछ पलकें उठाय
तरग़ीबे-गुनाह[4] के चराग़ों को जलाय
लड़ जाये जहन्नुम से अगर उड़ती निगाह
सोज़े-दिले-अह्रमन[5] में ठंडक पड़ जाय

पैदा है निगाह से तबस्सुम[6] का समाँ
पैदा है तबस्सुम से तकल्लुम[7] का समाँ
यूँ साज़े-फ़ज़ा पॅ आँखें पड़ती हैं तेरी
पैदा है सुकूत[8] से तरन्नुम का समाँ

गंगा वो बदन कि जिसमें सूरज भी नहाय
जमुना बालों की तान बंसी की उड़ाय
संगम वो कमर कि आँख ओझल लहराय
तहे-आब सरस्वती की धारा बल खाय

आ जाता है गात में सलोनापन और
चंचलपन बालपन अनीलापन और
कटते ही सुहागरात देखें जो उसे
बढ़ जाता है रूप का कुँवारापन और

---

१. हलका परदा। २. पलक। ३. काली और चंचल हिरन। ५. गुनाह के लिए उकसाना। ५. पाप के देवता के हृदय की ज्वाला। ६. मुस्कान। ७. बोलने। ८. शान्ति, सन्नाटा।

०
०
०

रु बा इ या त

(अन्य)

० ०

आँसू से भरे-भरे वो नयना रस के

साजन कब ऐ सखी थे अपने बस के
यह चाँदनी रात ये बिरह की पीड़ा
जिस तरह उलट गयी हो नागन डस के

०

पैकर[1] है कि चलती हुई पिचकारी है
फ़व्वारा-ए-अनवारे-सहर[2] जारी है
पड़ती है फ़ज़ा में सात रंगों की फुवार
आकाश नहा उठता है बलिहारी है

जब तारों के कारवाँ हों ठहरे-ठहरे
जब किश्ती-ए-माहे-नौ[3] हो लंगर डाले
जब नींद की साँस कहकशाँ लेती हो
ऐसे में काश! तेरी आहट आये

जब ज़ुहरा लिये हुए हो हाथों में सितार
जब चर्ख़[4] पर उड़ रहे हों नग़मों के शरार
झपकाते हों आँख जब सितारों के चराग़
ऐसे में हो काश! मुझ को तेरा दीदार

आ जा कि खड़ी है शाम परदा घेरे
मुद्दत हुई जब हुए थे दर्शन तेरे
मग़रिब से सुनहरी गर्द उट्ठी सू-ए-क़ाफ़
सूरज ने अग्नि-रथ के घोड़े फेरे

आवाज़ की नग़मगी पपीहे को दी
तक़लीदे-ख़रामे-नाज़[5] हंसों ने की
है नाज़ुकी कांपती लताओं में तेरी
मासूम नज़र हिरन के बच्चे को मिली

१. आकार। २. सुबह की रोशनी के फ़व्वारे। ३. नये चाँद की किश्ती। ४. आकाश। ५. अदा से चलने की पैरवी।

खिलते हुए गुलज़ारों[१] के रस और सुगन्द
सतरंग धनुष का लोच बिजली की कमन्द
ऋतु - राज की अँगड़ाई ऊषा के संगीत
कोमल मुस्कान तेरी चुटकी में हैं बन्द

करुना-रस की सुरीली कविता है बदन
उठते हुए दर्द का तराना है बदन
राधा के आँसुओं के हिलते हुए तार
कुल गोपियों के बिरह की पीड़ा है बदन

हैं उठती जवानियाँ कि जोबन का ओज
अलकों में फँसे दिलों की मिलती नहीं खोज
वो रस जो छलक के कम न होने पाये
ऐसे रस से भरे हैं आँखों के सरोज

आँचल के तले दमकते जोबन की ये लौ
सारी के चुनाव में लचकते महे-नौ
ठोड़ी पँ जगमगाती किरनों की ये छूट
महरम के घाट पँ वो फटती हुई पौ

लहरायी हुई शफ़क़ में ऊषा का ये रूप
ये नर्म दमक मुखड़े की सज-धज है अनूप
तेरा भी उड़ा - उड़ा - सा आँचल ज़रतार
घूँघट से वो छनती हुई रुखसारों[२] की धूप

१. बाग़ों २. चेहरों ।

ये रूप की मोहनी ये अबरू[1] के हिलाल[2]
अंग - अंग की ये लचक ये गाती हुई चाल
ये लोच हवाए-शाम जिस पर हो निसार
आँचल में लिये हज़ारों तारों का जमाल

पूरे जोबन पें जैसे महकी हुई रात
कलियों में जैसे मोजज़न रूहे-नबात
वो आलमे-रंगो-बू है तुझ पर ऐ दोस्त
शाइर के लबों पै जैसे पैग़ामे-हयात

किस प्यार से दे रही है मीठी लोरी
हिलती है सुडौल बाँह गोरी-गोरी
माथे पें सुहाग आँखों में रस हाथों में
बच्चे के हिंडोले की चमकती डोरी

किस प्यार से होती है ख़फ़ा बच्चे से
कुछ त्योरी चढ़ाये हुए मुँह फेरे हुए
इस रूठने पर प्रेम का संसार निसार
कहती है कि जा तुझ से नहीं बोलेंगे!

आँखों में सरश्क जगमगाता मुखड़ा
वो जश्ने - रुख़सती सुहाना तड़का
झुरमुट में सहेलियों के उठते हैं क़दम
वो घर की औरतों का बाबुल गाना

---

१. भृकुटि। २. नवचन्द्र।

ये राज़ो-नयाज़ और ये समय ख़लवत[1] का
ये आँख में आँख डाल देना तेरा
हिरनी है डरी-डरी-सी और कुछ मानूस
ये नर्म झिजक सिपुर्दगी की ये अदा

है ब्याहता पर रूप अभी कुँवारा है
माँ है पर अदा जो भी है दोशीज़ा है
वो मोद भरी माँग भरी गोद भरी
कन्या है सुहागन है जगत-माता है

मधुबन के बसन्त-सा सजीला है वो रूप
बरखा ऋतु की तरह रसीला है वो रूप
राधा की झपक कृष्ण की बरज़ोरी है
गोकुल-नगरी की रास-लीला है वो रूप

लचकीला गात और अवस्था है किशोर
वो चाल कि जैसे मिल के नाचें सौ मोर
कूक उठती हैं कोयलें वो काली जुल्फ़ें
मुँह ताकता है चन्द्रमा के धोके में चकोर

आँगन में सुहागनी नहा के है बैठी
रामायन जानुओं पँ रक्खी है खुली
जाड़े की सुहानी धूप खुले गेसू की
परछाइँ चमकते सफ़हे पँ पड़ती हुई

---

१ एकान्त।

पनघट पॅं गगरियाँ छलकने का ये रंग
पानी हचकोले ले के भरता है तरंग
काँधों पॅ सरों पॅं दोनों बाँहों में कलस
मद अँखड़ियों में, सीनों में भरपूर उमंग

लहरों में खिला कँवल नहाये जैसे
दोशीज़ा-ए-सुब्ह[1] गुनगुनाये जैसे
ये रूप ये लोच ये तरन्नुम ये निखार
बच्चा सोते में मुस्कुराये जैसे

छिपते तारे सहर की आहट कम-कम
सीने में उफ़ुक़ के कपकपाहट कम-कम
बिस्तर से तेरा वो मुँह अँधेरे उठना
ताज़ा पैकर में लहलहाहट कम-कम

रग-रग में जवानी की सुलगती हुई आग
रत्नार आँखों का रसमचाता हुआ फाग
हर ख़त्ते-बदन की जगमगाती हुई लौ
वो रूपवती पाँव से सर तक है सुहाग

जुज़ मेरे ये रंगे-हुस्न उछाले किस ने
साँचें में ये ख़त्तो-ख़ाल[2] ढाले किस ने
साज़े-बेनग़मा था ये जिस्मे-रंगीं
इस साज़ से ये बोल निकाले किस ने

---

१. सुब्ह की कुँवारी। २. नख-शिख।

कोमल पद-गामिनी की आहट तो सुनो
गाते क़दमों की गुनगुनाहट तो सुनो
सावन का लहरा है मद में डूबा हुआ रूप
रस की बूँदों की झमझमाहट तो सुनो

नभ-मण्डल गूँजता है तेरे जस से
गुलशन खिलते हैं ग़म के ख़ारो-ख़स[1] से
संसार में ज़िन्दगी लुटाता हुआ रूप
अमृत बरसा रहा है जोबन-रस से

आईना-दर-आईना हैं शफ़्फ़ाफ़ बदन
जलवे कुछ इस अन्दाज़ से हैं अक्स-फ़िगन[2]
इक ख़्वाबे-जमाल है कि बँधता है तिलिस्म
वो रूप झलकता हुआ जादू-दर्पन

जब ज़ुल्फ़े-शबे-तार[3] ज़रा लहरायी
जब तारों ने पोर उँगलियों की चटकायी
जब चाँद की बल खायी जबीं[4] उभरी ज़रा
ऐसे में तेरी नींद भरी अँगड़ायी

रंगत तेरी कुछ और निखर आती है
ये आन तो हूरों को भी शर्माती है
कटते ही शबे-विसाल[5] हर सुब्ह कुछ और
दोशीज़गी-ए-जमाल[6] बढ़ जाती है

१. काँटे और झाड़ियाँ। २. परछाइं डालना। ३. अन्धेरी रात जैसे बाल। ४. माथा, चेहरा। ५. मिलन की रात। ६. सौन्दर्य का कँवारापन।

दोशीज़ा[1] फ़ज़ा में लहलहाया हुआ रूप
आईना-ए-सुब्ह में झलकता हुआ रूप
ये नर्म निखार ये सिजिल धज ये सुगन्ध
रस में है कुँवारेपन के डूबा हुआ रूप

प्रेमी के साथ खाने का वो आलम
फुलके पँ वो हाथ जिस्मे-नाज़ुक में वो ख़म[2]
लुक़मे के उठाने में कलाई की लचक
दिलकश कितना है मुँह का चलना कम-कम

प्रेमी को बुख़ार, उठ नहीं सकती है पलक
बैठी हुई है सिरहाने माँद मुखड़े की दमक
जलती हुई पेशानी पँ रख देती है हाथ
पड़ जाती है बीमार के दिल में ठंडक

ये रूप मदन के भी ख़ता हों औसान
ये सज जो तोड़ दे रती का अभिमान
फीकी पड़ती है धूप ये जोबन-जोत
ये रंग कि आँख खोल दे जीवन-गान

महरम से छन रही है जोबन की धूप
ये नर्म दमक मुखड़े की सज-धज है अनूप
इक हूक-सी उठ जाती है लग जाती है आग
कोयल की कूक लहलहाता हुआ रूप

---

१. कुँवारा। २. बाँकपन।

ग़ज़लियात

● १ मैं होशे-अनादिल[1] हूँ मुश्किल है सँभल जाना
ऐ वादे-सवा मेरी करवट तो बदल जाना
तक़दीरे-महब्बत हूँ मुश्किल है बदल जाना
सौ बार सँभल कर भी मालूम सँभल जाना

उस आँख की मस्ती हूँ ऐ बादाकशो[2] जिसका
उठ कर सरे-मैख़ाना मुमकिन है बदल जाना
अय्यामे-बहाराँ में दीवानों के तेवर भी
जिस सम्त नज़र उट्ठी आलम का बदल जाना
घनघोर घटाओं में सरशार फ़ज़ाओं में
मख़्मूर हवाओं में मुश्किल है सँभल जाना
हूँ लरिज़शे मस्ताना[3] मैख़ान-ए-आलम में
बर्क़े-निगहे-साक़ी कुछ बच के निकल जाना
इस गुलशने-हस्ती में कम खिलते हैं गुल ऐसे
दुनिया महक उट्ठेगी तुम दिल को मसल जाना
मैं साज़े-हक़ीक़त हूँ सोया हुआ नग़मा था
था राज़े-निहाँ कोई परदों से निकल जाना
हूँ नकहते-मस्ताना[4] गुलज़ारे-महब्बत में
मदहोशि-ए-आलम है पहलू का बदल जाना
मस्ती में लगावट से उस आँख का ये कहना
मैख़्वार की नीयत हूँ मुमकिन है बदल जाना

जो तर्ज़े-ग़ज़लगोई मोमिन ने तरह की थी
सद-हैफ़ फ़िराक़ उसका सद-हैफ़ बदल जाना

॥ १९२५ ॥

---

१. बुलबुल के स्वभाव का। २. शराब पीनेवाली। ३. मस्ताने की लड़खड़ाहट। ४. मस्ती भरी महक।

● २ तमाम कैफ़ ख़मोशी तमाम नग़्म-ए-साज़
नवा-ए-राज़ है ऐ दोस्त या तेरी आवाज़

मेरी ग़ज़ल में मिलेगा तुझे वो आलमे-राज़
जहाँ हैं एक अज़ल से हक़ीक़त और मजाज़

वो ऐन महशरे-नज़्ज़ारा[1] हो कि ख़लवते-राज़[2]
कहीं भी बन्द नहीं हैं निगाहे-शाहिदबाज़[3]

हवाएँ नींद के खेतों से जैसे आती हों
यहाँ से दूर नहीं है बहुत वो मक़तले-नाज़

ये जंग क्या है लहू थूकता है नज़्मे-कुहन
शिगूफ़े और खिलायेगा वक़्ते शोबदाबाज़[4]

मशीअतों को बदलते हैं ज़ोरे-बाज़ू से
'हरीफ़े - मतलबे - मुश्किल नहीं फ़सूने-नेयाज़'[5]

इशारे हैं ये बशर की उलूहियत की तरफ़
लवें-सी दे उठी अकसर मेरी जबीने-नेयाज़

भरम तो क़ुर्बते-जानाँ का रह गया क़ाइम
ले आड़े आ ही गया चर्ख़े - तफ़र्क़ा-परदाज़[6]

निगाहे-चश्मे-सियह कर रहा है शरहे-गुनाह
न छेड़ ऐसे में बहसे - जवाज़ो-ग़ैरे-जवाज़[7]

ये मौजे-नकहते-जाँ-बख़्श यूँ ही उठती है
बहारे - गेसु - ए - शबरंग तेरी उम्र दराज़

यें है मेरी नयी आवाज़ जिस को सुनके हरेक
ये बोल उठे कि है ये तो सुनी हुई आवाज़

हरीफ़े-जश्ने-चिराग़ाँ है नग़्म-ए-ग़मे-दोस्त
कि थरथराये हुए देख उठे वो शोला-ए-साज़

फ़िराक़ मंज़िले-जानाँ वो दे रही है झलक
बढ़ो कि आ ही गया वो मुक़ामे-दूरो-दराज़

---

१. प्रलय का दृश्य। २. गुप्तएकान्त। ३. सौन्दर्य के प्रति आसक्त आँखें। ४. बाज़ीगर समय। ५. जादुई अदा। ६. वैमनस्य पैदा करने वाला आकाश। ७. उचित-अनुचित का तर्क।

● ३ तहों में दिल के जहाँ कोई वारदात हुई
हयाते-ताज़ा से लबरेज़ कायनात हुई

तुम्हीं ने वायसे-ग़म बारहा किया दरयाफ़्त
कहा तो रूठ गये यह भी कोई बात हुई

हयात राज़े-सुकूँ पा गयी अजल ठहरी
अजल में थोड़ी-सी लर्ज़िश हुई हयात हुई

थी एक काविशे-बेनाम[1] दिल में फ़ितरत के
सिवा हुई तो वही आदमी की ज़ात हुई

बहुत दिनों में महब्बत को यह हुआ मालूम
जो तेरे हिज्र में गुज़री वो रात रात हुई

फ़िराक़ को कभी इतना ख़मोश देखा था
ज़रूर ऐ निगहे-नाज़ कोई बात हुई

● ४ तू है सर-बसर कोई दास्ताँ है अजीब आलमे-अन्जुमन
ये निगाहे-नाज़ ज़बाँ-ज़बाँ ये सुकूते-नाज़ सुख़न-सुख़न

ये शऊरे-साएक़ा-अफ़गनी[2] ये अदा-ए-नरगिसे-पुरफ़तन[3]
कि पिला-पिला के लुँढा भी दे ये तेरी निगाहे-प्यालाज़न

तेरी क़ुरबतें भी हैं दूरियाँ ये करिश्म-ए-कशिशे-बदन
'चे क़यामते कि न मी रसी ज़-कनारे-मन ब-कनारे-मन'

न ज़ियादा ज़र्फ़ से दे न कम कि हैं हाथ उसके जँचे-तुले
वही आँख ज़ामिने-होश भी वही आँख साक़ी-ए-अन्जुमन

मेरे सीने में है वो रौशनी कि न उम्र जिसकी बता सकें
यहीं जलवे दौरे-जदीद के यहीं परतवे-अहदे-कुहन[4]

वो तमाम रू-ए-निगार है वो तमाम बोसो-कनार[5] है
वो है चेहरा-चेहरा जो देखिए वो है चूमिये तो दहन-दहन

१. अनाम जिज्ञासा। २. बिजलियाँ गिराने का ढंग। ३. हलचल पैदा करने वाली नरगिसी आँखों की अदा। ४. प्राचीन काल की झलक। ५. एकान्त का चुम्बन।

ये खयाले-महफ़िले-दोस्ताँ किसी अजनबी का है ये बयाँ
वो जहाँ न समझें मेरी ज़बाँ वहीं क़िस्मतों से मिला वतन

वो नज़र-नज़र की फ़सूँगरी[1] वो सुकूत की भी सुखनवरी
तेरी आँख जादू-ए-सामरी तेरे लब फ़सान-ए-नल-दमन

वो गुनाहे-आदमे-अव्वलीं कि है मस्तियों का वही अमीं
हैं बशर के खून में आज भी कई जुर्अ-हाए-मये-अदन

बकमाले जज़्बे-दिले-तपाँ कभी बदले गरदिशे-आसमाँ
कोई सुब्ह रू-ए चमन-चमन कोई शाम ज़ुल्फ़े-शिकन-शिकन

यें भी इक बहाना था खाने का तेरी कज-कुलाहियों की क़सम
सरे-शाखसार दिखा गये कई बार ग़ुंचे जो बाँकपन

वो तबस्सुमे-लबे-नाज़नीं वो बहारे-पैकरे-दिलनशीं
वही अधखिली-सी कली-कली वही ताज़गी-ए-चमन-चमन

कफ़े-पा से ता-सरे-नाज़नीं कई आँखें खुलती-झपकती हैं
कि तमाम मसकने-आहुवाँ[2] है दमे-खुमार तेरा बदन

कभी दादे-शौक़ न दे सका मेरे दिल को परतवे-दिलबरी
कि लरज़ गया है यें आइना जो लचक गयी है कोई किरन

कोई मेरी आँखों से देखता तेरी बज़्मे-नाज़ की वुसअ़तें
वो हर एक गोशा मकाँ-मकाँ वो हर एक लमहा ज़मन-ज़मन

वो लबों की लाल ज़िया-ज़िया वो किरन हँसी की ज़रा-ज़रा
तेरी नीम-अदा भी अदा-अदा तेरी इक झलक भी यमन-यमन

कोई चीज़ आड़े तो आ गयी कि बखैर हो गया खातमा
मेरी बेकसी ने उढ़ा दिया मेरे आँसुओं का मुझे कफ़न

मेरे दोस्तों को मुअम्मा है मेरी नूरो-नार की ज़िन्दगी
जो इधर चराग़े-हरम की लौ तो उधर भी कुफ़्र है शोलाज़न

कभी हो सका तो बताऊँगा तुझे राज़े-आलमे-खैरो-शर[3]
कि मैं रह चुका हूँ शुरू ही से गहे-ईज़दे-गहे-अहरमन[4]

---

१. जादूगरी। २. हिरनों के रहने की जगह। ३. अच्छाई-बुराई की दशा का भेद। ४. खुदा और शैतान के पास।

अरे उखड़ी-उखड़ी यें ज़िन्दगी अरे खोयी-खोयी यें ज़िन्दगी
मुझे क्या वतन में सुकून हो कि वतन ही आज है बे-वतन

जिसे डँस लिया हो ज़माने ने कोई ज़िन्दगी है ये ज़िन्दगी
ये सवादे-शाम अजलनुमा ये ज़िया-ए-सुब्ह कफ़न-कफ़न

तुझे मंज़िलें भी हैं रहगुज़र मुझे रहगुज़ार भी मंज़िलें
यही फ़र्क़ है मेरे हमसफ़र वो तेरा चलन ये मेरा चलन

मेरी हर ग़ज़ल को ये आरज़ू तुझे सज-सजा के निकालिये
मेरी फ़िक्र हो तेरा आइना मेरे नग़मे हों तेरे पैरहन

कभी पिछली रात को देख ले किसी साँस लेते चराग़ को
कि ग़ज़ल हुई तो शऊर में वही खस्तगी है वही थकन

यें उदास-उदास बुझी-बुझी कोई ज़िन्दगी है फ़िराक़ की
मगर आज किश्ते-सुख़नवरी[1] है उसी के दम से चमन-चमन

● ५ दयारे-ग़ैर[2] में सोज़े-वतन की आँच न पूछ
ख़ज़ाँ में सुब्हे-बहारे-चमन की आँच न पूछ

फ़ज़ा है दहकी हुई रक़्स में है शोला-ए-गुल
जहाँ वो शोख़ है उस अन्जुमन की आँच न पूछ

क़बा में जिस्म है या शोला ज़ेरे-परद-ए-साज़[3]
बदन से लिपटे हुए पैरहन की आँच न पूछ

हिजाब में भी उसे देखना क़यामत है
नक़ाब में भी रुख़े-शोला-ज़न की आँच न पूछ

लपक रहे हैं वो शोले कि होंट जलते हैं
न पूछ मौजे-शराबे-कुहन की आँच न पूछ

फ़िराक़ आइना-दर-आइना है हुस्ने-निगार
सबाहते-चमन-अन्दर-चमन की आँच न पूछ

१. शाइरी की खेती। २. दूसरों की गली। ३, साज़ के परदे के नीचे।

● ६ था रंगे - इज़्तराव[१] दिले - वेक़रार का
आना रुला गया मुझे वादे - वहार का
उतरा हुआ खुमार मये - इन्तज़ार का
राज़ - आशना हूँ मैं किसी ग़फ़लत - शआ़र का
साज़े-मजाज़ की मैं सदा - ए - शिकस्त हूँ
खमियाज़ा - कश[२] हूँ हस्ति - ए - नापायेदार का
अव इश्क़ मावराए - नशातो - मलाल[३] है
कुछ इज़्तरावे - दीद न ग़म इन्तज़ार का
मारा है किस अदा से दिले सोगवार को
कुश्ता हूँ तेरी पुरसिशे वेगानावार का
विस्मिल फ़िराक़े - सुब्हे-अज़ल से है हर सहर
आलम तो देख पैरहने तार - तार का
कोताहिए - नसीबे - जुनूँ कुछ न पूछिए
हाथों में आ चुका था गरेवाँ वहार का
एक तेरे दर्दे - इश्क़ ने वदले हैं कितने भेस
अच्छा वहाना है ये ग़मे - रोज़गार का
वह आँख अपने काम से ग़ाफ़िल नहीं फ़िराक़
कुछ देर रह ले होश हरेक होशियार का
परदे हरीमे - नाज़ के गिरते चले फ़िराक़
उठता चला है दर्द दिले - वेक़रार का

॥१९२५॥

● ७ दिलों का सोज़ तेरे रू-ए-वेनक़ाव की आँच
तमाम गर्मी-ए-महफ़िल तेरे शवाव की आँच
सवावे - खुल्दे - वरीं[४] क्या अज़ावे-दोज़ख क्या
तेरे खिताब की ठंडक तेरे इताव[५] की आँच
हरीमे - इश्क़ के परदों से लौ निकलती है
ये सोज़ो-साज़ है कुछ नग़्म-ए-रवाव की आँच
लहकते सब्ज़े में अब्रे - वहार की मस्ती
दहकते फूल में छलकी हुई शराव की आँच

१. परेशानी का रंग। २. भरपाई करने वाला। ३. प्रसन्नता एवं दुख से ऊपर। ४. स्वर्ग का पुण्य। ५. क्रोध।

ये कैफ़े-हुस्न ये वक़्रे-निगाह क्या कहना
लगा दे आग न इस दामने-सहाब[१] की आँच
चढ़ा के साग़रे-मय जगमगा उठे चेहरे
सिमट के आ गयी सीनों में आफ़ताब की आँच
पनाह माँग रही है हरी-भरी दुनिया
न पूछ आह दिले-खानुमाखराव की आँच
ये अगले वक़्तों के हैं खुश हैं बाग़े-जन्नत में
इन्हें खबर ही नहीं क्या है इस सवाव की आँच
ये आ गया है यहाँ कौन काफ़िरे-मासूम
कि ठंडी पड़ गयी दोज़ख के भी अज़ाव की आँच
जिसे समझते हैं सब मौजे-कौसरो-तसनीम[२]
वो आईना भी है तपते हुए सराव की आँच
सहर की ताज़ा-दमी चढ़ती धूप की गरमी
तेरी निगाह की ठंडक तेरे शबाब की आँच
रुकी-रुकी-सी लवे-शौक़ पर है अर्ज़े-विसाल
कि फूँक दे न तेरे ज़ेरे-लब जवाब की आँच
यही है गर्मी-ए-महफ़िल यही है रौनक़े-बज़्म
निगाहे-नाज़ तेरे ज़ौक़े-इन्तिखाव की आँच
ये रात आग लगा दे कहीं न दुनिया में
ये चाँदनी ये हवाएँ ये माहताब की आँच
शुआएँ फूट के जैसे फ़ज़ा में गुम हो जायें
छलकते जाम में ये चशमके-हुवाव की आँच
सवारे-अबलक़े-अय्याम[३] मौसमे-गुल है
चमन के शोले हैं या हलक़-ए-रकाब की आँच
समेट रक्खे हैं रूहुल-कुदुस[४] ने पर अपने
पहुँच रही है कहाँ तक इस इज़्तिराब की आँच

फ़िराक़ वक़्त के रुख से उलट रही है नक़ाब
ज़मीं से ता-ब-फ़लक है इस इन्क़लाब की आँच

---

१. बादलों के दामन। २. मान्यता है कि स्वर्ग में दो नहरें है जिनके नाम कौसर एवं तसनीम हैं। ३. समय रूपी घोड़े का सवार। ४. एक फ़रिश्ता जो पैग़म्बरों के पास ईश्वरीय सन्देश पहुँचाता है।

● ८ दीदनी[१] है नरगिसे-खामोश का तर्ज़े-खिताव
गह्-सवाल-अन्दर-सवालो-गह्-जवाव-अन्दर -जवाव

जौह्रे-शमशीरे-क़ातिल है कि हैं रगहा-ए-नाव
साक़िया तलवार खिंचती है कि खिंचती है शराव

इश्क़ के आग़ोश में वस इक दिले-ख़ानाख़राव
हुस्न के पहलू में सदहा आफ़तावो-माहताव

सरवरें-कुफ़्फ़ार है इश्क़ और अमीरुल-मोमनीं
कावा - ओ - बुतख़ाना-औक़ाफ़े-दिले - आलीजनाव

राज़ के सेग़े में रक्खा था मशीअत[२] ने जिन्हें
वो हक़ाइक़ हो गये मेरी ग़ज़ल में वेनक़ाव

एक गंजे-वेवहा[३] है अह्ले-दिल को उन की याद
तेरे जौरे - वेनिहायत तेरे जौरे - वेहिसाव

आदमीयों से भरी है ये भरी दुनिया मगर
आदमी को आदमी होता नहीं है दस्तयाव

इश्क़ की सरमस्तियों का क्या हो अन्दाज़ा कि इश्क़
सद शराव अन्दर शराव अन्दर शराव अन्दर शराव

रास आया दह्र को ख़ूने-जिगर से सींचना
चेहर-ए-आफ़ाक़[४] पर कुछ आ चली है आवो-ताव

अव इसे कुछ और कहते हैं कि हुस्ने-इत्तफ़ाक़
इक नज़र उड़ती हुई-सी कर गयी मुझ को ख़राव

एक सन्नाटा अटूट अकसर और अकसर ऐ नदीम
दिल की हर धड़कन में सद ज़ेरो-वमे-चंगो-रवाव

ऐ फ़िराक़ आफ़ाक़[५] है कोई तिलिस्म-अन्दर-तिलिस्म
है हरेक ख्वाव इक हक़ीक़त हर हक़ीक़त एक ख्वाव

---

१. दर्शनीय। २. दैव-शक्ति। ३. अपरिमित निधि। ४. क्षितिज के चेहरे पर। ५. संसार।

● ९
दुनिया को इन्क़लाब की याद आ रही है आज
तारीख़ अपने-आप को दोहरा रही है आज

झपका रही है देर से आँखें हवा-ए-दह्र
कौनो-मकाँ को नींद-सी कुछ आ रही है आज

हर-हर शिकस्ते-साज़ से सद लह्ने-सरमदी[1]
या जिन्दग़ी के गीत अजल गा रही है आज

अवना-ए-दह्र लेते हैं यूँ साँस गर्मो-तेज़
जीने में जैसे देर हुई जा रही है आज

बरहम-सा कुछ मिज़ाजे-अनासिर[2] है इन दिनों
और कुछ तबीअत अपनी भी घबरा रही है आज

इक मौजे-दूद[3] सीने में लरज़ाँ है इस तरह
नागन-सी जैसे शीशे में लहरा रही है आज

बीते जुगों की छाँव है इमरोज़ पर फ़िराक़
हर चीज़ इक फ़साना हुई जा रही है आज

● १०
दौरे-अफ़लाक का शबाब है तू
आफ़ताबों का आफ़ताब है तू

रूप ऐसा हसीन जैसे गुनाह
खल्क़ का हासिले-सवाब है तू

तुझ से जोबन उजाली रातों का
माहताबों का माहताब है तू

और ज़ेरे-शफ़क़ चराग़ाँ हो
आज यूँ माइले-हिजाब है तू

ये सितारे तेरे पसीने के
शब का दहका हुआ शबाब है तू

तू जो सूरत पकड़ ले है वो ख़याल
यक-ब-यक जाग उठे वो ख़्वाब है तू

१. सरमद (एक फ़क़ीर) की आवाज़। २. पंचतत्त्वों की क्रिया। ३. धुँधली लहर।

जो बहारों के दिल से उठते हैं
उन्हीं शोलों का पेचो-ताब है तू
आँख पड़ती है एक ज़माने की
बज़्मे इम्काँ में इन्तखाब है तू
जैसे नग़मे लबे-फ़िराक़ पँ सोयँ
सेज पर यूँ ही मह्वे-ख्वाब है तू

॥ १९४६ ॥

● ११ निगाहों में वो हल कई मसायले-हयात के
वो गेसुओं में पेचो-ख़म कई मुआमलात के

हमारी उँगलियों में धड़कनें हैं साज़े-दह्र की
हम अहले-राज़ पारखी हैं नब्ज़े-कायनात के
है आबो-गिल में शोलाज़न बस एक साज़े-सरमदी
हिजाबे-दह्र परदे हैं तरन्नुमे-हयात के
ये क़शक़ा[1] सुर्ख़-सुर्ख़ रू-कशे-चिराग़े-तूर है
जबीने-कुफ़्र से अयाँ रमूज़ इलाहियात के
असातज़ा[2] के बस में थे जो सब मुझे सिखा दिये
सुकूते-सरमदी ने वो निकात शेरयात के
नज़र जो साफ़ आ रहे हैं खानाहा-ए-बेखतर
वही बिसाते-गंजफ़ा में हैं मुक़ाम मात के
हज़ारहा इशारे पायेंगे तलाश शर्त है
क़दीम फ़िक्रयात में जदीद फ़िक्रयात के
नजात[3] के लिए न इन्तज़ारे-मर्गो-हश्र कर
कि क़ैदो-बन्दे-ज़िन्दगी में राज़ हैं नजात के
ये सफ़-बसफ़ मनाज़िरे-ज़माना देख ग़ौर से
हैं आईना-दर-आईना सबक़ तहय्युरात[4] के

१. तिलक। २. उस्तादों। ३. मुक्ति। ४. परिवर्तनों।

जमाहियाँ-सी ले रहे हैं आसमान पर नुजूम
सुना रही है, ज़िन्दगी फ़साने कटती रात के

कहाँ से हाथ लाइए इन्हें उठाने के लिए
हिजाब-दर-हिजाब जल्वे हैं तअय्युनात[1] के

किताब में ये दर्सयात ढूँढ़ना फ़ज़ूल है
इन अँखड़ियों से सीख कुछ रमूज़ कुफ़यात के

इन्हीं में अपने ख़त्तो-ख़ाल देखती है ज़िन्दगी
ये आबो-ताबे-शेर है कि आईने हयात के

तमाम उम्र इश्क़ का जवाज़ ढूँढ़ते रहे
ये अह्ले-रस्म हो रहे इन्हीं तकल्लुफ़ात के

क़लम की चन्द जुंबिशों से और मैं ने क्या किया
यही कि खुल गये हैं कुछ रमूज़-से हयात के

उफ़ुक़ से ता-उफ़ुक़ ये कायनात मह्वे-ख्वाब थी
न पूछ दे गये हैं क्या मुझे वो लमहे रात के

नमाज़ शाइरी है और इमामे-फ़न फ़िराक़ है
रुकूअ और सुजूद ज़ेरो-बम हैं सौतियात[2] के

● १२ नौरस ग़ुंचे पंखड़ियों की नाज़ुक गिरहें खोलें हैं
या उड़ जाने को रंगो-बू गुलशन में पर तोलें हैं

तारे आँखें झपकावें हैं ज़र्रा-ज़र्रा सोये हैं
तुम भी सुनो हो यारो ! शब में सन्नाटे कुछ बोलें हैं

हम हों या क़िस्मत हो हमारी दोनों को इक ही काम मिला
क़िस्मत हम को रो लेवे है हम क़िस्मत को रो लें हैं

जो मुझ को बदनाम करें हैं काश वे इतना सोच सकें
मेरा परदा खोलें हैं या अपना परदा खोलें हैं

ये क़ीमत भी अदा करे हैं हम बदुरुस्ती-ए-होशो-हवास
तेरा सौदा करने वाले दीवाना भी हो लें हैं

---

१. अस्तित्व । २. ध्वनि से सम्बन्धित ।

तेरे ग़म का पासे - अदब है कुछ दुनिया का ख़याल भी है
सब से छिपा के दर्द के मारे चुपके-चुपके रो लें हैं

फ़ितरत का क़ायम है तवाज़ुन आलमे-हुस्नो-इश्क़ में भी
उस को उतना ही पावे हैं खुद को जितना खो लें हैं

आवो-तावे अशआर न पूछो तुम भी आँखें रक्खो हो
ये जगमग बैतों की दमक है या हम मोती रोलें हैं

ऐसे में तू याद आये है अंजुमने-मय में रिन्दों को
रात गये गर्दूं पें फ़रिश्ते बाबे-गुनह जब खोलें हैं

सदक़े फ़िराक़ एजाज़े-सुख़न के कैसे उड़ा ली ये आवाज़
इन ग़ज़लों के परदों में तो 'मीर' की ग़ज़लें बोले हैं

● १३

कभी जब तेरी याद आ जाय है
दिलों पर घटा बन के छा जाय है

शबे-यास में कौन छुप कर नदीम[1] मेरे हाल पर मुसकुरा जाय है
महब्बत में ऐ मौत ऐ जिन्दगी मरा जाय है या जिया जाय है
पलक पर पसे-तर्के - ग़म[2] गाहगाह सितारा कोई झिलमिला जाय है
तेरी याद शबहा-ए-बे-ख्वाब में सितारों की दुनिया बसा जाय है
जो बे-ख्वाब रक्खे है ता-ज़िन्दगी वही ग़म किसी दिन सुला जाय है
न सुन मुझ से हमदम मेरा हाले-ज़ार दिले-नातवाँ सनसना जाय है
ग़ज़ल मेरी खींचे है ग़म की शराब पिये है वो जिससे पिया जाय है
मेरी शाइरी जो है जाने-नशात ग़मों के खज़ाने लुटा जाय है
मुझे छोड़ कर जाय है तेरी याद कि जीने का एक आसरा जाय है
मुझे गुमरही का नहीं कोई खौफ़ तेरे घर को हर रास्ता जाय है

सुनायें तुम्हें दास्ताने - फ़िराक़
मगर कब किसी से सुना जाय है

---

१. साथी। २. दुख के आँसू।

● १४

काफ़ी दिनों जिया हूँ किसी दोस्त के बग़ैर
अब तुम भी साथ छोड़ने को
कह रहे हो ख़ैर

कब से तेरे दयार में हूँ मैं तेरे बग़ैर
मुझ से है आसमाँ को
ख़ुदा वास्ते का बैर

'यूँ ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ तेरे बग़ैर'
जैसे करे ख़ज़ाँ में कोई
गुलसिताँ की सैर

बाँधो सफ़ें नमाज़े-जमाअत के वास्ते मैं कौन ऐ सयूख़े-हरम[1] पेशइमामे दैर[2]
जाते हैं दाग़ सोहबते-शब का लिये हुए अच्छा जो हो सका तो कल आयेंगे शब-बख़ैर
उक़बा की ज़िन्दगी का ख़ुदा-हाफ़िज़ ऐ नदीम हम तो मना रहे हैं इसी ज़िन्दगी की ख़ैर
ता-हाल हो सके न हमआहंग[3] साज़े-दह्र कानों में आ रही हैं अभी एक सदा-ए-ग़ैर

अख़लाक़े - तब - ए - यार तुझे मानना पड़ा
मिलना उसी तपाक से वो
ख़्वैश[4] हों कि ग़ैर

जो भी निगाह उठती है वो मैकदा-बदोश
ऐ नरगिसे - सियाह
तेरी नीयतें बख़ैर

तक़दीरे - हुस्नो - इश्क़ जुदाई है अलविदा
है ज़िन्दगी अगर तो कभी
फिर मिलेंगे ख़ैर

राहें पुकारती हैं कि साहेब परे-परे
शोले बिछे हुए हैं दिलों के बचा के पैर
इस क़ुर्ब से तो दर्दे-फ़िराक़ और बढ़ गया
'घर जब बना लिया तेरे दर पर कहे बग़ैर'

---

१. काबे के अध्यक्ष। २. बुतख़ाने के पुरोधा। ३. सम्मिलित आवाज़। ४. अपने।

● १५ किसी का यूँ तो हुआ कौन उम्र भर फिर भी
ये हुस्नो-इश्क़ तो धोका है सब मगर फिर भी

हज़ार बार ज़माना इधर से गुज़रा है
नयी-नयी-सी है कुछ तेरी रहगुज़र फिर भी

खुशा इशारा-ए-पैहम ज़हे-सुकूते-नज़र
दराज़ होके फ़साना है मुख्तसर फिर भी

झपक रही है ज़मानो-मकाँ की भी आँखें
मगर है क़ाफ़िला आमादा-ए-सफ़र फिर भी

शबे-फ़िराक़ से आगे है आज मेरी नज़र
कि कट ही जायेगी ये शामे-बे-सहर फिर भी

कहीं यही तो नहीं काशिफ़े-हयातो-ममात[1]
ये हुस्नो-इश्क़ ब-ज़ाहिर है बेख़बर फिर भी

पलट रहे हैं ग़रीबुलवतन पलटना था
वो कूचा रू-कशे-जन्नत हो घर है घर फिर भी

लुटा हुआ चमने-इश्क़ है निगाहों को
दिखा गया वही क्या-क्या गुलो-समर फिर भी

ख़राब होके भी सोचा किये तेरे महजूर[2]
यही कि तेरी नज़र है तेरी नज़र फिर भी

हो बेनयाज़े-असर भी कभी तेरी मिट्टी
वो कीमिया ही सही रह गयी कसर फिर भी

लिपट गया तेरा दीवाना गरचे मंज़िल से
उड़ी-उड़ी-सी है कुछ ख़ाके-रहगुज़र फिर भी

तेरी निगाह से बचने में उम्र गुज़री है
उतर गया रगे-जाँ में ये नेश्तर फिर भी

ग़मे-फ़िराक़ के कुश्तों का हश्र क्या होगा
ये शामे-हिज्र तो हो जायेगी सहर फिर भी

---

१. जीवन और मृत्यु का रहस्य खोलने वाला। २. बिछड़ने वाले।

फ़ना भी हो के गराँबारी-ए-हयात[1] न पूछ
उठाये उठ नहीं सकता ये दर्दे-सर फिर भी
सितम के रंग हैं हर इल्तिफ़ाते-पिन्हाँ[2] में
करमनुमा हैं तेरे जौरे-सर-बसर फिर भी
खता मुआफ़ तेरा अफ़्व[3] भी है मिस्ले-सज़ा
तेरी सज़ा में है इक शाने-दरगुज़र फिर भी

अगरचे बेखुदी-ए-इश्क़ को ज़माना हुआ
फ़िराक़ करती रही काम वो नज़र फिर भी

● १६ किसी से छूट के शाद और किसी से मिल के ग़मीं
फ़िराक़ तेरी महब्बत का कोई ठीक नहीं

युँ-ही-सा था कोई जिस ने मुझे मिटा डाला न कोई नूर का पुतला न कोई ज़ोहरा-जबीं
जो भूलतीं भी नहीं याद भी नहीं आतीं तेरी निगाह ने क्यों वो कहानियाँ न कहीं
लबे-निगार है या नग़्मा-ए-बहार की लौ सुकूते-नाज़ है या कोई मुतरिबे-रंगीं[4]
शुरू-ए-ज़िन्दगी-ए-इश्क़ का वो पहला ख्वाब तुम्हें भी भूल चुका है मुझे भी याद नहीं
हज़ार शुक्र कि मायूस कर दिया तू ने ये और बात कि तुझसे बड़ी उमीदें थीं
अगर बदल न दिया आदमी ने दुनिया को तो जान लो कि यहाँ आदमी की खैर नहीं

हुनर तो खैर हुनर ऐब से भी जलते हैं
फ़ुग़ाँ[5] कि अहले-ज़माना है किस क़दर कमबीं[6]

१. जीवन का बोझ। २. गुप्त उपेक्षा। ३. क्षमा। ४. सौन्दर्य-प्रेमी गायक। ५. आह। ६. अदूरदर्शी।

● १७ कुछ भी अयाँ-निहाँ[१] न था, कोई ज़माँ-मकाँ न था
देर थी एक निगाह की फिर ये जहाँ जहाँ न था

साज़ वो क़तरें-क़तरे में सोज़ वो ज़र्रे-ज़र्रे में
याद तेरी किसे न थी दर्द तेरा कहाँ न था

इश्क़ की आज़माइशों और फ़ज़ाओं में हुईं
पाँव तले ज़मीं न थी सर पॅ ये आसमाँ न था

सोज़े-निहाँ में वो क़रार क़ल्बे-तपाँ में वो सफ़ा[२]
शोला तो था तड़प न थी आग तो थी धुवाँ न था

इश्क़ हरीमे-हुस्न में अपने सहारे रह गया
सब्र का भी पता न था होश का भी निशाँ न था

किस के हवास थे बजा कौन था अपने होश में
वक़्ते - बयाने - ग़म कोई मायले - दास्ताँ न था

देख फ़ज़ा - ए - दह्‌र को कैफ़े - अदम से भर दिया
ऐ दिले-दर्द-आश्ना मिट के भी मैं कहाँ न था

जल्वा - ए - ताबआज़मा क़ायले - इश्क़ हो गया
थी न सदा - ए - अलहज़र[३] नारा-ए-अलअमाँ[४] न था

एक को एक की खबर मंज़िले - इश्क़ में न थी
कोई भी अह्‌ले - कारवाँ शामिले - कारवाँ न था

ग़फ़लते-हुस्न जाग उठी और ज़बाने - इश्क़ पर
आह न थी फ़ुग़ाँ न था नारा-ए-अलअमाँ न था

खिलवतियाने - राज़ से हाले - वसाले - यार पूछ
हुस्न भी बेनक़ाब था इश्क़ भी दरम्याँ न था

अब न वो पुर्सिशे-करम अब न वो चश्मे-आश्ना
शिकवा-ए-इश्क़ बरतरफ़ तुम से तो ये गुमाँ न था

शिकवा-ए-दरगुज़रनुमा क्यों है कि हुस्न-इश्क़ से
इतना तो बदगुमाँ न था इतना तो सरगराँ न था

तेरी खुशी कि याद रख तेरी खुशी कि भूल जा
तुझ से ज़रा भी बदगुमाँ आलमे - रफ़्तगाँ न था

१. प्रकट एवं गुप्त। २. पवित्रता। ३. भय की पुकार। ४. सुरक्षा का नारा।

सब्रो-सकूँ के राज़ कुछ बातों में खुल गये मगर
इश्क़ को भी खुशी न थी हुस्न भी शादमाँ न था
फिर भी सुकूने-इश्क़ पर आँख भर आयी बारहा
गो ग़मे-हिज्र भी फ़िराक़ कुछ ग़मे-जाविदाँ न था

● १८ खुदनुमा होके निहाँ छुप के नुमायाँ होना
अलग़रज़ हुस्न को रुसवा किसी उनवाँ[1] होना

यूँ तो अकसीर है
ख़ाके-दरे-जानाँ
लेकिन
काविशे-ग़म[2] से उसे गर्दिशे-दौराँ होना

हद्दे-तमकीं से न
बाहर हुई खुद्दार
निगाह
आज तक आ न सका हुस्न को हैराँ होना

चारागर[3] दर्द सरापा
हूँ मेरे दर्द
नहीं
बावर आया तुझे नश्तर का रगे-जाँ होना

दफ़्तरे-राज़े-महब्बत
था मलाले-दिल
पर
वो सुकूते निगहे-नाज़ का पुरसाँ होना

सर-बसर वक़्फ़े-फ़ना
इश्क़ के जलवे हैं
फ़िराक़
ख़ानए-दिल को न आबाद न वीराँ होना ॥१९३७॥

१. शीर्षक। २. दुख की खोज। ३. चिकित्सक।

● १९ ग़ज़ल के साज़ उठाओ बड़ी उदास है रात
नवा - ए - 'मीर' सुनाओ बड़ी उदास है रात

नवा - ए - दर्द में इक ज़िन्दगी तो होती है
नवा - ए - दर्द सुनाओ बड़ी उदास है रात

उदासियों के जो हमराज़ो - हमनफ़स[1] थे कभी
उन्हें न दिल से भुलाओ बड़ी उदास है रात

जो हो सके तो इधर की भी राह भूल पड़ो
सनमकदे की हवाओ बड़ी उदास है रात

कहें न तुम से तो फिर और जा के किस से कहें
सियाह ज़ुल्फ़ के सायो बड़ी उदास है रात

पड़ा है साया - ए - ग़म जब हयाते - इनसाँ पर
वो दास्ताँ भी सुनाओ बड़ी उदास है रात

अभी तो ज़िक्रे - सहर दोस्तो है दूर की बात
अभी तो देखते जाओ बड़ी उदास है रात

सुना है पहले भी ऐसे में बुझ गये हैं चराग़
दिलों की ख़ैर मनाओ बड़ी उदास है रात

दिये रहो यूँ ही कुछ और देर हाथ में हाथ
अभी न पास से जाओ बड़ी उदास है रात

कोई शुमार भी रखती हैं ज़ुल्मतों[2] की तहें
बताओ ग़म की घटाओ बड़ी उदास है रात

कोई कहो ये ख़यालों से और ख़्वाबों से
दिलों से दूर न जाओ बड़ी उदास है रात

करो जो ग़ौर तो रद्दो - क़ुबूल[3] यकसाँ हैं
दिलों से निकली दुआओ बड़ी उदास है रात

यगानगी हो कि दीवानगी हो सब धोका
सुनो सब अपने परायो बड़ी उदास है रात

---

१. अभिन्न साथी। २. अन्धकार। ३. स्वीकृति-अस्वीकृति।

समेट लो कि बड़े काम की है दौलते-ग़म
इसे युँ ही न गँवाओ बड़ी उदास है रात

वसे हुए हैं किसी के जो लम्से-रंगीं[1] से
वो विस्तरे न लगाओ बड़ी उदास है रात

इसी खँडर में कहीं कुछ दिये हैं टूटे हुए
इन्हीं से काम चलाओ बड़ी उदास है रात

लिये हुए हैं जो बीते ग़मों के अफ़साने
वो ज़िन्दग़ी ही बुलाओ बड़ी उदास है रात

भरम नशातो-तरब[2] के न और खुल जायें
मयो - अयाग़[3] बढ़ाओ बड़ी उदास है रात

दो - आतशा न बना दे उसे नवा - ए - फ़िराक़
ये साज़े - ग़म न सुनाओ बड़ी उदास है रात

● २०

छिड़ गये
साज़े - इश्क़ के गाने
खुल गये ज़िन्दगी के मयख़ाने

आज तो कुफ़्रे-इश्क़ चौंक उठा आज तो बोल उठे हैं दीवाने
कुछ गराँ[4] हो चला है बारे-नशात आज दुखते हैं हुस्न के शाने[5]
बाद मुद्दत के तेरे हिज्र में फिर आज बैठा हूँ दिल को समझाने
हासिले-हुस्नो - इश्क़ बस है यही आदमी आदमी को पहचाने

तू भी
आमादा-ए-सफ़र हो फ़िराक़
काफ़िले उस तरफ़ लगे जाने

१. मधुर स्पर्श। २. आनन्द के गीत। ३. शराब का प्याला। ४. भारी। ५. कन्धे।

● २१
चश्मे - सियह से घटा जो उठी है
मयख़ाने पर झूम पड़ी है

होते - होते सुब्ह हुई है
कटते - कटते रात कटी है

नश्मा है मय है मस्ती है
साक़ी फिर भी कोई कमी है

दुनिया में नफ़्सी - नफ़्सी है
सब को अपनी - अपनी पड़ी है

दे-दे हम अह्ले-दिल को दो-आलम ये तो हमारी कम - तलबी है
देस को देखा देस हमारा कितना बड़ा है कितना दुखी है
लट छिटकाये बाल सँवारे याद तेरी दिल से गुज़री है
कहती है जो तेरी ख़मोशी ऐ लबे - जानाँ बात वही है
लाख अज़ाबे - जहाँ हैं यारो एक अज़ाबे - महब्बत भी है
मुझ को कफ़न सरका के देखो ग़म की रात भी कट जाती है
पिछला पहर है मयख़ाने में नर्गिसे - मयगूँ[1] जाग रही है
क्या कहना ज़ुल्फ़ों की दराज़ी सच है बड़ों की बात बड़ी है
इक साग़र से चश्मे - ख़ुमारीं मयख़ाने में सुब्ह हुई है
यारो वो क्या नेमत है जिस से दुनिया की दुनिया ख़ाली है
मेरी हयात - आवर ग़ज़लों पर मौत ने भी अँगड़ाई ली है
ऐ ग़मे - जानाँ ऐ ग़मे - जानाँ क्या तू ही ग़मे - दौराँ भी है
वक़्ते - सुख़न उस के लबे - नाज़ुक जैसे कोई कली खिलती है
वक़्त न कटने वाले देस में सुब्ह भी की है शाम भी की है
जिस को बाँकपन कहिए तेरी एक अदा - ए - कजकुलही है
शायद उस ने पलक झपकायी दिल पर परछाईं - सी पड़ी है
काश ये दुनिया दुनिया होती दुनिया में दुनिया की कमी है
सदमा - ए - हिज्र न दे पिछली शब यार रात ही अब कितनी है

सुन के फ़िराक़ कहानी तेरी
फ़ितरत[2] की आँखों में नमी है

---

१. शराबी आँखें। २. प्रकृति।

● २२ जब आँखें झपकाते हैं तारे जब दुनिया सो जाती है
उन रातों के सन्नाटों में मुझ को तेरी याद आती है

यूँ तो सुनाई नहीं देती है यूँ वो तीरो-सनाँ भी नहीं
किस की आह फ़ज़ाओं का यूँ सीना चीरती जाती है
ऐ शबे-ग़म के जागने वालो तुम को तो ख़ुद है मालूम
जाते-जाते ग़म जाता है आते-आते नींद आती है
रहती दुनिया में रह-रह के उठते हैं क्या-क्या हंगामे
मेरी आँख वो नींद की माती जागते ही सो जाती है
कहने वालो कहने की यूँ लाखों बातें हैं लेकिन
जिस को ग़ज़ल कहिये बस वो तो एक बात दोहराती है
नक़्शे-क़दम से दूर-दूर तक लाला-ओ-गुल खिल उठते हैं
किश्ते-ख़राम से दूर-दूर तक राह लहलहा जाती है
मुझ से पूछो क्या है लोगो उस की ठहरी-ठहरी निगाह
एक छुरी जो चलती नहीं और दिल में उतरती जाती है
मह्‌रो-महो-अंजुम की साँसें रुक जाती हैं सीनों में
मेरी ग़ज़ल ज़ुल्माते-जहाँ में जिस दम दिये जलाती है
कौन वो नर्गिसे-जादू है जो सोयी हुई है क़रनों[1] से
कौन आँख है जिस को दुनिया सुब्हे-अज़ल से जगाती है
कौन बताये क्यों वो रही है आइन-ओ-शाना से बेज़ार
शाहिदे-हस्ती मेरी ग़ज़ल जिस की ज़ुल्फ़ें सुलझाती है
दुख-दर्द की मारी दुनिया को मेरी आवाज़ के साये में
यकगूना सुकूँ मिल जाता है कुछ देर नींद आ जाती है
दूर - दूर तक लाख पुकारो उस का सुराग़ नहीं मिलता
जो तहज़ीब रस्मे-कुहन की वादियों में खो जाती है
है इक नातमाम अफ़साना हर इक की रूदादे-हयात
हर हस्ती में ता-दमे-आखिर कोई कमी रह जाती है
एक शबे - हस्ती में आये ताइफ़े[2] कितने क़रनों के
इतनी छोटी रात में दुनिया क्या-क्या स्वाँग रचाती है
पत्ता - पत्ता बूटा - बूटा तब आता है रंग पे जब
अपने आँसुओं से शबनम गुलज़ार का मुँह धो जाती है

---

१ युगों। २ समुदाय।

सदा सुहागन उस की महब्बत सदा सुहागन उस का रूप
बाद की नज़रों में भी जिस की पहली नज़र याद आती है
इक मर्दे-कामिल ने कहा कल ज़िक्रे-निफ़ाक़ो-अदावत[1] पर
मिस्ले-दोस्ती ये भी है फ़न कितनों को दुश्मनी आती है
आज ऐ दीद-ए-इबरत जिन को दफ़्न हुए सदियाँ गुज़रीं
ख़ाक इन सोज़े - निहाँ वालों की अब भी धुवाँ दे जाती है
सब के दरम्याँ हूँ मैं लेकिन कैसे बताऊँ क्या हूँ मैं
पास की हर आवाज़ भी अब तो बड़ी दूर से आती है
मैं ने उस को नहीं देखा है कैसे बताऊँ कैसे कहूँ
किस के रुख़ से मेरी ग़ज़ल या रब घूँघट सरकाती है
इस मयख़ाना-ए-इश्क़ में तुम ने नाहक़ ज़हमत की ऐ ख़िज़्र[2]
जहाँ ज़िन्दगी जामे - हलाहल पी के अमर हो जाती है
इस मंज़िल से गुज़रना है ऐ क़ाफ़िला-ए-तारीख़े-जहाँ
तदबीर के बुझ जाते हैं दिये तक़दीर को नींद आ जाती है
हाँ उस बज़्मे-समाअ में अकसर वज्द किया है मैं ने भी
साज़े - सुकूत जहाँ बजते हैं जहाँ ख़ामुशी गाती है
गुलशने - हस्ती में ये कैसा जश्ने - बहाराँ है यारो
एक कली तब खिलती है जब लाख कली मुरझाती है
इस दुनिया ही में गुज़री हैं ऐसी हस्तियाँ भी जिन की
बेअमली भी अह्ले - जहाँ को दर्से - अमल दे जाती है
वो इलहामी लम्हे भी आते हैं हयाते - शाइर में
ख़लवते - दिल भी जिन लम्हों में ग़ारे - हिरा[3] बन जाती है
छेड़ - छेड़ के पूछ रही है दुनिया वजहे - ग़मगीनी
और महब्बत है कि तेरा मुँह देख - देख रह जाती है
अलविदाअ़ ऐ जनम - साथियो अलफ़िराक़ ऐ हमदर्दो
इक अनसुनी पुकार देर से मुझ को कहीं बुलाती है
अब तुम से रुख़सत होता हूँ आओ सँभालो साज़े-ग़ज़ल
नये तराने छेड़ो मेरे नग़्मों को नींद आती है
दुनिया-दुनिया आलम-आलम जिस के आज अफ़साने हैं
उस फ़िराक़ की राम-कहानी किस की समझ में आती है

१. वैमनस्य एवं शत्रुता की चर्चा। २. रास्ता दिखाने वाले एक पैग़म्बर का नाम। ३. हिरा नामक वह पहाड़ जहाँ हज़रत मुहम्मद साहब ईश्वर का ध्यान किया करते थे।

● २३

जब तेरे क़ामत[1] की यादें आइयाँ
ज़िन्दगी लेने लगी अँगड़ाइयाँ
फिर सियह ज़ुल्फ़ों की यादें आइयाँ
फिर मेरे दिल पर घटाएँ छाइयाँ

ऐ निगाहे-शौक़ तुझ को क्या कहूँ आज वो आँखें बहुत शरमाइयाँ
झूमते आये घटाओं की तरह गेसुए-शब-रंग के सौदाइयाँ
बाल-बाल उस का कमन्दे मेह्‌रो-माह गेसुए-पुर-पेच की गीराइयाँ[2]
हुस्न को भी अब नहीं ऐ दिल क़रार आज तो तू ने क़यामत ढाइयाँ
वो शुरू-ए-इश्क़ की बापर्दगी और अब ये ख़्वारियाँ रुसवाइयाँ
जिन को हम एक उम्र तक भूले रहे आज वो बातें बहुत याद आइयाँ
सब दिली चोटें उभर आयीं हैं जब तेरी यादों की चलीं पुरवाइयाँ
सद मकानो-लामकाँ हैं जिस में बन्द एक ज़र्रा ख़ाक की पहनाइयाँ
डूबिए तो डूबते ही जाइए उन सियह आँखों की उफ़् गहराइयाँ
ज़िन्दगी है या कोई दश्ते-जुनूँ[3] हर तरफ़ तनहाइयाँ तनहाइयाँ
सोचता हूँ मैं तेरी यादें न हों गुज़री हैं नज़रों से कुछ परछाइयाँ
मुझ से ये बातें दमे-फ़िक्रे-सुख़न किस लबे-ख़ामोश ने कहलाइयाँ
तुम अगर मुझ से यूँ ही खिंचते रहे दूर पहुँचेंगी मेरी रुसवाइयाँ
बातों-बातों में मुझे करके उदास वो निगाहें भी बहुत पछताइयाँ
मौत भी इस राज़ से है बेख़बर कितनी जानें इश्क़ में काम आइयाँ
ज़िन्दगी के दर्द का करके ख़याल बारहा आँखें मेरी भर आइयाँ
अब वो माने या न माने अपना अह्‌द आज उसे क़समें बहुत दिलवाइयाँ
जिन में था कुछ इम्तियाज़े सुलहो-जंग मुझ को क्या-क्या वो अदाएँ भाइयाँ
ज़िन्दगी में अब कहाँ वो दिलकशी अब कहाँ वो मौत की रा'नाइयाँ
देख आये आज यादों का नगर हर तरफ़ परछाइयाँ परछाइयाँ

ख़ुल चलीं गिरहें शबे-ग़म की फ़िराक़
उँगलियाँ तारों ने जब चटख़ाइयाँ

---

१. शरीर। २. पकड़। ३. दीवानगी का जंगल।

● २४ ज़हे-आवो-गिल की ये कीमिया[1] है चमन कि मोजज़-ए-नुमू[2]
न ख़िज़ाँ है कुछ न वहार कुछ वही ख़ारो-ख़स वही रंगो-वू
मेरी शाइरी का ये आईना करे ऐसे को तेरे रू-व-रू
जो तेरी ही तरह हो सर-वसर जो तुझी से मिलता हो मू-व-मू[3]
इसी सोज़ो-साज़ की मुन्तज़र थी वहारे-गुलशने-आरज़ू
तेरे रंग-रंग नशात से मेरे ग़म की आने लगी है वू
वो चमन-परस्त भी हैं जिन्हें ये ख़वर हुई ही न आज तक
कि गुलों की जिस से है परवरिश रगे-ख़ार में है वही लहू
हुई ख़त्म सुहवते-मयकशी यही दाग़ सीनों में रह गया
कि तुलूअ[4] होने से रह गये कई आफ़तावे-ख़ुमो-सवू[5]
कई लाख फूलों ने पैरहन सरे-वाग़ हँस के उड़ा दिये
ज़हे-फ़स्ले-गुल वो हवा चली कि चमन की ले उड़ी आवरू
जिसे अपने-आप से कहते भी मुझे आज लाख हिजाव है
वो ज़माना इश्क़ को याद है मेरा अर्ज़े-ग़म तेरे रू-व-रू
तुझे पाके ख़ुद को मैं पाऊँगा कि तुझी में खोया हुआ हूँ मैं
यँ तेरी तलाश है इसलिए कि मुझे है अपनी ही जुस्तजू[6]
हुई वारदाते-सहर यहाँ तो गुलों का सीना धड़क गया
यँ चली कि तेग़े-नसीम[7] ने कई हाथ उछाल दिया लहू
मेरे दिल में था कोई जलवागर वो हो तू कि और कोई मगर
यही ख़ालो-ख़त थे व-जिन्सही यही रूप-रंग भी हू-व-हू
इधर एक चुप तो हज़ार चुप उधर एक कह तो हज़ार सुन
वो नयाज़े-इश्क़ की वेवसी वो निगाहे-नाज़ की दू-व-दू[8]
वही आँख जामे-मये-हया वही आँख जामे जहाँनुमा
जो निगाह उठती नहीं कभी वो निगाह जाती है चारसू
कभी पाये-पाये हुए तुझे कभी खोये-खोये हुए तुझे
कभी वेनयाज़े-तलाश है कभी इश्क़ माएले जुस्तुजू
न यँ भेद हुस्न का खुल सका न भरम यँ इश्क़ का मिट सका
किसी रूप में ये है तू कि मैं किसी भेस में ये हूँ मैं कि तू
ये कहाँ से वज़्मे-ख़याल में उमड़ आयीं चेहरों की नद्दियाँ
कोई महचकाँ कोई ख़ुरफ़शाँ कोई ज़ुहरावश कोई शोला-रू

---

१. पानी एवं मिट्टी के रसायन को धन्य। २. प्रकट होने का चमत्कार। ३. हू-ब-हू। ४. उगना। ५. घड़ा और मधुकलश। ६. खोज। ७. हवा की तलवार। ८. आमने-सामने।

गहे - वाग़े-हुस्न अदन-अदन गहे - बाग़े-हुस्न ख़ुतन-ख़ुतन
तवो - ताव रूए - नुमू - नुमू ख़मे - पेचे - ज़ुल्फ़े-सियाह-मू
वो अदा-ए-उज़्रे-सितम न थी वो था कोई जादूए-सामरी
मुझे आज तक नहीं भूलती वो निगाहे-नरगिसे-हीला-जू[१]
मेरी शाइरी ने खिलाये गुल सरे-नोके-खार चमन-चमन
जो किये ये दावे हरीफ़ ने रगे-फ़िक्र देने लगी लहू
तुझे अह्ले-दिल की खबर नहीं कि बड़े ख़ज़ाने लुटा गये
ये गदागराने - दयारे - ग़म ये क़लन्दराने - तही कदू
अब उसी का तकिया ज़माने में ये सुना है मरजा-ए-ख़ल्क़[२] है
जो फ़िराक़ तेरे लिए फिरा कभी दर-ब-दर कभी कू-ब-कू

● २५ जो बात है हद से बढ़ गयी है
वाएज़[३] के भी कितनी चढ़ गयी है
हम तो ये कहेंगे तेरी शोख़ी
दबने से कुछ और कढ़ गयी है
हर शय ब - नसीमे - लम्से - नाज़ुक[४]
बर्गे - गुले - तर से बढ़ गयी है
जब - जब वो नज़र उठी मेरे सर
लाखों इल्ज़ाम मढ़ गयी है
तुझ पर जो पड़ी है इत्तफ़ाक़न
हर आँख दुरूद[५] पढ़ गयी है
सुनते हैं कि पेचो - ख़म[६] निकल कर
उस ज़ुल्फ़ की रात बढ़ गयी है
जब - जब आया है नाम मेरा
उस की तेवरी - सी चढ़ गयी है
अब मुफ़्त न देंगे दिल हम अपना
हर चीज़ की क़द्र बढ़ गयी है
जब मुझ से मिली फ़िराक़ वो आँख
हर बार इक बात गढ़ गयी है

१. बहाना ढूँढ़नेवाली आँखें। २. संसार का रक्षा-स्थल। ३. उपदेशक। ४. कोमल हवा के स्पर्श से [illegible] ६. टेढ़ापन।

● २६

जौलाँगहे - हयात[1] कहीं ख़त्म ही नहीं
मंज़िल न कर हुदूद से दुनिया बनी नहीं

माना कि तेरे लुत्फ़ो-करम में कमी नहीं
आसान इस क़दर तो तेरी दोस्ती नहीं

जिस पैकरे - नशात की रग - रग दुखी नहीं
उस की ख़ुशी को ग़ौर से देखो ख़ुशी नहीं

कुछ ठोकरें तो खा चमक उट्ठेंगी मंज़िलें
पा - ए - तलब की फ़िक्रे - सलामतरवी नहीं

कल तुझ से छूटने की ख़बर हो रहेगी राज़
लेकिन ये बात आज किसी से छिपी नहीं

हम देख कर भी देख सकें हुस्ने-यार को
इतनी तवील[2] फ़ुर्सते - नज़्ज़ारगी नहीं

कब देखिए दिलों को मिले इज़्ने-यास[3] भी
बेगानावार कहती है वो आँख अभी नहीं

तेरे करम से भी न हुई कम फ़सुर्दगी[4]
शायद तेरी ख़ुशी भी हमारी ख़ुशी नहीं

तारीख़े - ज़िन्दगी के समझ कुछ मुहर्रकात[5]
मजबूर इतनी इश्क़ की बेचारगी नहीं

किस ने हक़ीक़तों के ख़ज़ाने लुटा दिये
बेमाया[6] इस क़दर मेरी बेमायगी नहीं

कुछ आज भी है गर्मो-मुनव्वर फ़ज़ा - ए - दह्र
अफ़सुर्दा इतनी इश्क़ की अफ़सुर्दगी नहीं

हाँ ऐ निगाहे - यार न बदज़न हो इश्क़ से
ये बेहिसी तो माना - ए - रंजो - ख़ुशी नहीं

हस्सास कम नहीं है मुहब्बत भी और यूँ
उस को ग़मो - नशात से दिलबस्तगी नहीं

बेख़ुद - से थे तो वक़्त का ये भी फ़रेब था
हम और तुझ को दिल से भुला दें कभी नहीं

१. जीवन-यात्रा। २. लम्बी। ३. निराशा का संकेत। ४. उदासी। ५. प्रेरणाएँ। ६. तुच्छ।

हम ग़मज़दों की गुफ़्तगू - ए - तल्ख़ पर न जा
'क़िस्मत बुरी सही पै तबियत बुरी नहीं'

तकलीफ़े - हिज्र को न बना ऐसे - जाविदाँ
ग़म की शबे - दराज़ भी इतनी बड़ी नहीं

महशर का इज़्देहाम[1] नज़र का फ़रेब था
अपने सिवा वहाँ भी जो देखा कोई नहीं

नींद आ चली है अन्जुमे-शामे-अबद[2] को भी
आँख अह्ले - इन्तेज़ार की अब तक लगी नहीं

कुछ झिलमिलाहटें हैं शबिस्ताने - दह्र[3] में
शम्अ - ए - हयात सरसरे - ग़म से बुझी नहीं

वो इश्क़ है जो मंज़िले - हर इन्क़लाब है
नीयत निगाहे - यार की बदली हुई नहीं

कब सरख़ुशी भी वजहे - सुकूँ बन सकी मगर
अच्छा कुछ इस क़दर ग़मे - आसूदगी नहीं

बादे - बहार[4] देख के किस तरह ये कहें
रंगीनियों की जान तेरी सादगी नहीं

ऐ दोस्त यूँ तो हम तेरी हसरत को क्या कहें
लेकिन ये ज़िन्दगी तो कोई ज़िन्दगी नहीं

महफ़ूज़ जो थी चश्मे - ज़मानो - मकाँ से भी
वो ज़िन्दगी भी तेरी नज़र से बची नहीं

ग़फ़लत हयाते - इश्क़ की चौंकी हुई - सी है
अब पासबाने - उम्रे - रवाँ मौत भी नहीं

ऐ इश्क़ कारवाने - दोआलम बिछड़ गये
ऐ ख़िज़्रे - राह ये तो कोई रहबरी नहीं

ये कैफ़ियत सुकूने - सहर में कहाँ की है
वो शाम है जो सुबह भी हो कर कटी नहीं

शामें किसी को माँगती हैं आज भी फ़िराक़
गो ज़िन्दगी में यूँ मुझे कोई कमी नहीं

---

१. भीड़। २. प्रलय की सन्ध्या के तारे। ३. संसार के शयनागार। ४. बहार की हवा।

२७
जाने क्या बात है किस चीज़ की याद आती है
शाम को रोज़ तबीयत मेरी घबराती है

साफ़ सुन लो मेरे अशआ़र के ज़ेरो-बम[१] में
दिले-गेती[२] के धड़कने की सदा आती है

याद उन ज़ुल्फ़ों की आती है रहे-ग़ुर्बत[३] में
बेजगह आज मुझे रात हुई जाती है

गेसुओं की कोई लट है कि फ़ज़ा-ए-दिल में
एक परछाँईं-सी रह-रह के मचल जाती है

इस हया का तेरी ऐ जाने-हयात क्या कहना
कि तेरी याद भी आते हुए शरमाती है

हो भला बेख़ुदी-ए-ग़म का कि अब तो मुझ को
मुद्दतों बाद कहीं मेरी ख़बर आती है

तेरी रा'नाइ-ए-क़ामत[४] कि दमे-सैरे-चमन
शाखे-गुल बाग़ में रह-रह के लचक जाती है

कुछ-न-कुछ वक़्त भी कट जाता है रो लेने से
और यकगूना तबीयत भी सँभल जाती है

कोई दुखता हुआ दिल है कि ग़ज़ल है मेरी
अपना दुख-दर्द कहानी-सी कहे जाती है

सुब्ह आईना दिखाती है फ़ज़ा को जिस वक़्त
साफ़ इस में तेरी तसवीर नज़र आती है

शादमानी में भी आ जाते हैं ग़म के वक़्फ़े[५]
दिल में सदियों की दबी चोट उभर आती है

सर-ब-सर राज़ हुई जाती है हस्ती अपनी
ज़िन्दगी दूर की आवाज़ हुई जाती है

इश्क़ में कौन थी वो बात मुझे याद नहीं
ज़िन्दगी आज जिसे सोच के पछताती है

हिम्मत ऐ अह्ले-वतन याद रहे क़ौमों की
देखते-देखते तक़दीर पलट जाती है

ज़िन्दगी इश्क़ की क्या पूछते हो क्या है फ़िराक़
मौत ही मौत हरेक सम्त नज़र आती है

---

१. ऊँच-नीच। २. धरती के हृदय। ३. यात्रा की राह। ४. शरीर की सुन्दरता। ५. समय।

● २८

जुल्फ़े - सियह ख़ुतन - ख़ुतन
जल्वा-ए-रुख़ चमन-चमन

हाये ये शोख़िए - सुख़न
बात में बात कन में कन

पूछ ज़मीरे - इश्क़ से राज़े - ख़ुदा - ओ - अहरमन[1]
हर शबे-ग़म गुज़र गयी ओढ़े सितारों का कफ़न
याद नहीं कि कब हुआ नश्शा - ए - सरख़ुशी हिरन
ख़ुद ही है दास्ताने - शौक़ तेरा जमाले - बेसुख़न
सब है करिश्मा-ए-अना[2] ख़ा ना फ़रेबे - मा - ओ - मन
जल्वे नहीं ये चेहरे हैं तू है ख़ुद एक अन्जुमन
शेर से भी लतीफ़तर उस की नज़ाकते - बदन
है शबे - मयकदा की जान नरगिसे - सद प्याला - ज़न
आँख तिलिस्मे - शाम है या कोई आहू - ए - ख़ुतन
मस्ती - ए - इश्क़ सर-बसर नश्शा - ए - बादा - ए - कुहन
मज़हबो - मिल्लतो - निज़ाम बदलेंगे ये ज़मन - ज़मन
इश्क़ हो और बदगुमाँ रूठ के इस अदा से मन
है ये ख़िताबे - नाज़ या उड़ते हैं बर्गे - यासमन[3]
तेरे ख़रामे - नाज़ में ठंडी हवाओं का चलन
ख़ुशबूएँ जैसे मुस्कुरायें पूछ न नाज़ुकी - ए - तन
जैसे फ़ज़ा पछाड़ें खाय हाये ये बू - ए - पैरहन
किस के ये अज़्ब - अज़्ब[4] से आती है ख़ुशबू - ए - बदन
कृष्ण की बाँसुरी से देख सतहे - जमन शिकन - शिकन

मैं हूँ फ़िराक़ ख़ुद ही लाख
अन्जुमनों की अन्जुमन

१. ख़ुदाओं का देवता। २. अहद की ताक़त। ३. चमेली की पंखुड़ियाँ। ४. अंग-अंग।

● २९ अब अकसर चुप-चुप से रहे हैं यूँ ही कभू लब खोलें हैं
पहले फ़िराक़ को देखा होता अब तो बहुत कम बोलें हैं

दिन में हम को देखने वालो अपने - अपने हैं औक़ात[1]
जाओ न तुम इन खुश्क आँखों पर हम रातों को रो लें हैं

फ़ितरत मेरी इश्क़ो - महब्बत क़िस्मत मेरी तनहाई
कहने की नौबत ही न आयी हम भी किसू के हो लें हैं

खुनुक सियह महके हुए साये फैल जायें हैं जल-थल पर
किन जतनों से मेरी ग़ज़लें रात का जूड़ा खोलें हैं

बाग़ में वो ख़ाब-आवर आलम[2] मौजे-सबा के इशारों पर
डाली-डाली नौरस पत्ते सहज-सहज जब डोलें हैं

उफ़ वो लबों पर मौजे-तबस्सुम[3] जैसे करवटें लें कौंदे
हाय वो आलमे-जुंबिशे-मिज़गाँ[4] जब फ़ित्ने पर तोलें हैं

नक़्शो-निगारे-ग़ज़ल में जो तुम ये शादाबी[5] पाओ हो
हम अश्कों में कायनात के नोके-क़लम डुबो लें हैं

उन रातों को हरीमे-नाज़ का एक आलम होये है नदीम[6]
खलवत में वो नर्म अँगुलियाँ बन्दे-क़बा[7] जब खोलें हैं

ग़म का फ़साना सुनने वालो आखिरे-शब आराम करो
कल ये कहानी फिर छेड़ेंगे हम भी ज़रा अब सो लें हैं

फ़ितरत की वें आँखमिचौली दीद[8] के क़ाबिल होये है
आलमे - राज़ में कलियाँ आँखें बन्द करें हैं खोले हैं

हम लोग अब तो अजनबी-से हैं कुछ तो बताओ हाले-फ़िराक़
अब तो तुम्हीं को प्यार करें हैं अब तो तुम्हीं से बोलें हैं

---

१. सामर्थ्य। २. नींद लानेवाली दशा। ३. मुसकराहट की लहर। ४. भवों के हिलने की स्थिति। ५. प्रसन्नता। ६. साथी। ७. पहरावे का बन्धन। ८. देखने।

● ३० अश्क में वो तरी कहाँ है मियाँ
ग़म में वो ताज़गी कहाँ है मियाँ
आदमी आदमी कहाँ है मियाँ
ज़िन्दगी ज़िन्दगी कहाँ है मियाँ
लोग जिस ज़िन्दगी को करते हैं याद
आज वो ज़िन्दगी कहाँ है मियाँ
अब गुनह भी तो खाक उड़ाना है
अब वो तरदामनी कहाँ है मियाँ
कूचा-ए-यार जिस को कहते थे
अब वो कू[1] वो गली कहाँ है मियाँ
अब से पहले जो थी हसीनों में
आज वो दिलबरी कहाँ है मियाँ
सब वो इक शख्स की बदौलत थे
अब वो ग़म वो खुशी कहाँ है मियाँ
वो कमी जिस में इक कशिश-सी थी
वो कशिश वो कमी कहाँ है मियाँ
जिस में हम उस को देख लेते थे
आज वो रौशनी कहाँ है मियाँ
वादा-ए-शाम था अब आये हो
दो घड़ी रात भी कहाँ है मियाँ
न करो ज़िक्रे-ज़िन्दगी कि अभी
ज़िन्दगी ज़िन्दगी कहाँ है मियाँ
पहले इक दर्द दिल में रहता था
अब तो वो दर्द भी कहाँ है मियाँ
दौरे-बेगानगी में क्या पूछें
वो यगाना-वशी[2] कहाँ है मियाँ
खोया-खोया ज़रूर हूँ लेकिन
इस क़दर बेखुदी कहाँ है मियाँ
वो तो रुख़सत हुई फ़िराक़ के साथ
अब वो अफ़सुर्दगी कहाँ है मियाँ

---

१. कूचा। २. अपनापन।

● ३३

आँखों में जो वात हो गयी है
इक शरहे - हयात[1] हो गयी है
जव दिल की वफ़ात हो गयी है
हर चीज़ की रात हो गयी है

ग़म से छुटकर ये ग़म है मुझको
क्यों ग़म से नजात हो गयी है
मुद्दत से ख़बर मिली न दिल की
शायद कोई वात हो गयी है
जिस शै[2] पँ नज़र पड़ी है तेरी
तस्वीरे - हयात[3] हो गयी है
अव हो मुझे देखिए कहाँ सुव्ह
इन जुल्फ़ों में रात हो गयी है
दिल में तुझ से थी जो शिकायत
अव ग़म के निकात[4] हो गयी है
इक़रारे - गुनाहे - इश्क़[5] सुन लो
मुझ से इक वात हो गयी है
क्या जानिए मौत पहले क्या थी
अव मेरी हयात हो गयी है
उस चश्मे - सियह की याद अक्सर
शामे - ज़ुल्मात हो गयी है
इस दौर में ज़िन्दगी वशर की
बीमार की रात हो गयी है
जीती हुई वाज़ी - ए - महव्वत
खेला हूँ तो मात हो गयी है
मिटने लगीं ज़िन्दगी की क़द्रें
जव ग़म से नजात[6] हो गयी है
वो चाहें तो वक़्त भी वदल जाय
जव आये हैं रात हो गयी है

---

१. जीवन की व्याख्या। २. वस्तु। ३. जीवन का चित्र। ४. मर्म। ५. प्रेम करने के गुनाह की स्वीकृति। ६. मुक्ति।

पहले वो निगाह एक किरन थी
अब वर्क़-सिफ़ात[1] हो गयी है
जिस चीज़ को छू दिया है तूने
इक वर्गे-नवात[2] हो गयी है

इक्का-दुक्का सदा-ए-ज़ंजीर
ज़िन्दाँ में रात हो गयी है
एक-एक सिफ़त फ़िराक़ उस की
देखा है तो ज़ात हो गयी है

● ३४ अब ख़त्म हो इताब[3] कहीं रहम आ चुके
गुस्ताख़े-इश्क़ ख़ून में अपने नहा चुके
कब से लरज़ रही है फ़िज़ा कायनात की
ऐ हुस्ने-शर्मसार
तुझे शर्म आ चुके
अब मावरा-ए-मह्‌व-गुमाँ है सुकूते-हुस्न[4]
वो सुन चुके फ़साना-ए-
ग़म हम सुना चुके
ऐ दिल कहाँ की बात निकाली कि अब उन्हें
अगले दिनों के लुत्फ़ो-
करम याद आ चुके
उन का भी कैफ़े-तम्कनते-हुस्न[5] बढ़ गया
अपने भी नाले अर्श
के पाये हिला चुके
जल्दी भी है पयाम पहुँचने का डर भी है
पैग़ामबर पयाम को
ले कर न जा चुके
तक़दीर में हर इक की यें वर्क़े-अदा नहीं
तुझ पर वो ऐ फ़िराक़े-हज़ीं[6] मुस्कुरा चुके॥१९३६॥

१. बिजली की विशेषता रखने वाली। २. हरी डाली। ३. क्रोध। ४. सौन्दर्य का चुप रहना। ५. हुस्न के अहङ्कार का नशा। ६. दुखी।

● ३१ आज भी क़ाफ़िला - ए - इश्क़ रवाँ है कि जो था
वही मील और वही संगे - निशाँ[1] है कि जो था
फिर तेरा ग़म वही रुसवा - ए - जहाँ है कि जो था
फिर फ़साना व - हदीसे - दिगराँ है कि जो था
मंज़िलें गर्द के मानिन्द उड़ी जाती हैं
वही अन्दाज़े - जहाने - गुज़राँ है कि जो था
ज़ुल्मतो - नूर में कुछ भी न महब्बत को मिला
आज तक एक धुँधलके का समाँ है कि जो था
यूँ तो इस दौर में बेकैफ़ - सी है बज़्मे - हयात
एक हंगामा सरे - रत्ले - गराँ[2] है कि जो था
लाख कर जौरो - सितम लाख कर एहसानो - करम
तुझ पँ ऐ दोस्त वही वह्‌मो - गुमाँ है कि जो था
आज फिर इश्क़ दो - आलम से जुदा होता है
आसतीनों में लिये कौनो - मकाँ है कि जो था
इश्क़े - अफ़सुर्दा नहीं आज भी अफ़सुर्दा बहुत
वही कम - कम असरे - सोज़े - नेहाँ[3] है कि जो था
क़ुर्ब ही कम है न दूरी ही ज़्यादा लेकिन
आज वो रब्त का एहसास कहाँ है कि जो था
नज़र आ जाते हैं तुम को तो बहुत नाज़ुक बाल
दिल मेरा क्या वही ऐ शीशागराँ है कि जो था
जान दे बैठे थे इक बार हवस वाले भी
फिर वही मरहला - ए - सूदो - ज़ेयाँ[4] है कि जो था
आज भी सैदगहे - इश्क़ में हुस्ने - सफ़्फ़ाक
लिये अबरू की लचकती - सी कमाँ है कि जो था
फिर तेरी चश्मे - सुख़नसंज ने छेड़ी कोई बात
वही जादू है वही हुस्ने - बयाँ है कि जो था
तीराबख़्ती नहीं जाती दिले - सोज़ाँ की फ़िराक़
शम्अ के सर पँ वही आज धुआँ है कि जो था

---

१. पत्थर का निशान। २. शराब के प्याले के पास। ३. भीतरी जलन का प्रभाव। ४. लाभ-हानि का प्रश्न।

● ३२ आने दो वक़्त होगी बहारे-चमन की बात
अह्ले-वतन अभी न उठायें वतन की बात
हर बार इक अदा-ए-तग़ाफ़ुलनुमा[1] के साथ
उस आँख ने कही किसी अह्दे-कुहन[2] की बात
रातों की ख़ामुशी में ब-हर-उशवा-ए-नुजूम[3]
सुनता हूँ मैं तेरे निगहे-कमसुख़न की बात
अफ़सानागो को याद नहीं ख़त्मे-दास्ताँ
छेड़ी है उसने जुल्फ़े-शिकन-दर-शिकन की बात
मेरी ग़ज़ल नवा-ए-मआनी-ए-ज़िन्दगी[4]
ऐशो-तरब की बात न रंजो-महन[5] की
है अँखड़ियों की शाम में दुनिया की दास्ताँ
होटों की सुब्हे-नौ में है बाग़े-अदन की बात
आ जाये काश मेरी नवा-ए-हयात में
तेरे ख़रामे-नाज़ के आहिस्तापन की बात
अब ज़िन्दग़ी-ए-इश्क़ में वो ताज़गी कहाँ
बू-ए-परीदा[6] है किसी गुल-पैरहन की बात
जाँबाज़ियों के और तरीक़े हज़ार हैं
क्यों बार-बार छेड़िए दारो-रसन की बात
हम तो हर इम्तियाज़[7] मिटाने को आये हैं
मुद्दत हुई कि भूल चुके मा-ओ-मन की बात
हर-इक के पास हुस्ने-ज़बानो-बयाँ सही
लेकिन कहाँ से लाये कोई मेरे फ़न की बात
तारे हैं आबदीदा दिले-आसमाँ गुदाज़
पहुँची है दूर तक मेरे शेरो-सुख़न की बात
मुमकिन है दर्दे-शामे-ग़रीबाँ बहल सके
छेड़ी है दिल ने दूरी-ए-अह्ले-वतन की बात
ऐ अह्ले-हिन्द तुम ने सुनी या सुनी नहीं
हर-मुश्ते-ख़ाके-हिन्द में दर्दे-वतन की बात
वो देखो उसके पास खिंचे आ रहे हैं लोग
हर बात है फ़िराक़ की इक अंजुमन की बात

---

१. उपेक्षा के भाव की अदा। २. पुरातन काल। ३. सितारों की हर अदा में। ४. जीवन-मर्म को [illegible]। ५. दुख-दर्द। ६. उड़ती हुई सुगन्ध। ७. अन्तर, [illegible]।

● ३३ आँखों में जो बात हो गयी है
इक शरहे-हयात[1] हो गयी है
जब दिल की वफ़ात हो गयी है
हर चीज़ की रात हो गयी है

ग़म से छुटकर ये ग़म है मुझको
क्यों ग़म से नजात हो गयी है
मुद्दत से खबर मिली न दिल की
शायद कोई बात हो गयी है
जिस शै[2] पँ नज़र पड़ी है तेरी
तस्वीरे-हयात[3] हो गयी है
अब हो मुझे देखिए कहाँ सुब्ह
इन ज़ुल्फ़ों में रात हो गयी है
दिल में तुझ से थी जो शिकायत
अब ग़म के निकात[4] हो गयी है
इक़रारे-गुनाहे-इश्क़[5] सुन लो
मुझ से इक बात हो गयी है
क्या जानिए मौत पहले क्या थी
अब मेरी हयात हो गयी है
उस चश्मे-सियह की याद अक्सर
शामे-ज़ुल्मात हो गयी है
इस दौर में ज़िन्दगी बशर की
बीमार की रात हो गयी है
जीती हुई बाज़ी-ए-महब्बत
खेला हूँ तो मात हो गयी है
मिटने लगीं ज़िन्दगी की क़द्रें
जब ग़म से नजात[6] हो गयी है
वो चाहें तो वक़्त भी बदल जाय
जब आये हैं रात हो गयी है

---

१. जीवन की व्याख्या। २. वस्तु। ३. जीवन का चित्र। ४. मर्म। ५. प्रेम करने के गुनाह की स्वीकृति। ६. मुक्ति।

पहले वो निगाह एक किरन थी
अब बर्क़ - सिफ़ात[1] हो गयी है
जिस चीज़ को छू दिया है तूने
इक बर्गे - नवात[2] हो गयी है
इक्का - दुक्का सदा - ए - ज़ंजीर
ज़िन्दाँ में रात हो गयी है
एक - एक सिफ़त फ़िराक़ उस की
देखा है तो ज़ात हो गयी है

● ३४ अब ख़त्म हो इताब[3] कहीं रहम आ चुके
गुस्ताख़े - इश्क़ ख़ून में अपने नहा चुके
कब से लरज़ रही है फ़िज़ा कायनात की
ऐ हुस्ने - शर्मसार
तुझे शर्म आ चुके
अब मावरा-ए-मह्व-गुमाँ है सुकूते-हुस्न[4]
वो सुन चुके फ़साना-ए-
ग़म हम सुना चुके
ऐ दिल कहाँ की बात निकाली कि अब उन्हें
अगले दिनों के लुत्फ़ो-
करम याद आ चुके
उन का भी कैफ़े-तम्कनते-हुस्न[5] बढ़ गया
अपने भी नाले अर्श
के पाये हिला चुके
जल्दी भी है पयाम पहुँचने का डर भी है
पैग़ामबर पयाम को
ले कर न जा चुके
तक़दीर में हर इक की यें बर्क़े-अदा नहीं
तुझ पर वो ऐ फ़िराक़े-हज़ीं[6] मुस्कुरा चुके॥१९३६॥

---

१. बिजली की विशेषता रखने वाली। २. हरी डाली। ३. क्रोध। ४. सौन्दर्य का चुप रहना। ५. हुस्न के अहद् का नशा। ६. दुखी।

● ३५ इश्क़ की जब खता हुई मुझ से
ज़िन्दगी टूट कर मिली मुझ से
निगहे - नाज़ तेरी कुछ ऐ दोस्त
कह रही थी अभी - अभी मुझ से
नामुरादाना ज़ीस्त करता हूँ
सीख ले तौरे - ज़िन्दगी मुझ से
लाख बातें थीं कहने - करने की
न हुई एक बात भी मुझ से
इश्क़ पर दरगुज़र करो न करो
अब तो इक बात हो गयी मुझ से
और तो आशिक़ी में क्या मिलता
अपनी हस्ती भी छिन गयी मुझ से
थी उदासी मेरी नशात की जान
रौनक़े - बज़्मे - नाज़ थी मुझ से
कर नज़र की इसी तरह तकमील
कभी औरों से मिल कभी मुझ से
अरनी - ए - गो - ए - तूर[1] से कह दो
नज़र इक शोख़ की लड़ी मुझ से
सब से रख रुख़े - ज़ाहिरी ऐ दोस्त
हाँ मगर रुख़े - बातिनी मुझ से
इश्क़े - तीरा - नसीब[2] का है ये क़ौल
है दो - आलम में रौशनी मुझ से
निगहे - शर्मगीं पॅ अपनी न जा
बेतकल्लुफ़ नहीं अभी मुझ - से
न मिलेगा तुझे कोई मुझ - सा
हैं कहाँ आज आदमी मुझ से
जिस को ख़ूने - जिगर से पाला था
छिन गयी क्यों वो ज़िन्दगी मुझ से
रात - दिन मौत की दुआएँ हैं
निभ चुकी रस्मे - दोस्ती मुझ से

---

१. तूर पर 'अरनी' करने वाले—तात्पर्य हज़रत मूसा से है। २. अन्धकारपूर्ण भाग्य वाले प्रेम।

न महे - नौ का ज़िक्र छेड़ूँ मैं
न वो अबरू करे कजी मुझ से
ज़िन्दा - दर - गोरो - ज़िन्दा - ए - जावेद
ख़ल्क़ पाती है ज़िन्दगी मुझ से
कह दिया आज दोस्त से सब कुछ
लेकिन इक बात रह गयी मुझ से
जैसे की ही नहीं इधर पहले
निगाहे - यार यूँ फिरी मुझ से
मैं ख़ुद अपना ही दोस्त कब हूँ फ़िराक़
क्या करे कोई दोस्ती मुझ से

● ३६ इश्क़ की दुनिया भी वो दुनिया नहीं
अब तो तेरा दर्द भी उतना नहीं
इन्तज़ारे - नरगिसे - मख़्मूर देख
ऐ महब्बत तेरे बस में क्या नहीं
अह्ले - ग़म को तेरा पैमाने - वफ़ा
याद तो क्या है मगर भूला नहीं
इन जफ़ाओं पर तेरी ऐ हुस्ने - दोस्त
क्यूँ जफ़ाओं का गुमाँ होता नहीं
तू ने सय्यारों[1] को समझा आफ़ताब
बेख़बर चिनगारियाँ शोला नहीं
हाथ मलते हैं ख़ुदा और अहरमन
तेरा आशिक़ दीनो-दुनिया का नहीं
तू ने अपनी भी तो कुछ परवा न की
लेकिन ऐसा तो कोई करता नहीं
है युँ - ही - सी दिल को तशवीशे - सहर[2]
तूले - शामे - ग़म से घबराता नहीं
माइले-बेदाद[3] वो कब था फ़िराक़
तू ने उसको ग़ौर से देखा नहीं ॥१९३९॥

---

१. सितारों। २. सुबह की चिन्ता। ३. अत्याचार पर आमादा।

● ३७

ऐ दोस्त तेरी राहों के क़रीं,
उस को भी भटकते पाया है
वो मेरी शबे-हिजराँ जिस की
आँखों में अँधेरा छाया है

बस ये कहने पर यारों ने बेदीन मुझे ठहराया है
सब ऐने-हक़ीक़त[1] है लेकिन ये भी सच है सब माया है

खैरो-शरो-ज़ुल्मो-नूर[2] के रब्त, ऐ दोस्त समझ मुझ काफ़िर से
हक़ तो यें है नूरे-हक़[3] पर भी शैताँ के परों का साया है

तू ने रगे-जाँ से क़रीं हो के क्यों शोख़ी-ए-पिनहाँ से मुझ को
शहरों-शहरों भटकाया है मुल्कों-मुल्कों भरमाया है

फ़ितरत सोती है खड़कता है पत्ता भी नहीं इस आलम में
ये रात अँधेरी ऐसे में किस शोख़ ने दर खड़काया है

कल मुझ से और मेरे दिल में ता-देर रही सरगोशी-सी[4]
कुछ मैं ने उसे समझाया है कुछ उस ने मुझे समझाया है

तनहाई की रातों ने अक्सर मुझ को मिलवाया है मुझ से
उस वक़्त ये समझा मैं क्या हूँ जब हिज्र में जी घबराया है,

मेरे इज़हारे-तमन्ना पर क्या था इरशादे-ज़ेरे-लबी[5]
कुछ मैं ने गुज़ारिश की है अभी कुछ आप ने भी फ़रमाया है

यूँ ज़ेरे-शफ़क़ पौ फटती है
अनफ़ासे-सहर[6] के झुरमुट में
जैसे किसी शाहिदे-राना[7] ने
घूँघट-सा ज़रा सरकाया है

---

१. परम सत्य। २. अच्छाई-बुराई व अन्धेरा-उजाला। ३. सत्य की रोशनी। ४. काना-फुसकी-सी। ५. दबी आवाज़ से कहना। ६. सुबह की साँसों। ७. सुन्दर रमणी।

● ३८ इश्क़ ज़-सर-ता-पा दिलसोज़ाँ दीद-ए-तर
वाहर-वाहर पानी
आग अन्दर-अन्दर

याद बड़ी दौलत है ये तसलीम मगर
उस की वफ़ाएँ उस की जफ़ाएँ याद न कर

शबनम में डूबा-डूबा जैसे गुले-तर
आईने में अक्से-हुस्ने-हयापरवर

जैसे कोई सोयी दुनिया जाग उठे
उस के वदन की लवें हैं या नग़माते-सहर

शोला-ओ-शबनम चश्मके-रंगीं सुब्हे-चमन
शोख़िए-ए-पिनहाँ लब पें तवस्सुम मिज़गाँतर[1]

इश्क़ से भी सीने की घुलावट और गुदाज़
चेहर-ए-रंगीं रंगीं से भी रंगींतर

वादी की हवाएँ चूमती रहती हैं तुझ को
किन शोलों ने पाला तुझ को ऐ गुले-तर

ख़्वाब है शाइर का या हुस्ने-लासानी
यें क़दे-मौज़ूँ है तेरा या मिसरा-ए-तर

ताज़ा-ब-ताज़ा चेहरा-ए-रंगीं दाम ब-दोश[2]
हल्क़ा-ब-हल्क़ा गेसु-ए-मुश्कीं ता-ब-कमर

कज-कुलहे ज़र्रीं-कमरे-नाज़ुक-बदने
गुंचा-दहन दुज़्दीदा[3] निगाह परी-पैकर

दिन डूबा संगीत छिड़ा साक़ी आया
तारे छिटके साज़ बजे खनके साग़र

इस में निहाँ हैं नादाँ कितने दवामो-सबात
माना वक़्फ़-ए-हस्ती बस एक रक़्से-शरर[4]

आलम-आलम है हस्ती का हर आलम
दुनिया-दुनिया है दुनिया का हर मंज़र

---

१. गीली पलकें। २. कन्धे पर जाल—तात्पर्य सिर के केशों से है। ३. तिरछी। ४. अग्नि-नृत्य।

शाम से तारी हुस्न पर इक बेखबरी-सी
पिछले पहर से इश्क़ की हालत नौ-ए-दिगर[1]

मौजे-शराब उठती हैं जैसे दर्द उठे
जी-भर आये जैसे लबालब हैं साग़र

यही तो है तामीरे-जहाने-नौ[2] का वक़्त
आज है नज़्मे-आलम कितना तितर-बितर

किस ने रोका तुझ को महब्बत करने से
फिर भी कहता हूँ कि महब्बत से भी गुज़र

ग़म वालों को कैसा वतन कैसी ग़ुर्बत
दिल परदेस का है परदेस और घर का घर

अम्रे-ग़ैब[3] से आज़ादी ख़ुद क़ैद बनो
इश्क़ वो ज़िन्दाँ है जिस में दीवार न दर

सोच ले तू अन्जामे-सुकूते-मजबूरी
हुस्न को अब ऐ इश्क़ ज़्यादा न क़ायल कर

मोजिज़ाहाए-सुकूते-नाज़[4] का क्या कहना
नरगिसे-जादू सब-कुछ कह दे बात न कर

साक़ी जिस से बाले-अहरमन[5] माँगें पनाह
आज गले से उतर गया वो शोला-ए-तर

जिस से हैं आबाद दो-आलम आह-वो-इश्क़
जंगल-जंगल सहरा-सहरा ख़ाक बसर

आखें खुल ही गय आख़िर कितना सोते
ऐ दिल रात बहुत बाक़ी है बातें कर

ख़ाके-फ़िराक़ कीमिया है ज़र्रा-ज़र्रा
सोज़े-निहाँ ने कोई
न रक्खी कोर-कसर

---

१. बदली हुई। २. नव संसार का निर्माण। ३. परोक्ष के कार्य। ४. महबूब के मौन रहने के चमत्कार। ५. शैतान का बच्चा।

● ३९ उजाड़ वन में कुछ आसार-से चमन के मिले
दिले-ख़राब से वो अपनी याद वन के मिले

हर-इक मुशाम में आलम है यूसुफ़िस्ताँ[1] का
परखने वाले तो कुछ बू-ए-पैरहन के मिले

थी एक बू-ए-परेशाँ भी दिल के सहरा में
निशाने-पा भी किसी आहू-ए-ख़ुतन के मिले

अजीव राज़ है तनहाई - ए - दिले - शाइर
कि ख़लवतों में भी आसार अन्जुमन के मिले

वो हुस्नो-इश्क़ जो सुब्हे-अज़ल के विछड़े थे
मिले हैं वादी-ए-ग़ुर्बत में फिर वतन के मिले

फ़क़ीरे-इश्क़ को क्या जामाज़ेवियों[2] से ग़रज़
यही वहुत है अगर चार गज़ कफ़न के मिले

कुछ अह्‌ले-वज़्मे-सुख़न समझे कुछ नहीं समझे
वशक्ले - शुहरते - मुवहम[3] सिले सुख़न के मिले

था जुर्‌आ-जुर्‌आ नयी ज़िन्दगी का इक पैग़ाम
जो चन्द जाम किसी वादा - ए - सुख़न के मिले

वज़ोरे - तवा हर इक तीर को कमान किया
हुए हैं झुक के वो रुख़्सत जो मुझ से तन के मिले

कमन्दे - फ़िक्रे - रसा में हरीफ़ मान गये
वो पेचो - ताव तेरी ज़ुल्फ़े - पुरशिकन के मिले

नज़र से मतला - ए - अनवार[4] हो गयी हस्ती
कि आफ़ताव मिला मुझ को इस किरन के मिले

हर - एक नक़्शनिगारीं हर-एक निकहतो - रंग
लक़ा - ए - नाज़[5] में जल्वे चमन - चमन के मिले

मिज़ाजे - हुस्न चलो एतदाल पर आया
जो रोज़ रूठ के मिलते थे आज मन के मिले

अरे इसी से तो जलते हैं शादकामे-हयात
कि अह्‌ले-दिल को ख़ज़ाने-ग़मो-मेहन के मिले

---

१. यूसुफ (एक पैग़म्बर जो अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थे) के बाग़। २. पोशाक की सुन्दरता। ३. धुँधली सी प्रसिद्धि के रूप में। ४. प्रकाश का प्रारम्भ। ५. महबूब के संसर्ग में।

इसी से इश्क़ की नीयत भी हो गयी मशकूक[1]
गँवा दिये कई मौक़े जो हुस्ने - ज़न के मिले

अदा में खिंचती थी तस्वीर कृश्नो - राधा की
निगाह में कई अफ़साने नल - दमन के मिले

हवासे - ख़मसा[2] पुकार उट्ठे यकज़बाँ हो कर
कई सुबूत तेरी ख़ूबी - ए - बदन के मिले

निसारे - कजकुलही शोख़ी - ए - बहारे - चमन
गुर इस अदा से शगूफ़ों को बाँकपन के मिले

हयात वो निगहे - शर्मगीं जिसे बाँटे
वही शराब जो तेरी मिज़ह से छन के मिले

ख़ुदा गवाह कि हर - दौरे - ज़िन्दगी में फ़िराक़
नये पयामे - गुनह मुझ को अहरमन के मिले

● ४० इस सुकूते फ़िज़ा में खो जाएँ
आसमानों के राज़ हो जाएँ

हाल सब का जुदा - जुदा ही सही
किस पॅ हँस जाएँ किस पॅ रो जाएँ

राह में आने वाली नस्लों के
ख़ैर काँटे तो हम न बो जाएँ

आओ इस तंग - हाए दुनिया की
वुसअ़ते - बेकराँ में खो जाएँ

ज़िन्दगी क्या है आज इसे ऐ दोस्त
सोच लें और उदास हो जाएँ

रात आयी फ़िराक़ दोस्त नहीं
किस से कहिए कि आओ सो जाएँ

---

१. संदिग्ध । २. पाँचों इन्द्रियाँ ।

● ४१ उमीदे-मर्ग कब तक
ज़िन्दगी का दर्दे-सर कब तक
यें माना सब्र करते हैं महब्बत में
मगर कब तक

दयारे दोस्त हद होती है
यूँ भी दिल बहलने की
न याद आयें ग़रीबों को तेरे दीवारो-दर कब तक

यें तदबीरें भी तक़दीरें-
महब्बत बन नहीं सकतीं
किसी को हिज्र में भूले रहेंगे हम मगर कब तक

इनायत[1] की करम की लुत्फ़ की
आख़िर कोई हद है
कोई करता रहेगा चारा-ए-ज़ख्मे-जिगर[2] कब तक

किसी का हुस्न रुसवा
हो गया पर्दे ही पर्दे में
न लाये रंग आख़िरकार तासीरे-
नज़र कब तक

● ४२ उस ज़ुल्फ़ की याद जब आने लगी
इक नागन-सी लहराने लगी

जब ज़िक्र मेरा महफ़िल में छिड़ा क्यों आँख तेरी शरमाने लगी
क्या मौजे-सबा थी मेरी नज़र क्यों ज़ुल्फ़ तेरी बलखाने लगी
महफ़िल में तेरी एक-एक अदा कुछ साग़र-सी छलकाने लगी
या रब यें चल गयी कैसी हवा क्यों दिल की कली मुरझाने लगी
शामे-वादा कुछ रात गये तारों को तेरी याद आने लगी
साज़ों ने आँखें झपकायीं नग़मों को मेरे नींद आने लगी
जब राहे-ज़िन्दगी काट चुके हर मंज़िल की याद आने लगी

---

१. कृपा। २. जिगर के घाव का उपचार।

क्या उन ज़ुल्फ़ों को देख लिया क्यों मौजे - सबा थर्राने लगी
तारे टूटे या आँख कोई अश्कों के गुहर[1] बरसाने लगी
तहज़ीब उड़ी है धुआँ बन कर सदियों की सई[2] ठिकाने लगी
कूचा - कूचा रफ़्ता - रफ़्ता वो चाल क़यामत ढाने लगी
क्या बात हुई ये आँख तेरी क्यों लाखों क़समें खाने लगी
अब मेरी निगाहे - शौक़ तेरे रुखसारों के फूल खिलाने लगी
फिर रात गये बज़्मे - अन्जुम रूदाद[3] तेरी दोहराने लगी
फिर याद तेरी हर सीने के गुलज़ारों को महकाने लगी
बेगोरो - कफ़न जंगल में ये लाश दीवाने की खाक उड़ाने लगी
वो सुब्ह की देवो ज़ेरे शफ़क़ घूँघट - सी ज़रा सरकाने लगी

उस वक़्त फ़िराक़ हुई यें ग़ज़ल
जब तारों को नींद आने लगी

● ४३ ऐसी बेखुदी यारो कब तक आपे में आओगे
या मेरे नग़मे सुन-सुन कर तुम रोते ही जाओगे
तर्क़-महब्बत के धोके में खुद को तुम समझाओगे
कब तक यारो सच्चे दिल से झूठी क़स्में खाओगे

जाने कब से सुना रहा हूँ मह्‌रो-मह्‌ो-अंजुम से कहो
मेरी कहानी लम्बी है सुनते-सुनते सो जाओगे
सीने से लगा रक्खा था ऐ रंगारंग गुलो तुम को
ये मुझ को मालूम न था तुम दाग़े-जिगर बन जाओगे
जब से गये हो रहती दुनिया है इक भूली-बिसरी याद
मैं ने कभी ये सोचा नहीं था तुम इतना याद आओगे
मेरी बन्द आँखों पें न जाओ, जब चाहो तुम देख आओ
जागतों को सोता पाओगे मुझ को जागता पाओगे

---

१. मोती। २. प्रयत्न। ३. कहानी।

वेकस इनसानों प मज़ालिम[1] दौलतो-सरवत[2] की ख़ातिर
ऐसा कर के ख़ाकम-ब-दहन[3] क्या यारो ख़ुदा हो जाओगे

शोरे-जहाँ से रुख़सत ले कर सुन लो मेरे नग़मों को
ख़ामोशी के दिल की धड़कनें इन में कुछ सुन पाओगे

बक़्फ़े-मातम होने वालो ये भी कभी सोचा है कि जब
तुम अपने ही काम न आये फिर किस के काम आओगे

अफ़साना-गोयाने-जहाँ से कह दो तुम इस ग़मे-दुनिया का
अफ़साना कहते-कहते तुम अफ़साना बन जाओगे

राहे-ज़िन्दगी में कोई आख़िर तक साथ नहीं देता
दिल का साथ इस राहगुज़र में छोड़ते हो पछताओगे

दूर से जिस दिन मेरी ग़ज़ल की तान पड़ेगी कानों में
हँसती आँखों में भी उस दिन तुम आँसू भर लाओगे

क्यों छेड़-छेड़ के पूछते हो रूदाद मेरी उफ़ताद[4] मेरी
मैं कह-कह के पछताऊँगा तुम सुन-सुन के पछताओगे

दुनिया-दुनिया आलम-आलम जिस दिन के अफ़साने हैं
उसे गये मुद्दत गुज़री तुम कहाँ उसे अब पाओगे

उस ग़मख़ाने से जब गुज़रोगे जिस को मेरा घर कहते थे
सहरा-सहरा वहशत होगी दरिया-दरिया रो जाओगे
हुस्ने-खताबत[5] के मैं सदक़े नुक्ता-संजियों[6] के क़ुरबान
सब कुछ यूँ तो बताते हो मुझ को एक बात बताओगे

(क़िता-बन्द)

शरहे-ज़िन्दगी करने वालो तुम को चुप लग जायेगी
मेरे सवाल पर कुछ दिल ही दिल सोच-सोच रह जाओगे।

ऐ अर्शे-बरीं के फ़रिश्तो तुम दुनिया में आने का नाम न लो
दुनिया में बहुत दुख देखोगे दुनिया में बहुत दुख पाओगे

आज इलाहाबाद है सूना शाइर के उठ जाने से
सदियों-सदियों ढूँढ़ोगे लेकिन कहाँ फ़िराक़ को पाओगे

---

१. अत्याचार। २. धन व वैभव। ३. मुँह में ख़ाक (कोई अशुभ बात करने के पहले कहते हैं)। ४. मुसीबत। ५. सुन्दर सम्बोधन। ६. बारीकियाँ समझाने वालों।

● ४४ एक शबे-ग़म वो भी थी जिस में जी भर आये तो अश्क बहायें
एक शबे-ग़म ये भी है जिस में ऐ दिल रो-रोके सो जायें

अलग-अलग बहती रहती है हर इनसान की जीवनधारा
देख मिलें कब आज के बिछड़े ले लूँ बढ़ के तेरी बलायें

अपने दिल से ग़ाफ़िल रहना अहले-इश्क़ का काम नहीं
हुस्न भी है जिसकी परछाईं आज वो मन की जोत जगायें

जिस्मे-नाज़नीं में सर-ता-पा नर्म लवें लहरायी हुई-सी
तेरे आते ही बज़्मे—नाज़ में जैसे कई शम्एँ जल जायें

लफ़्ज़ों में चेहरे नज़र आयेंगे चश्मे-बीना की है शर्त
कई ज़ावियों से खिलक़त[1] को शेर मेरे आईना दिखायें

मुझ को गुनाहो-सवाब से मतलब लेकिन इश्क़ में अक्सर आये
वो लम्हे खुद मेरी हस्ती जैसे मुझे देती हो दुआयें

बातें उस की याद आती हैं, लेकिन हम पर ये नहीं खुलता
किन बातों पर अश्क बहायें किन बातों से जी बहलायें

अहले-मसाफ़त[2] एक रात का ये भी साथ ग़नीमत है
कूच करो तो सदा दे देना हम न कहीं सोते रह जायें

होश में कैसे रह सकता हूँ आखिर शाइरे-फ़ितरत हूँ
सुब्ह के सतरंगे झुरमुट से जब वो उँगलियाँ मुझे बुलायें

एक ग़ज़ाले-रमखुर्दा[3] का मुँह फेरे ऐसे में गुज़रना
जब महकी हुई ठंडी हवाएँ दिन डूबे आँखें झपकायें

देंगे सुबूते-आलीज़र्फ़ी हम मयकश सरे-मयखाना तक
साक़ी-ए चश्मे सियह की बातें ज़हर भी हों तो हम पी जायें

रात चली है जोगन हो कर बाल सँवारे लट छिटकाये
छिपे फ़िराक़ गगन पर तारे दीप बुझे हम भी सो जायें

---

१. सृष्टि। २. सफ़र के साथी। ३. भागा हुआ हिरन।

● ४५ हमनवा कोई नहीं हैं वो चमन मुझ को दिया
हमवतन बात न समझें वो वतन मुझ को दिया

ऐ जुनूँ आज उन आँखों की दिलाकर मुझे याद
तू ने सौ ख़ित्ता-ए-आहू-ए-ख़ुतन मुझ को दिया

मज़्दा[1]-ए-कौसरो-तसनीम दिया औरों को
शुक्र - सदशुक्र ग़मे - गंगो - जमन मुझ को दिया

ढक लिये तारों भरी रात ने हस्ती के उयूब[2]
आँसुओं ने शबे - ग़ुर्बत में कफ़न मुझ को दिया

पर फ़रिश्तों को दिये तू ने तो क्या ग़म इस का
यही क्या कम है कि इनसाँ का चलन मुझ को दिया

अर्ज़े - जन्नत[3] के भी बस में नहीं जिस का देना
हिन्द की ख़ाक ने वो सोज़े-वतन मुझ को दिया

वहदते - आशिक़ो - माशूक़ की तसवीर हूँ मैं
नल का ईसार तो एख़लासे-दमन मुझ को दिया

क़दे - राना की क़सम नर्म सवाहृत की क़सम
इश्क़ ने क्या चमने - सर्वो - समन मुझ को दिया

मिल गया तुझ को जमाले-रुख़े-रंगीं का चमन
दिले - सोज़ाँ का ये तपता हुआ बन मुझ को दिया

तेरे वत्लान[4] थे लाये जो मुझे हक़ की तरफ़
तू ने ईमान मेरा शैख़े - ज़मन मुझ को दिया

मेरे दिल से मेरा हर शेर कह उट्ठा तू ने
अशवाज़ारे - निगहे - सामरी - फ़न मुझ को दिया

नार-ए-हक़ ने किया मरतबए - इश्क़ बलन्द
मनसबे - जल्वागहे - दारो - रसन मुझ को दिया

दस्ते-क़ुदरत ने बस इक पैकरे-ख़ाकी जिस में
सहरे - नौ की थी ख़ाबीदा किरन मुझ को दिया

१. ख़ुशख़बरी। २. बुराइयाँ। ३. स्वर्ग की धरती। ४. झूठ।

ख़त्म है मुझ पॅ ग़ज़लगोई-ए-दौरे-हाज़िर
देने वाले ने वो अन्दाज़े - सुख़न मुझ को दिया

शाइरे-अस्र की तक़दीर न कुछ पूछ फ़िराक़
जो कहीं का भी न रक्खेगा वो फ़न मुझ को दिया

● ४६ यँ माना ज़िन्दगी है चार दिन की
बहुत होते हैं यारो चार दिन भी

ख़ुदा को पा गया वायज़ मगर है
ज़रूरत आदमी को आदमी की

बसा-औक़ात[1] दिल से कह गयी है
बहुत कुछ वो निगाहे-मुख़्तसर भी

मिला हूँ मुस्कुरा कर उस से हर बार
मगर आँखों में भी थी कुछ नमी-सी

महब्बत में करें क्या हाल दिल का
ख़ुशी ही काम आती है न ग़म ही

भरी महफ़िल में हर इक से बचा कर
तेरी आँखों ने मुझ से बात कर ली

लड़कपन की अदा है जानलेवा
ग़ज़ब ये छोकरी है हाथ-भर की

है कितनी शोख़, तेज़ अय्यामे-गुल[2] पर
चमन में मुस्कुराहट हर कली की

रक़ीबे-ग़मज़दा[3] अब सब्र कर ले
कभी इस से मेरी भी दोस्ती थी

---

१. कभी-कभी। २. बहार के दिन। ३. दुखी प्रतिद्वन्दी।

● ४७ साक़िया गंगो-जमन अपने हैं कौसर अपना
जिस को कहते हैं दो-आलम वो है मज़हर अपना

देखते - देखते इनसान बदल जाता है
था किसी अह्द में एक शोख़ सितमगर अपना

मुफ़्त भी बिक के तेरे हाथ न घाटे में रहे
कोई करता नहीं नुक़सान सरासर अपना

सोहबतें मेरी तेरी फ़ितरते सानी बन जायें
क्या करूँ मैं कि बना लूँ तुझे ख़ूगर[1] अपना

इश्क़ को ज़ुल्फ़ के अफ़ई[2] ने जहाँ काटा था
लब ने मारा है वहीं फूँक के मन्तर अपना

वक़्त-बे-वक़्त न आ नासेहे-नादाँ[3] मेरे पास
अपने घर को तो समझने दे मुझे घर अपना

मेरा अख़लाक़ नहीं ख़ौफ़े-ख़ुदा का ममनून
है किसी का जो मुझे डर तो वो है डर अपना

छोड़ दें सब मुझे ऐसी तो कोई बात नहीं
बेकसी अपनी ग़म अपना दिले-मुज़तर अपना

अब ज़माने की हवा उन को जहाँ ले जाये
कश्तियाँ आज उठाने को हैं लंगर अपना

सज के निकली है महे-नौ से ये तारों भरी रात
आप भी ज़ेरे-कमर लीजिए ख़ंजर अपना

रिन्द क्या तुझ को रियाकार कहेंगे ऐ शेख़ !
हाल हर शख़्स को मालूम है बेहतर अपना

याद कर लेते हैं एक राँद-ए-दरगाह[4] को लोग
ज़िक्र रहता है किसी बज़्म में अकसर अपना

बुत-तराशी तेरी हर बात है ऐ शैख़े-हरम
देख काबा भी तो रखता है एक आज़र अपना

---

१. अभ्यस्त। २. नाग। ३. नादान उपदेशक। ४. दरगाह से निकाला हुआ।

कुछ हुआ इस दिले-ग़मगीं को तो हम रो लेंगे
कर न ऐ ज़ुल्फ़े-दोता हाल तू अबतर अपना

काट दी उम्र परस्तारिए-गुलशन में फ़िराक़
न हुआ पर न हुआ एक गुले-तर अपना

● ४८

सर में सौदा भी नहीं
दिल में तमन्ना भी नहीं
लेकिन इस तर्के-महब्बत का
भरोसा भी नहीं

दिल की गिनती न यगानों[1] में न बेगानों में
लेकिन उस जलवागहे-नाज़ से उठता भी नहीं

शिकवा-ए-जौर करे क्या कोई उस शोख़ से जो
साफ़ क़ायल भी नहीं, साफ़ मुकरता भी नहीं

मेहरबानी को महब्बत नहीं कहते ऐ दोस्त
आह अब मुझ से तेरी रंजिशे-बेजा भी नहीं

एक मुद्दत से तेरी याद भी आयी न हमें
और हम भूल गये हों तुझे ऐसा भी नहीं

आज ग़फ़लत भी है उन आँखों में पहले से सिवा
आज ही ख़ातिरे-बीमार शकेबा[2] भी नहीं

बात ये है कि सुकूने-दिले-वहशी का मुक़ाम
कुन्जे-ज़िन्दाँ[3] भी नहीं वुसअतें-सहरा[4] भी नहीं

'अरे सैयाद हमीं गुल हैं हमीं बुलबुल हैं'
तू ने कुछ आह सुना भी नहीं देखा भी नहीं

आह ये मजमा-ए-अहबाब
ये बज़्मे - ख़ामोश
आज महफ़िल में फ़िराक़े-
सुख़न - आरा भी नहीं

---

१. अपनों। २. सन्तोष करने वाला। ३. कैदख़ाने की तनहाई। ४. बन की विशालता।

● ४९ सैय्यारों[1] की तक़दीर यहीं जाग रही है
सोते हैं न अफ़लाक ज़मीं जाग रही है

करवट-सी शबे-माह में
लेती है ये गंगा
या हुस्न की बल खायी जबीं
जाग रही है

हैं ख्वाब में उश्शाक़[2] मगर
याद किसी की
या दिल में है या दिल के क़रीं
जाग रही है

एक आलमे-नैरंग है
दुनिया-ए-महब्बत
सोती है कहीं और कहीं
जाग रही है

ये रात अँधेरी है मगर
ऐ ग़मे-फ़र्दा
सीनों में अभी शम्ए-यक़ीं[3]
जाग रही है

सोती है जहाँ इश्क़ की
तक़दीर अज़ल से
वो नर्गिसे-बीमार वहीं
जाग रही है

ये निखरी हुई रात फ़िराक़ आँख तो खोलो
सोता हुआ संसार ज़मीं जाग रही है

---

१. नक्षत्रों। २. प्रेमीगण। ३. विश्वास का दीपक।

● ५० सायक़ा[1] - सायक़ा हुस्ने - ख़रामाँ
ज़लज़ला - सामाँ[2] फ़ितना - ए - दौराँ
हुस्ने - गुलिस्ताँ हैराँ - हैराँ
ग़ुंचा - ग़ुंचा सर - व - गरेवाँ

ज़ुल्मते - दौराँ[3] वज़्मे - चराग़ाँ वादापरस्ताँ - वादापरस्ताँ
जाना हिजावे - नाज़ पें नादाँ वहशत - वहशत दामाँ - दामाँ
रंगे - परीदा[4] वू - ए - परीशाँ देखा - देखा हुस्ने - गुलिस्ताँ
सब की हालत एक हैं नादाँ कौन है ग़मग़ीं कौन है शादाँ
शाकी - ए - जोश[5] वहारे-गुलिस्ताँ तंगी - ए - दामाँ वुसअते - दामाँ
क़ुर्वे - हुस्न है वहशत - सामाँ होश के पर जलते हैं नादाँ
शोला-ओ-शवनम हुस्ने-गुलिस्ताँ पुरनम - पुरनम सोज़ाँ - सोज़ाँ
दिल में उठा के रख ले गुलिस्ताँ कर ले इलाजे - तंगी - ए - दामाँ
वख़्ते - सियह[6] गेसू - ए - परेशाँ ये भी शविस्ताँ वो भी शविस्ताँ
गेसू - ए - मुश्कीं[7] दश्ते - ग़ज़ालाँ नर्गिसे - जादू है कि परिस्ताँ
वेख़बरी के सब हैं उनवाँ कौन है गिरयाँ[8] कौन है ख़न्दाँ[9]
नज़रीये हैं और भी नादाँ उस की महव्वत दर्द न दर्मां[10]
हुस्न हुआ चालाके - ज़माना इश्क़ है अब तक नादाँ - नादाँ
उस का पाना है वो करिश्मा सोच तो मुश्किल देख तो आसाँ
वेदारी है अपने सहारे नींद का झोंका गर्दिशे - दौराँ
धुवाँ - धुवाँ - सा गुंवदे - मीना[11] मौजे - सहबा शोला - ए - लर्ज़ां[12]
किस के पाँव की चाप है दुनिया कौन है सुव्हे - अज़ल से ख़रामाँ
छोड़ ख़ुदा की मदद का सहारा इस से सिवा है हिम्मते - मरदाँ
जाने - वजूदो - राज़े - अदम है हुस्न नुमायाँ इशवा - ए - पिनहाँ
वादाकशों को फ़िक्र है जिस की वादा न साग़र वर्क़ न वाराँ[13]

---

१. बिजली। २. उथल-पुथल मचा देने वाला। ३. ज़माने का अँधेरा। ४. उड़ा हुआ रंग। ५. जोश को शिकायत करने वाला। ६. दुर्भाग्य। ७. सुगन्धित केश। ८. रोता हुआ। ९. हँसता हुआ। १०. चिकित्सा। ११. नीला आकाश। १२. काँपती हुई अग्नि-ज्वाला। १३. वर्षा।

दोनों भरी दुनिया हैं लेकिन तनहा - तनहा बाग़ो - बयावाँ
टकरायें न कहीं सय्यारे तेज़ बहुत हैं गर्दिशे - दौराँ[1]
कमनिगही भी सदक़े होगी देख तो मेरा शौक़े - फ़रावाँ
थमी - थमी - सी सुब्हे - क़यामत रुकी - रुकी - सी गर्दिशे - दौराँ[1]
दोनों गर्दो - गुबारे - मंज़िल सुब्हे - वतन या शामे - ग़रीबाँ
रहती दुनिया गूँज उठी है बोल उठा है शहूरे - ख़मोशाँ
जैसे शफ़क़ हो शबनम - आगीं इक आलम है हुस्ने - पशेमाँ[2]
आँच क़फ़स वालों तक आयी अब के बहुत है शोरे - बहाराँ
किस का ख़राम पयामे - जुनूँ है किस का सुकूँ है सिलसिला-जुम्बाँ
काविशे-दोज़ख़ो-ख़ुल्द[3] अबस है पहले आदमी हो ले इन्साँ
चढ़ती चली है इश्क़ की क़ीमत जिन्से - हुस्न है अरज़ाँ - अरज़ाँ[4]
इश्क़ की सूरत याद रहेगी कुछ नमदीदा[5] कुछ ग़मसामाँ
दाग़े - महब्बत राज़े - महब्बत कम - कम पैदा कम - कम पिनहाँ
तू ने किस वादी से पुकारा चौंक उठी है ख़ाके - शहीदाँ
ये भी फ़साना वो भी कहानी क्या शबे-वस्ल और क्या शबे-हिज्राँ
दुनिया को दुनिया करना है ये मनसूबे साज़ न सामाँ
यूँ करते हैं भाग के पीछा इश्क़ के दर पें हुस्ने - गुरेज़ाँ
बात उस शोख़ से बन जाने की कोई न सूरत कोई न उनवाँ
पत्तो - पत्ती बूटा - बूटा आईना - सामाँ आईना - सामाँ
दिल की खटक है दिल की ख़लिश है नावक - नावक पैकाँ - पैकाँ
वहशत की परछाइं दोनों शामे - बयावाँ सुब्हे - गुलिस्ताँ
ज़र्रा - ज़र्रा तारा - तारा शशदर - शशदर हैराँ - हैराँ
जुज़्बे - दिल बेहिस है अब तो हसरत - हसरत अरमाँ - अरमाँ
धुँधला - धुँधला रौशन - रौशन आलम - आलम आलमे - इमकाँ
तुझ से मिलती थी कोई सूरत पैदा - पैदा पिन्हाँ - पिन्हाँ

---

१. ज़माने का चक्कर। २. लज्जित सौन्दर्य। ३. नरक व स्वर्ग की चेष्टा। ४. सस्ता। ५. भीगी आँखें लिये।

आये गुनहगाराने - महव्वत नादिम - नादिम[१] नाजाँ - नाजाँ
ढूँढ़ ले मुझ को दुनिया-दुनिया सहरा - सहरा ज़िन्दाँ - ज़िन्दाँ[२]
वादल - वादल विजली-विजली वादा - गुसाराँ[3] वादा - गुसाराँ
आग लगा दे हश्र उठा दे नारा-ए-मस्ताँ नारा-ए-मस्ताँ
इश्क़ को देखा इश्क़ को पाया ग़मगीं - ग़मगीं शादाँ - शादाँ
तू ने भरम ग़मे-इश्क़ के खोले ऐ ग़मे - दौराँ ऐ ग़मे - दौराँ
हुस्नो - इश्क़ से यकसाँ वहशत ये भी गरेबाँ वो भी गरेबाँ
ज़ुल्मतो-नूर[४] है इश्क़ की हस्ती तीरा - तीरा[५] तावाँ - तावाँ[६]

दोज़ख़ के पिघले हुए शोले
चश्मा - ए - हैवाँ चश्मा - ए - हैवाँ
उम्र फ़िराक़ ने यूँ ही बसर की
कुछ ग़मे - जानाँ कुछ ग़मे - दौराँ

● ५१ सीने से तुझ को लगाकर रक्खा अपना खून पिलाया था
दर्दे - महव्वत दिल ने तुझ को किन जतनों से पाला था

राहे-ज़िन्दगी काट रहा था यक्का-ओ-तनहा[७] मैं लेकिन
खामोशी ने वादी-वादी अक्सर तुझ को पुकारा था

हम तो दोनों मिलके ज़िन्दगी कुछ ख्वाबों से सजा लेते
तुम भी कहीं ऐसा ही सोचते अपने दिल में तो क्या था

ऐसे में क्योंकर खुद को सँभाले एक नहीं तो हज़ार नहीं
अब तक तो झूटे वादों का ऐ दिले-ज़ार सहारा था

सर्द पड़े बाज़ारे - हुस्न को अब तो एक ज़माना हुआ
याद नहीं कि मताए - दिल[८] को किस के हाथों बेचा था

---

१. लज्जित। २. क़ैद। ३. शराबी। ४. अँधेरा-उजाला। ५. अँधेरा-अँधेरा। ६. रौशन-रौशन। ७. बिलकुल अकेले। ८. हृदय की पूँजी।

इश्क़ की खुद्दारी क्या कहिए टोका था दुनिया भर ने
जीते-जी मर जाना होगा सब लोगों का कहना था

फिर भी हुस्नो-इश्क़ की दुनिया दे गयी क्या कुछ गो ऐ दिल
अफ़साना था जो भी सुना था ख्वाब था जो कुछ देखा था

आलमे-राज़ के कोहे-क़ाफ़[1] में शायद जाकर डूब गया
दाग़े - दिले - सोज़ाँ[2] का सूरज ग़म के उफ़ुक़ से उभरा था

बड़े-बड़े सावन्त - सूरमा सब कतरा के निकलते थे
उस कूचे में क़दम रखते ही मेरा माथा ठनका था

ठहरे हुए पानी में जैसे नूर का तूफ़ाँ आ जाये
आइने के सामने उस ने कल जब अपना घूँघट उलटा था

रुकी - रुकी - सी उस की ख़फ़गी[3] अंगारे बरसाने लगी
ले लिया मेरा नाम किसी ने देर थी इतनी फिर क्या था

आलमे-हिज्र को कौन सँभाले हिल गयी थी बुनियादे-हयात
हाय रे हालते - दर्दे - जिगर भी गिरते - पड़ते उट्ठा था

क़ौंदें लपक जाते थे बदन के चाहें तो यूँ भी कह लें
पाँव से सर तक उस पैकर से जाम पे जाम छलकता था

हाय जवानी वाय जवानी नींद वो कितनी गहरी थी
इक करवट लेने पाये थे आँख खुली तो सवेरा था

देर से हाले-दिल है दिगरगूँ आज तो वो शायद ही बचे
अपने-पराये जमा हैं इस दम तुम भी जो होते अच्छा था

उन को मुबारक जिन लोगों को सच्चे दोस्त और यार मिले
मेरे लिए तो एक वही था सच्चा था या झूठा था

आने वाली नस्लें तुम पर रश्क करेंगी हमअस्रो[4]
जब ये ध्यान आयेगा उन को तुम ने फ़िराक़ को देखा था

---

१. काकेशिया का एक पहाड़ जो अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। २. जलते हुए दिल के दाग़। ३. क्रोध। ४. समकालीनो।

● ५२

सुकूते-शाम मिटाओ बहुत अँधेरा है
सुख़न की शम्अ जलाओ बहुत अँधेरा है

चमक उठेंगी सियह-बख़्तियाँ ज़माने की
नवा-ए-दर्द सुनाओ बहुत अँधेरा है

हर इक चराग़ से हर तीरगी नहीं मिटती
चराग़े-अश्क जलाओ बहुत अँधेरा है

दयारे-ग़म में दिले-बेक़रार छूट गया
सँभल के ढूँढ़ने जाओ बहुत अँधेरा है

ये रात वो है कि सूझे जहाँ न हाथ को हाथ
ख़यालो दूर न जाओ बहुत अँधेरा है

लटों को चेहरे पँ डाले वो सो रहा है कहीं
ज़िया-ए-रुख़[1] को चुराओ बहुत अँधेरा है

पसे-गुनाह[2] जो ठहरे थे चश्मे-आदम में
उन आँसुओं को बहाओ बहुत अँधेरा है

ये तीरगी-ए-फ़ज़ा-ए-जहाँ महब्बत के
नसीबे-ख़ुफ़ता[3] जगाओ बहुत अँधेरा है

फ़राज़े-दिल[4] को सदा दो कोई बतर्ज़े-कलीम
चराग़े-नूर जलाओ बहुत अँधेरा है

दिलों के सोज़े-निहाँ से नये उफ़ुक़ के क़रीं
इक आफ़ताब बनाओ बहुत अँधेरा है

हवा-ए-नीमशबी हो कि चादरे-अंजुम
नक़ाब रुख़ से उठाओ बहुत अँधेरा है

बिसाते-अर्ज़ो-समा[5] के तो बुझ चुके हैं कँवल
चराग़े-दिल को जलाओ बहुत अँधेरा है

शबे-सियाह में गुम हो गयी है राहे-हयात
क़दम सँभल के उठाओ बहुत अँधेरा है

गुज़श्ता-अह्द[6] की यादों को फिर करो ताज़ा
बुझे चराग़ जलाओ बहुत अँधेरा है

थी इक उचटती हुई नींद ज़िन्दगी उस की
फ़िराक़ को न जगाओ बहुत अँधेरा है

---

१. चेहरे की रोशनी। २. पाप करने के बाद। ३. सोया हुआ भाग्य। ४. दिल की उठान। ५. ज़मीन-आसमान की चादर। ६. पिछले युग।

● ५३ गहराई भी थाह न पाये दुनिया को हैरानी है
कुछ न खुला ए बह्‌रे-महब्बत तुझ में कितना पानी है

मेरे पास धरा ही क्या था दर्द भरी कुछ सौग़ातें
जिन के दम से रुख़े-हस्ती पर
देखो क्या तावानी है

मुतरिब[1] तू ने खींच के रख दी क़ामते-राना की[2] तस्वीर
खिंचती हुई अलाप किसी की
उठती हुई जवानी है

मजनूँ तेरी मौत को हम सब दिल से दुआएँ देते हैं
जिसकी बदौलत दश्ते-नज्द की
वीरानी वीरानी है

मेरी नवाएँ सुन के सितारे सुब्हे-अज़ल से वज्द में हैं
कितनी नयी आवाज़ है मेरी
फिर भी कितनी पुरानी है

पहले पहल जब आँखें खोलीं नौज़ाईदा[3] बच्चे ने
ऐसा लगा कि यह दुनिया तो
कुछ जानी पहचानी है

कितने निज़ामे-शम्सी यारो दरहम-बरहम[4] हो के रहे
मेरे दिवानापन पर तुम को
क्यों इतनी हैरानी है

एक आदमी इश्क़ नाम का फिरता है गलियों - गलियों
देखो उस से बचे रहना
वह शख़्स बड़ा नुक़सानी है

तुझ से ए दरिया-ए-ज़िन्दगी मालिके-बहरो-बर समझे
कैसे-कैसे डूब गये गो
घुटनों-घुटनों पानी है

१. गायक। २. महबूब के शरीर की। ३. नवजात। ४. उलट-पलट।

एक था मजनूँ आशिक़े-लैला वीराने में मौत हुई
और अगर तफ़सील से पूछो
ये क़िस्सा तूलानी है

एक इश्क़ के आ जाने से क्या-क्या ख़द्शे[1] पैदा हैं
हमदम उस की बज़्मे-नाज़ में
आज बड़ी निगरानी है

बूदो-बाश क्या पूछो लोगो हम उस शहर से आये हैं
नादानी दानाई जहाँ है
दानाई नादानी है

वो भी न समझे बात हमारी हम भी न समझे उस की बात
या तो फ़िराक़ हमीं दीवाने या दुनिया दीवानी है

● ५४ हम से फ़िराक़ अकसर छुप-छुप कर पहरों-पहरों रोओ हो
वो भी कोई हमीं जैसा है क्या तुम उस में देखो हो

जिन को इतना याद करो हो चलते-फिरते साये थे
उन को मिटे तो मुद्दत गुज़री नामो-निशाँ क्या पूछो हो

जाने भी दो नाम किसी का आ गया बातों-बातों में
ऐसी भी क्या चुप लग जाना कुछ तो कहो क्या सोचो हो

पहरों-पहरों तक ये दुनिया भूला सपना बन जाये है
मैं तो सरासर खो जाऊँ हूँ याद इतना क्यों आओ हो

क्या ग़मे-दौराँ की परछाइँ तुम पर भी पड़ जाये है
क्या याद आ जाये है यकायक क्यों उदास हो जाओ हो

झूठी शिकायत भी जो करूँ हूँ पलक दीप जल जाये हैं
तुम को छेड़े भी क्या तुम तो हँसी-हँसी में रो दो हो

ग़म से ख़मीरे-इश्क़ उठा है हुस्न को देवें क्या इल्ज़ाम[2]
उस के करम पर इतनी उदासी दिलवालो क्या चाहो हो

एक शख़्स के मर जाये से क्या हो जाये है लेकिन
हम जैसे कम होये हैं पैदा पछताओगे देखो हो

---

१. सन्देह। दोष।

इतनी वहशत इतनी वहशत सदक़े अच्छी आँखों के
तुम न हिरन हो मैं न शिकारी दूर इतना क्यों भागो हो

मेरे नग़मे किस के लिए हैं खुद मुझ को मालूम नहीं
कभी न पूछो ये शाइर से तुम किस का गुन गाओ हो

पलकें बन्द अलसायी ज़ुल्फ़ें नर्म सेज पर बिखरी हुई
होटों पर इक मौजे-तवस्सुम[1] सोओ हो या जागो हो

इतने तपाक से मुझ से मिले हो फिर भी ये ग़ैरीयत[2] क्यों
तुम जिसे याद आओ हो बराबर मैं हूँ वही तुम भूलो हो

कभी बना दो हो सपनों को जल्वों से रश्के-गुलज़ार
कभी रंगे-रुख़ बनकर तुम याद आते ही उड़ जाओ हो

गाह[3] तरस जाये हैं आँखें सजल रूप के दर्शन को
गाह नींद बन के रातों को नैन-पटों में आओ हो

इस दुनिया ही में है सुने हैं इक दुनिया-ए-महब्बत भी
हम भी उसी जानिब[4] जावें हैं बोलो तुम भी आओ हो

बहुत दिनों में याद किया है बात बनायें क्या उन से
जीवन-साथी दुख पूछे हैं किस को हमें तुम सौंपो हो

चुपचुप-सी है फ़ज़ा-ए-महब्बत कुछ न कहे है खलवते-राज़
नर्म इशारों से आँखों के बात कहाँ पहुँचाओ हो

अभी उसी का इन्तज़ार था और कितना ऐ अह् ले-वफ़ा
चश्मे-करम जब उठने लगी है तो अब तुम शरमाओ हो

ग़म के साज़ से चंचल उँगलियाँ खेल रही हैं रात गये
जिन का सुकूत, सुकूते-अबद[5] है वे परदे क्यों छेड़ो हो

कुछ तो बताओ रंग-रूप भी तुम उस का ऐ अह् ले-नज़र
तुम तो उस को जब देखो हो देखते ही रह जाओ हो

अकसर गहरी सोच में उन को खोया-खोया पावें हैं
अब है फ़िराक़ का कुछ रोज़ों से जो आलम क्या पूछो हो

---

१. मुसकान की लहर। २. परायापन। ३. कभी। ४. दिशा में। ५. सदैव की शान्ति।

● ५५ साग़रे-सुब्ह्-चकाँ[१] लाओ कि कुछ रात कटे
नूरे-सय्याल[२] को छलकाओ कि कुछ रात कटे
नग़मा-ए-जल्वा-ए रुख़ गाओ कि कुछ रात कटे
शोला-ए-इश्क़ को भड़काओ कि कुछ रात कटे

भूले - बिसरे हुए ग़मह्-ए - हयाते - रफ़्ताँ
तुम भी ऐसे में चले आओ कि कुछ रात कटे
चारसू चर्ख़ पें छिटके हुए तारों की शुआओ
रगे-ज़ुल्मात[३] को उकसाओ कि कुछ रात कटे

ओढ़नी उस की हवाएँ हैं कि तारों भरी रात
किसी घूँघट ही को सरकाओ कि कुछ रात कटे
तुम जुदा होगे तो हो जायेगी ये रात पहाड़
रात की रात ठह्र जाओ कि कुछ रात कटे

आँच से जिन की फ़लक पर दिले-अंजुम है गुदाज़[४]
ग़म के वो साज़ उठा लाओ कि कुछ रात कटे
दौरे-साग़र को बनाये चलो दौरे-अफ़लाक
ग़मे-आफ़ाक़[५] को बहलाओ कि कुछ रात कटे

जैसे तारों की चमक बहती हुई गंगा में
अह्ले-ग़म को युँ ही याद आओ कि कुछ रात कटे
इस ज़माने में कहाँ है कोई रूदादे - नशात
ग़म के अफ़साने कहे जाओ कि कुछ रात कटे

उस की पलकों से जो रह - रह के छलक जाते थे
उन्हीं अफ़सानों को दोहराओ कि कुछ रात कटे
यादे - अय्याम[६] की पुरवाइयो धीमे - धीमे
'मीर' की कोई ग़ज़ल गाओ कि कुछ रात कटे

दूँ किन अलफ़ाज़ में इस मिस्रा-ए-'मख़दूम' की दाद
'ग़मज़दो तेशों[७] को चमकाओ कि कुछ रात कटे'
आके महफ़िल में फ़िराक़ आज नहीं नग़मा - सरा
जाके उस को भी बुला लाओ कि कुछ रात कटे

---

१. रोशनी (सुबह) टपकाता हुआ प्याला। २. चमकती शराब। ३. अँधेरे की रग। ४. द्रवित। ५. विश्व के दुख। ६. दिनों की यादें। ७. फावड़ों।

● ५६ है अभी महताब बाक़ी और बाक़ी है शराब
और बाक़ी मेरे तेरे दरम्याँ सदहा हिसाब
दिल में यूँ बेदार[1] होते हैं ख़यालाते-ग़ज़ल
आँख मलते जिस तरह उट्ठे कोई मस्ते-शबाब

गेसू-ए-ख़मदार में अशआरे-तर की टंडकें
आतशे-रुख़सार में क़ल्बे-तपाँ का इल्तहाब[2]

काश पढ़ सकता किसी सूरत से तू आयाते-इश्क़
अहले-दिल भी तो है ऐ शैखें-ज़माँ अहले-किताब

चूड़ियाँ बजती हैं दिल में मरहबा बज़्मे-ख़याल
खिलते जाते हैं निगाहों में जबीनों के गुलाब

एक आलम पर नहीं रहती हैं कैफ़ीयाते-इश्क़
गाह रेगिस्ताँ भी दरया गाह दरया भी सराब

कौन रख सकता है इस को साकिनो-जामिद[3] कि ज़ीस्त
इन्क़लाबो-इन्क़लाबो-इन्क़लाबो-इन्क़लाब

ढूँढ़िये क्यों इस्तआरे[4] और तशबीहो[5]-मिसाल
हुस्न तो वो है बतायें जिस को हुस्ने-लाजवाब

हश्त जन्नत की बहारें चन्द पंखड़ियों में बन्द
ग़ुंचा खिलता है तो फ़िरदौसों के खुल जाते हैं बाब[6]

आ रहा है नाज़ से सर्व्वे-चमन वो ख़ुशख़िराम[7]
दोश[8] पर वो गेसू-ए-शबगूँ[9] के मँडलाते सहाब

अज़्मते-तक़दीरे-आदम अहले-मज़हब से न पूछ
जो मशीअत ने न देखे दिल ने वो देखे हैं ख़्वाब

हुस्न वो जो एक कर दे मानी-ए-फ़त्हो-शिकस्त
रह गयी सौ बार झुक-झुक कर निगाहें-कामयाब

ग़ैब[10] की नज़रें बचा के कुछ चुरा ले वक़्त से
फिर न हाथ आयेगा कुछ हर लमहा है पा-दर-रिकाब[11]

---

१. जाग्रत। २. लपट। ३. स्थिर एवं दृढ़। ४. रूपक। ५. उपमा। ६. द्वार-पट। ७. अच्छी चाल वाला। ८. कंधा। ९. रात की तरह केश वाला। १०. परोक्ष। ११. रिकाब में पैर जा रहा।

हर नज़र जलवा है हर जलवा नज़र हैरान हूँ
आज किस बैतुल्हरम[१] में हो गया हूँ बारयाब[२]

बारहा हाँ बारहा मैं ने दमे-फ़िक्रे-सुख़न[३]
छू लिया है उस सुकूँ को जो हो जाने-इज़्तेराब[४]

सर से पा तक हुस्न है साज़े-नुमू[५] राज़े-नुमू
आ रहा है एक कमसिन पर दबे पाँवों शबाब

बज़्मे-फ़ितरत सर-बसर होती है इक बज़्मे-समाअ़
वो सुकूते-नीमशब का नग़मा-ए-चंगो-रबाब

ऐ फ़िराक़ उठती हैं हैरत की निगाहें बाअदब
अपने दिल की खलवतों में हो रहा हूँ बारयाब

● ५७

हो कर अयाँ[६] वो 'ख़ुद को छुपाये-हुए-से हैं
अहले-नज़र ये चोट भी खाये हुए-से हैं

वो तूर हो कि हश्रे-दिल अफ़्सुर्दगाने-इश्क़[७]
हर अन्जुमन में आग
लगाये-हुए-से हैं

सुब्हे-अज़ल को यूँ-ही ज़रा मिल गयी थी आँख
वो आज तक निगाह
चुराये-हुए-से हैं

हम बदगुमाने-इश्क़ तेरी बज़्मे-नाज़ से
जा कर भी तेरे सामने
आये-हुए-से हैं

ये क़ुर्बो-बोद[८] भी हैं सरासर फ़रेबे-हुस्न
वो आके भी फ़िराक़ न आये-हुए-से हैं

॥१९२८॥

---

१. अल्लाह का घर। २. प्रवेश-प्राप्त। ३. काव्य-चिन्तन के समय। ४. व्याकुलता की आत्मा। ५. उत्पत्ति का साज़। ६. प्रकट। ७. प्रेम में डूबे लोग। ८. सामीप्य एवं दूरी।

५८ हाल सुना फ़सानागो लब की फ़ुसूँगरी[1] के भी
क़िस्से सुना उस आँख के जादू-ए-सामरी के भी

काबा-ए-दिल में हैं निशाँ कुछ फ़ने-आज़री[2] के भी
बारगहे-इलाह[3] में जल्वे हैं काफ़िरी के भी

तुर्फ़ा तिलिस्मे-रंगो-बू चेहरे की ताज़गी भी है
कितने अजीब राज़ हैं, ज़ुल्फ़ों की अबतरी के भी

अहले-नज़र है बेपनाह शाने-जमाले-आदमी
गुम हों हवास हूर के होश उड़ें परी के भी

धोके न बन्दगी के खा सजदा-ए-इश्क़ पर न जा
नासिया-ए-नयाज़[4] में जलवे हैं दावरी के भी

हुस्ने-रुख़े-नज़ारासोज़ देख सका न तू जिसे
ढूँढ़ उसी में रंगो-नूर आईना परवरी के भी

तू कि है मुनकिरे-अवाम[5] हैं जो अभी तेरे ग़ुलाम
तेवर उन्हीं में देख आज रोबे-सिकन्दरी के भी

वह्‌रे-हयात से न डर उस से न ढूँढ़ तू सफ़र
तुझ को यही सिखायेगा राज़ शनावरी के भी

पूछ न मुझ से हमनशीं तुर्फ़गी-ए-दिले-ग़मीं
साज़े-सिकन्दरी के भी सोज़े-क़लन्दरी के भी

मिस्ले-फ़क़ीरे-बेनवा फिरते हैं जिन को हम लिये
हाँ उन्हीं झोलियों में हैं राज़ तवंगरी के भी

सर भी झुका चुका है इश्क़ हुस्न के पाये-नाज़ पर
नाज़ उठा चुका है हुस्न इश्क़ की ख़ुदसरी के भी

रात तेरी निगाहे-नाज़ कितने फ़साने कह गयी
ग़मज़ा-ए-काफ़िरी के भी अश्वा-ए-दिलबरी के भी

---

१. जादूगरी। २. आज़र की कला (आज़र प्रसिद्ध पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम के चाचा थे जो मूर्तिकला में निपुण थे)। ३. ईश्वरीय सभा। ४. भक्ति का मस्तक। ५. जनता को न मानने वाला।

शोले उठे ज़मीन के देख करिश्मे ऐ निगाह
उस के ख़रामे-नाज़ के फ़ितना-ए-सरसरी के भी

पढ़ कभी आयते-शफ़क़ क़ल्बो-नज़र का वास्ता
जल्वा-ए-रंगरंग में रंग पयम्बरी के भी

छेड़ दिया ग़ज़ल में आज मैंने वो नग़मा-ए-ज़मीं
उठ गये घूँघट ऐ फ़िराक़ ज़ुहरा-ओ-मुशतरी[1] के भी

● ५९ सज़ा-ए-हुस्न-परस्ती वजा, वजा भी नहीं
कि जुर्मे-इश्क़े-बुताँ हैं बुरा, बुरा भी नहीं

किसी को क्या न मिला ज़िन्दगी में वाय नसीब
हमारे हाथ बस एक दिल रहा, रहा भी नहीं

लिये - दिये भी हैं हम लोग खोये-खोये भी
कि होशे-ग़मज़दगाँ है बजा, बजा भी नहीं

अरे ख़ुदा तो अमीरों का है ख़ुदा वाएज़
जिसे ग़रीबों का कहिए ख़ुदा, ख़ुदा भी नहीं

उधर क़दम भी उठाने दे बद-दिमाग़ी-ए-इश्क़
हम ऐसों पर दरे - जन्नत खुला, खुला भी नहीं

नज़र - फ़रेबी - ए - तहरीर[2] ले उड़ी मुझ को
सिरे से नामा-ए-जानाँ[3] पढ़ा, पढ़ा भी नहीं

तमाम शोख़ी - ए - रफ़तार तेरी राहगुज़र
क़दम का नक़्श कुछ ऐसा उठा, उठा भी नहीं

वो जैसे है ही नहीं इस अदा से सामने है
अगर कहूँ कि वो मुझ से ख़फ़ा, ख़फ़ा भी नहीं

ठहर गये सरे - दुनिया तो बेजगह ठहरे
चलो - चलो कि ये मातम - सरा[4], सरा भी नहीं

---

१. शुक्र व बृहस्पति। २. लिखावट की मोहकता। ३. महबूब का ख़त। ४. शोक मनानें का घर।

अदा, अदा से अदा हो तो हम अदा समझें
नहीं अदा - दर - अदा जो अदा, अदा भी नहीं

हम उस को देख के भी आह किस तरह देखें
नज़ारा - ए - रुख़े - जानाँ हुआ, हुआ भी नहीं

अजब ये दौर है या रब कि खुश - जमालों[1] को
वफ़ा, वफ़ा भी नहीं है, जफ़ा, जफ़ा भी नहीं

भला है कौन, बुरा कौन, इस ज़माने में
बुरा, बुरा भी नहीं है, भला, भला भी नहीं

ये वक़्ते - सुब्ह चमन आँसुओं की दुनिया में
सरश्के - ख़न्दा - ए - गुल में छुपा, छुपा भी नहीं

निगाहे - नाज़ से क्या सुन के दिल उदास हुआ
अगर कहें कि कुछ उस ने कहा, कहा भी नहीं

चमक उसी की तबो - ताबे - हुस्नो - इश्क़ में है
ज़मीं का दर्द कुछ इतना दबा, दबा भी नहीं

ज़माँ - मकाँ का ये परदा हिजाबे - अकबर[2] है
हज़ार बार ये परदा उठा, उठा भी नहीं

तेरी निगाह से दुनिया को इक शिकायत है
बजा - बजा ये शिकायत बजा, बजा भी नहीं

बस इक निगाह की परछाइयाँ बक़ा-ओ-फ़ना[3]
बक़ा, बक़ा भी नहीं है, फना, फ़ना भी नहीं

जिसे मआमिला - ए - हुस्नो - इश्क़ कहते हैं
हज़ार बार ये झगड़ा चुका, चुका भी नहीं

वो आँख कहती है ऐसे का क्या ठिकाना है
फ़िराक़ आदमी तो है भला, भला भी नहीं

---

१. सुन्दर रूप वालों। २. विशाल परदा। ३. रहना और मिटना।

● ६० बहुत पहले से उन क़दमों की आहट जान लेते हैं
तुझे ऐ ज़िन्दगी
हम दूर से पहचान लेते हैं

मेरी नज़रें भी ऐसे काफ़िरों की जानो-ईमाँ हैं
निगाहें मिलते ही जो
जान और ईमान लेते हैं

जिसे कहती है दुनिया कामयाबी बाए-नादानी
उसे किन क़ीमतों पर
कामयाब इनसान लेते हैं

निगाहे बादागूँ[1] यूँ तो तेरी बातों का क्या कहना
तेरी हर बात लेकिन
एहतियातन छान लेते हैं

तबीअत अपनी घबराती है जब सुनसान रातों में
हम ऐसे में तेरी यादों की
चादर तान लेते हैं

खुद अपना फ़ैसला भी इश्क़ में काफ़ी नहीं होता
उसे भी कैसे कर गुज़रें
जो दिल में ठान लेते हैं

हमआहंगी में भी इक चाश्नी है इख़्तलाफ़ों की
मेरी बातें ब-उनवाने-दिगर[2]
वो मान लेते हैं

तेरी मक़बूलियत की वजहे-वाहिद[3] तेरी रम्ज़ीयत[4]
कि उस को मानते ही कब हैं
जिस को जान लेते हैं

अब इस को कुफ़्र मानें या बलन्दी-ए-नज़र जानें
खुदा-ए-दोजहाँ को देके
हमीं इनसान लेते हैं

---

१. शराबी निगाह। २. दूसरे शीर्षक के साथ। ३. एकमात्र कारण। ४. रहस्यमयता।

जिसे सूरत बताते हैं पता देती है सीरत का
अवारत देख कर जिस तरह
मा'नी जान लेते हैं

तुझे घाटा न होने देंगे कारोबारे-उलफ़त में
हम अपने सर तेरा ऐ दोस्त
हर नुक़सान लेते हैं

हमारी हर नज़र तुझ से नयी सौगन्ध खाती है
तो तेरी हर नज़र से हम
नया पैमान लेते हैं

रफ़ीक़े-ज़िन्दगी[1] थी अब अनीसे-वक़्ते-आखिर[2] है
तेरा ऐ मौत हम ये दूसरा
एहसान लेते हैं

ज़माना वारदातें-क़ल्ब सुनने को तरसता है
इसी से तो सर-आँखों पर
मेरा दीवान लेते हैं

फ़िराक़ अक्सर बदलकर भेस मिलता है कोई काफ़िर
कभी हम जान लेते हैं
कभी पहचान लेते हैं

● ६१ 'याद न कर दिले-हज़ीं[3] भूली हुई कहानियाँ'
उठती हुई जवानियाँ हुस्न की शादमानियाँ[4]
उफ़ तेरी पुर्सिशे-करम उफ़ तेरी मेह्रबानियाँ
बढ़ती ही जा रही है देख इश्क़ की बदगुमानियाँ
मौज ठहर सकी कहीं सत्ह पें हो कि तहनशीं
इश्क़ में बेसुकूँ युँ ही कटती हैं ज़िन्दगानियाँ
रंगे-बहारे-ज़िन्दगी खून के आँसुओं से है
इश्क़ की गुलफ़शानियाँ इश्क़ की शादमानियाँ

१. जीवन-साथी। २. अन्तिम समय की मददगार। ३. दुःखी हृदय। ४. खुशियाँ।

ये भी कोई जहान है ये भी कोई निज़ाम है
आह वो दिल जहाँ नहीं इश्क़ की हुक्मरानियाँ

आज फ़ज़ा की खामुशी कुछ उसे फिर सुना गयी
भूली हुई थी इश्क़ को हुस्न की खुशबयानियाँ

उफ़ ये फ़ज़ा उदास-उदास आह ये मौजे-दूदे-शाम[1]
याद-सी आ के रह गयीं दिल को कई कहानियाँ

इश्क़ के हर नशात में रंगे-जराहते-नेहाँ
नश्तरे-नाज़े-हुस्न की मिट न सकीं निशानियाँ

पूछ न किस तरह उड़ा रंगे-सुकूते-सरमदी
इश्क़ की बाज़पुर्स पर हुस्न की बेज़बानियाँ

इस से ज़्यादा और क्या अब कोई नामुराद हो
आज नज़र से गिर चलीं इश्क़ की कामरानियाँ

राज़े-हयात कह गये इश्क़ के कुश्तगाने-ग़म[2]
दर्से-हयात दे गयीं हुस्न की शादमानियाँ

मेरे सुकूते-यास ने रंगे-जहाँ बदल दिया
आहो-फ़ुग़ाँ से कब हुईं इश्क़ की तर्जुमानियाँ

देख ये रंगे-हुस्नो-इश्क़ बाद को रंग लायेगा
कुछ तुझे बदगुमानियाँ कुछ मुझे बदगुमानियाँ

इश्क़ के एतदाल[3] से मिलती हैं सब की सरहदें
अपने हुदूद ही में हैं बह्र की बेकरानियाँ

उमड़ी घटाएँ बिजलियाँ जैसे चमक के रह गयीं
आज तो याद आ गयीं हुस्न की मेह्रबानियाँ

अक्स-सा पड़ के रह गया जैसे तेरी निगाह का
याद-सी आ के रह गयीं भूली हुई कहानियाँ

और ही रंग है फ़िराक़ अब तो शऊरे-इश्क़ का
अब न वो खुशगुमानियाँ अब न वो बदगुमानियाँ

१. शाम के धुँधलके की लहर। २. ग़म के मारे। ३. संतुलन।

● ६२

वन्दगी से कभी नहीं मिलती
इस तरह ज़िन्दगी नहीं मिलती

लेने से ताजो-तख्त मिलता है माँगे से भीक भी नहीं मिलती
गै़वदाँ हैं मगर ख़ुदा को भी नीयते-आदमी नहीं मिलती
है जो इक चीज़ दारे-फ़ानी में वो तो जन्नत में भी नहीं मिलती
रात मिलती है तेरी ज़ुल्फ़ों से पर वो आरास्तगी[1] नहीं मिलती
यूँ तो हर-इक का हुस्न काफ़िर है पर तेरी काफ़िरी नहीं मिलती
बासफ़ा[2] दोस्ती को क्या रोयें बासफ़ा दुशमनी नहीं मिलती
आँख ही आँख हूँ मगर मुझ से नरगिसे-सामरी नहीं मिलती
जब तक ऊँची न हो ज़मीर[3] की लौ आँख की रौशनी नहीं मिलती
सोज़े-ग़म से न हो जो मालामाल दिल को सच्ची ख़ुशी नहीं मिलती
रोने-धोने से हाले-आशिक़ को ज़ुल्फ़ की अवतरी नहीं मिलती
रू-ए-जानाँ कुजा[4] कुजा गुले-ख़ुल्द वो तरो-ताज़गी नहीं मिलती
तुझ में कोई कमी नहीं पाते तुझ में कोई कमी नहीं मिलती
आह वो मुश्कवेज़[5] ज़ुल्फ़े-सियाह जिस की हमसायगी नहीं मिलती
इश्क़े-आज़ुर्दा[6] बादशाहों को तेरी आज़ुर्दगी नहीं मिलती
ज़ुहदो-सौमो-सलातो-तक़वा[7] से इश्क़ की सादगी नहीं मिलती
रंगे - दीवानगी - ए - आलम से मेरी दीवानगी नहीं मिलती
दोस्तो मह्ज़ तब्आ-ए-मौज़ूँ से दौलते-शाइरी नहीं मिलती
है जो उन रसमसाते होठों में आँख को वो नमी नहीं मिलती
निगहे-लुत्फ़ से जो मिलती है हाय वो ज़िन्दगी नहीं मिलती
यूँ तो मिलने को मिल गया है ख़ुदा पर तेरी दोस्ती नहीं मिलती
मेरी आवाज़ में जो मुज़मर[8] है ऐसी शादी-ग़मी नहीं मिलती

बस वो भरपूर ज़िन्दगी है फ़िराक़
जिस में आसूदगी नहीं मिलती

---

१. सजावट। २. सच्ची। ३. अन्तरात्मा। ४. कहाँ। ५. ख़ुशबूदार। ६. प्रेम से दुःखी। ७. परहेज़गारी, रोज़ा-नमाज़ व बुरी बातों से बचने से। ८. निहित।

● ६३ रुकी - रुकी - सी शबे-मर्ग[1] ख़त्म पर आयी
वो पौ फटी वो नयी ज़िन्दगी नज़र आयी

ये मोड़ वो है कि परछाइयाँ भी देंगी न साथ
मुसाफ़िरों से कहो उस की रहगुज़र आयी

फ़ज़ा तबस्सुमे - सुब्हे - बहार[2] थी लेकिन
पहुँच के मंज़िले - जानाँ पें आँख भर आयी

कहीं ज़मानो - मकाँ में है नाम को भी सकूँ
मगर ये बात महब्बत की बात पर आयी

किसी की बज़्मे - तरब में हयात बटती थी
उमीदवारों में कल मौत भी नज़र आयी

कहाँ हर-एक से इनसानियत का बार उठा
कि ये बला भी तेरे आशिक़ों के सर आयी

दिलों में आज तेरी याद मुद्दतों के बाद
ब - चेहरा - ए - मुतबस्सुम[3] ब - चश्मे - तर[4] आयी

नया नहीं है मुझे मर्गे - नागहाँ[5] का पयाम
हज़ार रंग से अपनी मुझे ख़बर आयी

फ़ज़ा को जैसे कोई राग चीरता जाये
तेरी निगाह दिलों में युँही उतर आयी

ज़रा विसाल के बाद आईना तो देख ऐ दोस्त
तेरे जमाल की दोशीज़गी[6] निखर आयी

तेरा ही अक्स सरश्के - ग़मे - ज़माना में था
निगाह में तेरी तसवीर - सी उतर आयी

अजब नहीं कि चमन-दर-चमन बने हर फूल
कली-कली की सबा जाके गोद भर आयी

शबे - फ़िराक़ उठे दिल में और भी कुछ दर्द
कहूँ ये कैसे तेरी याद रात भर आयी

१. मौत की रात। २. बहार की सुब्ह की हँसी। ३. मुस्कुराते चेहरे के साथ। ४. आँसू भरी आँखों के साथ। ५. आकस्मिक मृत्यु। ६. कँवारापन।

६४ वड़ा करम है ये मुझ पर अभी यहाँ से न जाव
बहुत उदास है ये घर अभी यहाँ से न जाव

तुम आ गये तो शबे-ग़म के बुझ गये आँसू
यहाँ न था कोई दिन भर अभी यहाँ से न जाव

धुआँ-धुआँ-सी ये शामे-अलम[1] फ़ज़ाओं के
बुझे-बुझे से ये तेवर अभी यहाँ से न जाव

हमारी आँखों से चुन लो कि फिर किसी दामों
न मिल सकेंगे ये गौहर[2] अभी यहाँ से न जाव

वो आरज़ूएँ जो वावस्ता[3] तुम से हैं उन को
चले हो छोड़ के किस पर अभी यहाँ से न जाव

वफ़ूरे-ग़म[4] से जिन्हें नींद आ गयी थी कभी
वो यादें जाग उठीं सो कर अभी यहाँ से न जाव

वसाओ और वसाओ मुशामे-ग़म[5] को अभी
ये रंगो-बू-ए-गुले-तर अभी यहाँ से न जाव

ये मोजज़ात[6] कहाँ देखने में आते हैं
निसारे-चश्मे-फ़ुसूँगर अभी यहाँ से न जाव

रुके रहो निगहे-नीम-वा से कुछ मैं भी
वना लूँ अपना मुक़द्दर अभी यहाँ से न जाव

तुम्हारे पास ये अन्दाज़ा हो रहा है मुझे
कि मेरा हाल है वेहतर अभी यहाँ से न जाव

अभी तो सोये चराग़ों ने आँख खोली है
अभी तो जागते हैं घर अभी यहाँ से न जाव

वहुत दिनों के पयामे-ख़ुलूसे-वातिन[7] हैं
शिकायतों के ये दफ़्तर अभी यहाँ से न जाव

१. दुःख की शाम। २. मोती। ३. सम्बन्धित। ४. ग़म की अधिकता। ५. ग़म की खुशबू। ६. चमत्कार। ७. आन्तरिक श्रद्धा के सन्देश।

ये वक़्ते-शाम ये दरमान्दगी[1] ये सन्नाटा
ये ज़ुल्मतों के समन्दर अभी यहाँ से न जाव

रुको-रुको कि पड़ी है अभी तो रात तमाम
बहुत उदास हैं मंज़र अभी यहाँ से न जाव

पसे-ग़ुरूब[2] ही ऐ दोस्त मेरी तनहाई
लगाने आयेगी बिस्तर अभी यहाँ से न जाव

कहाँ वो शह्रे-निगाराँ[3] कहाँ ये दारे-मेहन[4]
अब इतनी दूर से आ कर अभी यहाँ से न जाव

अभी दरख़्तों के झुरमुट पँ पड़ने वाली हैं
कमन्दे-माहे-मुनव्वर[5] अभी यहाँ से न जाव

निगाहे-साक़ी-ए-शब से जो हाथ आये हैं
खनक रहे हैं वो साग़र अभी यहाँ से न जाव

ये कैफ़े-शब ये धुँधलके ये महकी-महकी हवा
ये सब हैं तुम पै निछावर अभी यहाँ से न जाव

अभी तक़ातुरे-शबनम[6] से ज़ुल्मते-शब की
कुछ और भीग ले चादर अभी यहाँ से न जाव

हमारी रात चली जायेगी तुम्हारे साथ
हमारी रात को ले कर अभी यहाँ से न जाव

बहुत रुके मेरी ख़ातिर ये सोचता हूँ कि अब
कहूँ मैं तुम से ये क्योंकर अभी यहाँ से न जाव

ये तीरगी ये ग़ज़ल आँसुओं में डूबी हुई
ये हैं फ़िराक़ सरासर अभी यहाँ से न जाव

---

१. क्लेश। २. सूर्यास्त के बाद। ३. सुन्दर शहर। ४. दुःखों का घर। ५. चमकते चाँद की डोरी। ६. ओस की बूँदा-बाँदी।

● ६५ बे - ठिकाने हैं दिले - ग़मगीं ठिकाने की कहो
शामे - हिज्राँ दोस्तो
कुछ उस के आने की कहो

हाँ न पूछो इन गिरफ़्तारे - क़फ़स की ज़िन्दगी
हमसफ़ीराने - चमन[1]
कुछ आशियाने की कहो

उड़ गया है मंज़िले - दुशवार में ग़म का समन्द[2]
गेसू - ए - पुरपेचो - ख़म के
ताज़याने[3] की कहो

बात बनती और बातों से नज़र आती नहीं
उस निगाहे - नाज़ के
बातें बनाने की कहो

दास्ताँ वो थी जिसे दिल बुझते - बुझते कह गया
शम्ए - बज़्मे - ज़िन्दगी के
झिलमिलाने की कहो

दास्ताने - ज़िन्दगी भी किस क़दर दिलचस्प है
जो अज़ल से छिड़ गया है
उस फ़साने की कहो

ये फ़ुसूने - नीमशब ये ख़्वाब - सामाँ ख़ामुशी
सामरी फ़न आँख के
जादू जगाने की कहो

कोई क्या खायेगा यूँ सच्ची क़सम झूठी क़सम
उस निगाहे - नाज़ के
सौगन्ध खाने की कहो

शाम ही से गोश - बरआवाज़[4] है बज़्मे - सुखन
कुछ फ़िराक़ अपनी सुनाओ
कुछ ज़माने की कहो।

---

१. चमन के साथी। २. घोड़ा। ३. कोड़ा। ४. कानों में ध्वनित।

● ६६ भड़कते शोलों से ठंडक जो दे वो आग है तू
सदाबहार है तू प्रेम का सुहाग है तू

खबर दिलों को नहीं जलते हैं कि बुझते हैं
अरे न आग न पानी है जो वो लाग है तू

सुकूत को भी तो कानों में गूँजता पाया
जो एक कर दे सुना- अनसुना वो राग है तू

क़बा-ए-तंग ने वीसों जगह से लौ दे दी
ज़फ़र्क़े-ता-ब-क़दम[1] एक दबी-सी आग है तू

जुदा हर इक से हमआहंग भी ज़माने से
क़ुबूलियतकी जो तसवीर है वो त्याग है तू

मैं तुझ को देख रहा हूँ कि कान बजते हैं
है कोई शोल-ए-लरज़ाँ कि कोई राग है तू

कहाँ चमन की बहारें कहाँ ये रंगे-नशात
जो खूने-इश्क़ से खेला गया वो फाग है तू

बहुत दिनों में महब्बत को ये हुआ मालूम
लगाव नाम को जिस में नहीं वो लाग है तू

निगाहो - गोश की पुरकैफ़ तिश्नगी[2] को न पूछ
इक अधखिली-सी कली अधसुना-सा राग है तू

फ़िराक़ अपने दुखों को भुला के कहना था
सदावहार है दुनिया सदा सुहाग है तू

१. सिर से पैर तक। २. प्यास।

● ६७ भुला रक्खा जिन्हें तू ने वो तुझ को याद करते हैं
जहन्नुम झेलते हैं
जन्नतें आबाद करते हैं

बता ऐ आशिक़ी तुझ को क़सम शामे-जवानी की
किसी के हिज्र में रातों को
क्यूँ फ़रियाद करते हैं

सबक़-आमोज़ हैं बरबादियाँ उन की भी ऐ हमदम
हम उन के चाहने वालों को
अकसर याद करते हैं

कहाँ ले जाती हैं पल मारने में वहशतें उस को
जब अच्छी आँखों वाले
कोई दिल आबाद करते हैं

न पूछो किस तरह कटती हैं ज़िन्दाँ में बहार अपनी
लहू दिल को ये मौसम
हाय अब्रो-बाद करते हैं

क़यामत है क़यामत देखना तुझ को नज़र भर के
मगर ये काम हम अब हर्चे
बादाबाद करते हैं

बता दे नज़्अ[1] में याद आने वाले ओ जफ़ापरवर
तुझे हम ऐसे नाज़ुक वक़्त में
क्यूँ याद करते हैं

जिगर दिल पर निगाहे-नाज़ तम्हीदे-तग़ाफ़ुल[2] है
कहाँ आबाद करते हैं
कहाँ बरबाद करते हैं

ख़ुदा रक्खे दिले-सोज़ाँ चिराग़े-ख़ाना था अकसर
फ़िराक़ उस दर्द की तसवीर को
हम याद करते हैं

॥१९२३॥

१. मरणासन्न दशा। २. उपेक्षा का प्रारम्भ।

● ६८ भंवर में अज़ल से हैं दिल खोये-खोये महब्बत उभारे
महब्बत डुबोये

सितारे छिपे झिलमिला-झिलमिला के तेरे जागने वाले
रो-रो के सोये

तलब उस से कर कीमिया ज़िन्दगी की जो दर्द और राहत
को बाहम[1] समोये

गले के तेरे हार बन-बन के टूटे बहुत रोने वालों ने
मोती पिरोये

तेरी बेनियाज़ी से कुछ हम भी कहते मगर कौन ऐ दोस्त
बात अपनी खोये

ज़मीने-महब्बत की क़िस्मत न चमकी मेरी चश्मे-तर ने
सितारे भी बोये

तेरे आहू-ए-नाज़ दश्ते-चमन में कहीं पाये पाये
कहीं खोये खोये

रही राज़ ही वारदाते-महब्बत हँसे तुम भी कुछ
रोने वाले भी रोये

मैं कहता था जगबीती या आपबीती कभी मैं भी रोया
कभी तुम भी रोये

हवा-ए-महब्बत के झोंके न पूछो फ़िराक़ इस हवा में
न जागे न सोये

१. परस्पर।

● ६९ मैं हूँ फ़क़ीरे - बेनवा सलतनते - जहाँ न दे
इस से तो अपने दर्द की दौलते - बेकराँ[1] न दे

हुस्न के एतदाल से नज़्मे - जहाँ है बरक़रार
गर्दिशे चश्मे - नाज़ को गर्दिशे - आसमाँ न दे

खतरा है अहमक़ों से भी खद्शा है बेतहों से भी
ऐसों को अपने इश्क़ की कैफ़ीयते - निहाँ न दे

हम हैं कि शौहर-ए-ज़माँ फिर भी सुकूने-दिल कहाँ
नामो - नमूद क्या करें हस्ति - ए - बेनिशाँ न दे

ये मेरी कश्ती - ए - हयात ये मेरे दिल की धड़कनें
साहिले - बह्‌र का सुराग़ जुम्बिशे - बादवाँ[2] न दे

ज़िन्दगी-ए-दरोज़ा से करते हैं वज़्अ जन्नतें
हम को बहुत है ये जहाँ जन्नते - जाविदाँ न दे

जिन्से - गिराँ बहा है ये इस को ये बेच खायेंगे
अह्‌ले - हवस को इश्क़ की दौलते - बेकराँ न दे

ग़लग़ला - हाए रंगो - बू दग़दग़ा - हाए आरज़ू
इतने पयामे - नागहाँ जलव - ए - गुलसिताँ न दे

माँग पनाह हुस्न के फ़ितना - ए - बेपनाह से
मौत भी दे न वो निगाह जान की भी अमाँ न दे

शोरे - तरब से बेनियाज़ है ये सुकूने खारो - खस
बज़्मे - बहारे - बाग़ को खलवते - आशियाँ न दे

दिल को तेरी तलाश है वादि - ए - काएनात में
तुझ को वो दे कहाँ सदा तुझ को सदा कहाँ न दे

क़ौमों को झूठी ज़िन्दगी दे के ये किस ने छीन ली
जान जसद[3] को दे मगर क़ाबिले - इम्तहाँ न दे

अपना मिज़ाज क्या करूँ अपनी पसन्द क्या करूँ
दुश्मने - हज्वगो[4] भी ए दोस्त क़सीदाख्वाँ[5] न दे

---

१. असीम धन। २. जहाज़ में लगाये गये परदे की गति। ३. शरीर। ४. वह कवि जो अपनी कविता में लोगों की निन्दा करता हो (वास्तव में निन्दा करने वाला)। ५. प्रशंसा करने वाला।

शामे - अवद के नज्मो - माह् बीच में सो गये अगर
मेरे सुकूते - यास को ज़हमते - दास्ताँ न दे

दिन है न दिन न रात रात क्या हो अगर वो हुस्न को
आरिज़े - महचकाँ न दे खन्द - ए - खूँचकाँ न दे

कोई तो हुस्नो - इश्क़ में फ़र्क़ रहे चमन को तू
नरगिसे - नीमवाज़[1] दे दीद - ए - खूँचकाँ न दे

ज़र्फ़ - पियालानोश को देख के वादा देते हैं
ग़ैर को ये मज़ाक़े - इश्क़ ये ग़मे - शादमाँ न दे

सोच ले ऐ निगाहे - लुत्फ़ शिद्दते सदम - ए - नशात
कितने पयामे सरखुशी दे भी तो नागहाँ न दे

सारो दोरंगियाँ क़ुबूल आलमे - रंगारंग की
फ़ितना - ए - दुश्मनों की आह् शेव-ए-दोस्ताँ न दे

कौन - सी वादियों में आह् खो गयीं मिल्लतें क़दीम[2]
कोई सदा न दे जरस गर्द भी कारवाँ न दे

शोल - ए - नूरे मह् ज को छू न सकेगी तीरगी
दिल का कँवल है वो कँवल बुझ के भी जो धुवाँ न दे

खालिके - हुस्न[3] होशियार एक जहाँ न हो शिकार
उस की जबीं के हाथ में अबरुओं की कमाँ न दे

जन्नते - वादा के निसार मौत है दौरे - रोज़गार
माँग रहा हूँ ज़िन्दगी तिफ़्ल - तसल्लियाँ न दे

खुद से न मिल सकूँ कभी खुद को न पा सकूँ कहीं
मुझ को अगर मेरा पता इश्व - ए - दिलबराँ न दे

तीरगी - ए - फ़िराक़ को शम्एँ न कर सकेंगी गुम
ग़म की अँधेरी रात को अश्कों की कहकशाँ न दे

---

१. अधमुँदी आँखें। २. पुरानी। ३. सौन्दर्य पैदा करने वाले।

● ७० ये सबाहत की ज़ौ[1] महचकाँ[2]-महचकाँ
ये पसीने की रौ कहकशाँ[3]-कहकशाँ

इश्क़ था एक दिन दास्ताँ-दास्ताँ
आज क्यों है वही बेज़बाँ-बेज़बाँ

दिल को पाया नहीं मंज़िलों-मंज़िलों
हम पुकार आये हैं कारवाँ-कारवाँ

इश्क़ भी शादमाँ-शादमाँ इन दिनों
हुस्न भी इन दिनों मेह्रबाँ-मेह्रबाँ

है तेरा हुस्ने-दिलकश सरापा सवाल
है तेरी हर अदा चीस्ताँ-चीस्ताँ

दम-बदम शबनमो-शोला की ये लवें
सर से पा तक बदन गुलसिताँ-गुलसिताँ

बैठना नाज़ से अंजुमन-अंजुमन
देखना नाज़ से दास्ताँ-दास्ताँ

महकी महकी फ़ज़ा खुशबू-ए-ज़ुल्फ़ से
पंखड़ी होंट की गुलफ़िशाँ-गुलफ़िशाँ

जिस के साये में इक ज़िन्दगी कट गयी
उम्रे-ज़ुल्फ़े-रसा जाविदाँ-जाविदाँ

ले उड़ी है मुझे बू-ए-ज़ुल्फ़े-सियह
ये खिली चाँदनी बोसताँ[4]-बोसताँ

आज संगम सरासर जू-ए-इश्क़ है
एक दरिया-ए-ग़म बेकराँ-बेकराँ

जिस तरफ़ जाइए मतलए-नूर-नूर
जिस तरफ़ आइए महवशाँ-महवशाँ

बू ज़मीं से मुझे आ रही है तेरी
तुझ को क्यों ढूँढ़िए आसमाँ-आसमाँ

सच बता मुझ को क्या यूँ ही कट जायेगी
ज़िन्दगी इश्क़ की रायगाँ-रायगाँ

---

१. चमक। २. चन्द्रमा का प्रकाश बिखरने वाला। ३. आकाश-[illegible]। ४. उपवन।

रूप की चाँदनी सोज़े-दिल सोज़े-दिल
मौजे-गंगो-जमन साज़े-जाँ[1] साज़े-जाँ

अह्द-दो-पैमाँ कोई हुस्न भी क्या करे
इश्क़ भी है तो कुछ वदगुमाँ-वदगुमाँ

जैसे कौनैन[2] के दिल पें हो वोझ-सा
इश्क़ से हुस्न है सरगराँ-सरगराँ

क्यों फ़ज़ाओं की आँखों में थे अश्क-से
वो सिधारे हैं जव शादमाँ-शादमाँ

लव पें आयी न वो बात ही हमनशीं[3]
आये क्या-क्या सुख़न दरम्याँ-दरम्याँ

ढूँढ़ते-ढूँढ़ते ढूँढ़ लेंगे तुझे
गो निशाँ है तेरा वेनिशाँ-वेनिशाँ

मेरे दारुल-अमाँ[4] ऐ हरीमे-निगार[5]
हम फिरें क्या यूँ ही वेअमाँ-वेअमाँ

यूँ घुलेगा-घुलेगा तेरे इश्क़ में
रह गया इश्क़ अब उस्तुख़ाँ[6]-उस्तुख़ाँ

हम को सुनना वहरहाल तेरी ख़बर
माजरा-माजरा दास्ताँ-दास्ताँ

उस के तेवर पें क़ुर्बान लुत्फ़ो-करम
मेहरवाँ-मेहरवाँ क़हरमाँ-क़हरमाँ

जी में आता है तुझ को पुकारा करूँ
रहगुज़र-रहगुज़र आस्ताँ-आस्ताँ

याद आने लगी फिर अदाएँ तेरी
दिलनशीं-दिलनशीं जाँसिताँ[7]-जाँसिताँ

क्यों तेरे दिल की चिंगारियाँ हो गयीं
सोज़-दिल सोज़े-दिल सोज़े-जाँ सोज़े-जाँ

१. जीवन-राग। २. विश्व। ३. साथी। ४. शान्ति की जगह। ५. महबूब के घर की चारदीवारी। ६. हड्डी। ७. प्राणघातक।

साथ है रात की रात वो रश्के-मह
मेज़बाँ - मेज़बाँ मेहमाँ - मेहमाँ
इश्क़ की ज़िन्दगी भी ग़रज़ कट गयी
ग़मज़दा - ग़मज़दा शादमाँ - शादमाँ
अब पड़े अब पड़े उस के माथे पॅ बल
अलहज़र - अलहज़र अलअमाँ - अलअमाँ
इश्क़ खुद अपनी तारीफ़ यूँ कर गया
अह्‌रमन - अह्‌रमन ईज़दाँ - ईज़दाँ
कैफ़ो-मस्ती है इमकाँ-दर-इमकाँ फ़िराक़
चाँदनी है अभी नौजवाँ - नौजवाँ

● ७१

ये तो नहीं कि ग़म नहीं
हाँ मेरी आँख नम नहीं

तुम भी तो तुम नहीं हो आज हम भी तो आज हम नहीं
नश्शा सँभाले है मुझे बहके हुए क़दम नहीं
क़ादिरे-दोजहाँ[1] है गो इश्क़ के दम में दम नहीं
मौत अगरचे मौत है मौत से ज़ीस्त कम नहीं
किस ने कहा ये तुम से खिज्र आबे-हयात[2] सम[3] नहीं
अब न खुशी की है खुशी ग़म का भी अब तो ग़म नहीं
मेरी नशिस्त है ज़मीं खुल्द नहीं हरम नहीं
और ही है मुक़ामे-दिल दैर नहीं हरम नहीं
क़ीमते-हुस्न दो-जहाँ कोई बड़ी रक़म नहीं
अह्‌दे-वफ़ा है हुस्ने-यार क़ौल नहीं क़सम नहीं
लेते हैं मोल दो-जहाँ दाम नहीं दिरम नहीं

सौमो-सलात[4] से फ़िराक़
मेरे गुनाह कम नहीं

---

१. दोनों संसार का अधिकारी। २. अमृत। ३. विष। ४. रोज़ा-नमाज़।

● ७२ ये सुर्मई फ़ज़ाओं[१] की कुछ कुनमुनाहटें
मिलती हैं मुझ को पिछले पहर तेरी आहटें

इस कायनाते-ग़म की फ़सुर्दा[२] फ़ज़ाओं में
बिखरा गये हैं आ के वो कुछ मुस्कुराहटें

ऐ जिस्मे - नाज़नीने - निगारे - नज़रनवाज़[३]
सुब्हे - शबे - विसाल तेरी मलगजाहटें

चलती है जब नसीमे-खयाले-खरामे-नाज़[४]
सुनता हूँ दामनों की तेरे सरसराहटें

चश्मे - सियह तबस्सुमे - पिनहाँ लिये हुए
पौ फूटने से क़ब्ल उफ़ुक़ की उदाहटें

जुम्बिश में जैसे शाख़ हो गुलहा-ए-नग़मा की
इक पैकरे - जमील की ये लहलहाहटें

झोकों की नब्ज़ है चमने - इन्तज़ारे - दोस्त
वादे - उम्मीदो - बीम की ये सनसनाहटें

हो सामना अगर तो खिजिल हो निगाहे-बर्क़
देखी हैं अब्र - अब्र में वो अचपलाहटें

किस देश को सिधार गयीं ऐ जमाले - यार
रंगीं लबों पॅ खेल के कुछ मुस्कुराहटें

साज़े-जमाल की ये नवाहा-ए-सरमदी
जोबन तो वो फ़रिश्ते सुनें गुनगुनाहटें

आज़ुर्दगी-ए-हुस्न भी किस दर्जा शोख है
अश्कों में तैरती हुई कुछ मुस्कराहटें

होने लगा हूँ खुद से क़रीं ऐ शबे - अलम[५]
मैं पा रहा हूँ हिज्र में कुछ अपनी आहटें

मेरी ग़ज़ल की जान समझना उन्हें फ़िराक़
शम्ए - खयाले - यार की ये थरथराहटें

---

१. वायुमण्डल। २. उदास। ३. नज़र को भाने वाले महबूब का कोमल शरीर। ४. प्रेमिका की हवा जैसी चाल की कल्पना। ५. दुख की रात में।

● ७३ राज़ को राज़ ही रक्खा होता
क्या कहना गर ऐसा होता

हुस्न से कब तक पर्दा करते इश्क़ से कब तक पर्दा होता
कम - कम उठतीं तेरी निगाहें अकसर खूने - तमन्ना[1] होता
कटते - कटते रातें होतीं होते - होते सवेरा होता
रात-की-रात कभी मेरा घर तेरा रैन - बसेरा होता
इश्क़ ने मुझ से कमी की वरना मुझ पर तेरा धोका होता
दुनिया - दुनिया आलम - आलम होता इश्क़ और तनहा होता
दरिया - दरिया सहरा - सहरा रोता खाक उड़ाता होता
आज तो दर्दे - हिज्र भी कम है आज तो कोई आया होता
आज तो साज़े - ख़मोश है आलम आज तो उस को पुकारा होता
ये निर्जन वन ये सन्नाटा कोई पत्ता खड़का होता
मैं हूँ दिल है तनहाई है तुम भी जो होते अच्छा होता
मेरी रगे - जाँ दुख जाती है बाल भी तेरा बाँका होता
तू गर अपने हाथ से देता पैमाना पैमाना होता
आँख उठा कर जान गवाँ के हुस्न का आलम देखा होता
पर्दादारिए - ग़म भी है शाकी[2] तू ने हाल तो पूछा होता
हम जो तुझे कुछ भूल भी जाते दर्दे - महब्बत दूना होता
कुछ तो महब्बत कर के दिखाती कुछ तो ज़माना बदला होता
इस से तो ऐ जागने वालो सोया होता खोया होता
इश्क़ तो चुप है साज़े-महब्बत तेरी नज़र ने छेड़ा होता
कोई कभी कुछ दिल ही दिल में शर्माया पछताया होता
मंज़िल - मंज़िल दिल भटकेगा आज तुम्हीं ने रोका होता

हम भी फ़िराक़ इनसान थे आखिर
तर्के - महब्बत से क्या होता

---

१. कामना की हत्या । २. शिकायत करने वाला ।

● ७४ रात आधी से ज़्यादा गयी थी
सारा आलम सोता था
नाम तेरा ले-ले कर कोई दर्द का मारा रोता था

चारागरो ये तस्कीं[1] कैसी
मैं भी हूँ इस दुनिया में
उन के ऐसा दर्द कब उट्ठा जिन को बचाना होता था

कुछ का कुछ कह जाता था
मैं फ़ुर्क़त[2] की बेताबी में
सुनने वाले हँस पड़ते थे होश मुझे तब होता था

तर्के - महब्बत करने वालो
कौन ऐसा जग जीत लिया
इश्क़ से पहले के दिन सोचो कौन बड़ा सुख होता था

दुनिया दुनिया ग़फ़लत तारी
आलम आलम बेख़बरी
हुस्न का जादू कौन जगाये एक ज़माना सोता था

उस के आँसू किस ने देखे
उस की आहें किस ने सुनीं
चमन-चमन था हुस्न भी लेकिन दरिया दरिया रोता था

पिछला पहर था हिज्र की शब का
जागता रब सोता संसार
तारों की छाँव में कोई फ़िराक़-सा जैसे मोती पिरोता था

---

१. सान्त्वना। २. जुदाई।

● ७५ रात भी नींद भी कहानी भी
हाय क्या चीज़ है जवानी भी

एक पैग़ामे - ज़िन्दगानी भी
आशिक़ी मर्गे - नागहानी भी

दिल को अपने भी ग़म थे दुनिया में
कुछ बलाएँ थीं आसमानी भी

दिल को शोलों से करती है सेराब
ज़िन्दगी आग भी है पानी भी

तंगना - ए - दिले - मलूल[1] में है
बहरे - हस्ती की बेकरानी भी

इश्क़े - नाकाम की है परछाईं
शादमानी भी कामरानी भी

देख दिल के निगारखाने में
ज़ख्मे - पिनहाँ की है निशानी भी

खल्क़ क्या - क्या मुझे नहीं कहती
कुछ सुनूँ मैं तेरी ज़बानी भी

आये तारीखे - इश्क़ में सौ बार
मौत के दौरे - दरम्यानी भी

अपनी मासूमियों के पर्दे में
हो गयी वो नज़र सियानी भी

दिले - बदनाम तेरे बारे में
लोग कहते हैं इक कहानी भी

वज़्अ[3] करते कोई नयी दुनिया
कि ये दुनिया हुई पुरानी भी

दिल को आदाबे-बन्दगी[4] भी न आय
कर गये लोग हुक्मरानी भी

जौरे - कमकम का शुक्रिया बस है
आप की इतनी मेहरबानी भी

---

१. दुःखी हृदय की सीमा। २. शमा-गृह। ३. निर्माण। ४. सेवाभाव।

दिल में इक हूक भी उठी ऐ दोस्त
याद आयी तेरी जवानी भी

सर से पा तक सिपुर्दगी की अदा
एक अन्दाज़े - तुर्कमानी[1] भी

पास रहना किसी का रात की रात
मेहमानी भी मेज़बानी भी

हो न अक्से - जवीने - नाज़ कि है
दिल में इक नूरे - कहकशानी भी

ज़िन्दगी ऐन दीदे - यार फ़िराक़
ज़िन्दगी हिज्र की कहानी भी

● ७६ रंजो-राहत वस्लो-फ़ुर्क़त होशो-वहशत क्या नहीं
कौन कहता है कि रहने की जगह दुनिया नहीं

दिल भी कहता है ठहरना हिज्र में दुश्वार है
मैं भी कहता हूँ कि ये अन्दाज़े-ग़म अच्छा नहीं

हैं फ़रेब एहसासे-पिनहाँ के सुकूनो-इज़्तराब
इश्क़ है वो दर्द जो घटता नहीं बढ़ता नहीं

ऐ निगाहे-बेमहाबा[2] तू ने ये क्या कर दिया
आज दिल को देखकर मैं ने भी पहचाना नहीं

ग़ौर कर इस कैफ़ियत पर कुछ समझ ये सोज़ो-साज
इश्क़ में दिल दर्द हो जाता है दिल दुखता नहीं

ले उड़ी तुझ को निगाहे-शौक़ क्या जाने कहाँ
तेरी सूरत पर भी अब तेरा गुमाँ होता नहीं

एक उदासी भी लिये है क्यों निगाहे-नाज़े-यार
ये पयामे - ज़िन्दगी शायद कोई सुनता नहीं

मैं अदम-अन्दर-अदम हूँ मैं जहाँ-अन्दर-जहाँ
एक ही दुनिया हो मेरी ऐ फ़िराक़ ऐसा नहीं

---

१. तुर्कों की अदा। २. बेझिझक दृष्टि।

● ७७ वज़्मे - साक़ी से उठा है कोई यूँ रात रहे
'पा - वदस्ते - दिगरे दस्त - वदस्ते - दिगरे'

डाल कर सम्ते - वतन एक उचटती - सी निगाह
हम सूए - दश्ते - जुनूँ ले के तेरा नाम चले

अक्सर उस आलमे - वेनाम की याद आती है
जिस से मिल जाते हैं दुनिया-ए-महव्वत के सिरे

उफ़ हिजावाते - दो - आलम[1] कि पहुँचते नहीं हाथ
'पर्दा छोड़ा है वो उस ने कि उठाये न उठे'

कारो - वारे - दिले - उश्शाक़[2] अजव धन्धा है
जिस क़दर फ़ायदा हो उतने ही घाटे में रहे

किसी गूँगे का है सपना तो सभा वहरों की
इश्क़ वो क़िस्सा जिसे कौन कहे कौन सुने

इस शहादतगहे - हस्ती[3] में जो डर-डर के जिये
ज़िन्दगी दूर रही मौत भी पल्ले न पड़े

इस नये दौरे - महव्वत के तक़ाज़े हैं कुछ और
क्यों कोई होशगहे - इश्क़ में दीवाना वने

चश्मे - हैराँ ने तिलिस्माते - जहाँ देख लिया
आज क्या - क्या तेरी नज़रों ने दिये हैं धोके

दास्ताँ इश्क़ की दोहरा गयी तारों भरी रात
कितनी यादों के चराग़ आज जले और बुझे

न मिली पर न मिली कुफ़्र की मंज़िल ऐ वाय
खुद को करते रहे गुमराह खुदा के वन्दे

अर्जुनो - रुस्तमो - चंगेज़ की हिम्मत न पड़ी
काम वो इश्क़ ने अंजाम दिये ज़िन्दा रहे

दोस्त की याद में रोने के तुम औक़ात फ़िराक़
मुझ से जो पूछते हो रात गये रात रहे

---

१ दोनों आलम के परदे। २. प्रेमियों के दिल का व्यापार। 3. जीवन के बलिदान-स्थल।

● ७८ वादे की रात मरहबा आमदे-यार-मेहरबाँ
जुल्फ़े-सियाह शबफ़शाँ आरिज़े-नाज़ महचकाँ

वर्क़े-जमाल में तेरी खुफ़्ता[1] सुकूने-बेकराँ
और मेरा दिले-तपाँ आज भी है तपाँ-तपाँ

शाम भी थी धुवाँ-धुवाँ हुस्न भी था उदास-उदास
याद-सी आके रह गयीं दिल को कई कहानियाँ

छेड़ के दास्ताने-ग़म अहले-वतन के दरम्याँ
हम अभी बीच ही में थे और बदल गयी ज़बाँ

अपनी ग़ज़ल में हम जिसे कहते रहे हैं बारहा
वो तेरी दास्ताँ कहाँ वो तो है ज़ेबे-दास्ताँ

कोई न कोई बात है उसके सुकूते-यास में
भूल गया है सब गिले आज तो इश्क़े-बदगुमाँ

रात कमाल कर गयीं आलमे-कर्बो-दर्द[2] में
दिल को मेरे सुला गयीं तेरी नज़र की लोरियाँ

सरहदे-ग़ैब तक तुझे साफ़ मिलेंगे नक़्शे-पा
पूछ न ये फिरा हूँ मैं तेरे लिए कहाँ-कहाँ

कहते हैं मेरी मौत पर उसको भी छीन ही लिया
इश्क़ को मुद्दतों के बाद एक मिला था तर्जुमाँ[3]

रंग जमा के उठ गयी कितने तमद्दुनों[4] की बज़्म
याद नहीं ज़मीन को भूल चुका है आसमाँ

आर्ज़ियत[5] का सोज़ भी देख तो सोज़े-आर्ज़ी
बीते हुए जुगों से पूछ किस को सबात[6] है यहाँ

कोई नहीं जो साथ दे तेरे हरीमे-राज़ तक
बिखरे हुए महो-नुजूम देते हैं सब तेरा निशाँ

जिसको भी देखिए वही बज़्म में है ग़ज़लसरा
छिड़ गयी दास्ताने-दिल फिर ब-हदीसे-दीगराँ

---

१. सोया हुआ। २. पीड़ा को बेचैनी की हालत। ३. कहनेवाला। ४. संस्कृतियों। ५. क्षणभंगुरता। ६. स्थिरता।

वीत गये हैं लाख जुग सूए-वतन चले हुए
पहुँची है आदमी की ज़ात चार क़दम कशाँ-कशाँ

पाँव से फ़र्क़े-नाज़ तक बर्क़े-तवस्सुमे-नशात
हुस्ने-चमनफ़रोश को देख जहाँ से गुलसिताँ

दादे-सुखनवरी मिली अवरू-ए-नाज़ उठ गये
है वही दास्ताने-दिल हुस्न भी कह उठे कि हाँ

जैसे खिला हुआ गुलाव चाँद के पास लहलहाय
रात वो दस्ते-नाज़ में जामे-नशाते-अर्ग़वाँ[1]

राज़े-वजूद कुछ न पूछ सुब्हे-अज़ल से आज तक
कितने यक़ीन चल वसे कितने गुज़र गये गुमाँ

तुझ से यही कहेंगी क्या गुज़री है मुझ पॅ रात भर
जो मेरी आस्तीं पॅ हैं तेरे ग़मों की सुर्खियाँ

हुस्ने-अज़ल की जल्वागाह आइना-ए-सुकूते-राज़
देख तो है अयाँ-अयाँ पूछ तो है नेहाँ-नेहाँ

दूर बहुत ज़मीन से पहुँचो है इक किरन की चोट
नीम-तवस्सुमे-ख़फ़ी रह गयीं पिसके बिजलियाँ

कितने तसव्वुरात के कितने ही वारदात के
लालो-गुहर लुटा गया दिल है कि गंजे-शायगाँ[2]

सीनों में दर्द भर दिया छेड़ के दास्ताने-हुस्न
आज तो काम कर गयी इश्क़ की उम्रे-रायगाँ

आह फ़रेबे-रंगो-बू अपनी शिकस्त आप है
वादे-नज़ारा-ए-बहार बढ़ गयीं और उदासियाँ

ऐ मेरी शामे-इन्तज़ार कौन ये आ गया लिये
ज़ुल्फ़ों में एक शबे-दराज़ आँखों में कुछ कहानियाँ

मुझ को फ़िराक़ याद है पैकरे-रंगो-बू-ए-दोस्त
पाँव से ता-जबीने-नाज़ मेह्रफ़शाँ-वो-महचकाँ

---

१. लाल, २. बेशकीमत खजाना।

● ७९ वो आँख ज़बान हो गयी है
हर बज़्म की जान हो गयी है

आँखें पड़ती हैं मयकदों की
वो आँख जवान हो गयी है

आईना दिखा दिया ये किस ने
दुनिया हैरान हो गयी है

उस नरगिसे - नाज़ में थी जो बात
शाइर की ज़बान हो गयी है

अब तो तेरी हर निगाहे - काफ़िर
ईमान की जान हो गयी है।

तरग़ीबे - गुनाह[1] लह्ज़ा - लह्ज़ा[2]
अब रात जवान हो गयी है

तौफ़ीक़े - नज़र से मुश्किले - ज़ीस्त
कितनी आसान हो गयी है

तसवीरे - बशर है नक़्शे - आफ़ाक़
फ़ितरत इनसान हो गयी है

पहले वो निगाह इक किरन थी
अब एक जहान हो गयी है

सुनते हैं कि अब नवा - ए - शाइर
सहरा ही अज़ान हो गयी है

ये किस की पड़ी ग़लत निगाहें
हस्ती बुह्तान[3] हो गयी है

इन्साँ को खरीदता है इन्साँ
दुनिया भी दुकान हो गयी है

अकसर शबे - हिज्र दोस्त की याद
तनहाई की जान हो गयी है

१, पाप की ओर उकसाना। २. क्षण-प्रतिक्षण। ३. आरोप।

शिर्कत तेरी बज़्मे - क़िस्सागो[1] में
अफ़साने की जान हो गयी है

जो आज मेरी ज़बान थी कल
दुनिया की ज़बान हो गयी है

इक सानिहा-ए-जहाँ है वो आँख
जिस दिन से जवान हो गयी है

रा'नाइ - ए - क़ामते - दिलआरा
मेरा अरमान हो गयी है

दिल में इक वारदाते - पिनहाँ[2]
वेसान - गुमान हो गयी है

सुनता हूँ क़ज़ा - ए- क़हृ रसाँ भी
अब तो रहमान हो गयी है

वाएज़ मुझे क्या खुदा से
मेरा ईमान हो गयी है

मेरी तो ये कायनाते - ग़म भी
जानो - ईमान हो गयी है

मेरी हर बात आदमी की
अज़्मती[3] का निशान हो गयी है

यादे - अय्यामे - आशिक़ी जब
अबदीयत[4] इक आन हो गयी है

जो शोख नज़र थी दुश्मने-जाँ
वो जान की जान हो गयी है

हर बैत[5] फ़िराक़ इस ग़ज़ल की
अबरू की कमान हो गयी है

---

१. कहानियाँ कहने वालों की महफ़िल। २. छिपी हुई घटना। ३. महानता।
४. नित्यता। ५. पंक्ति।

● ८० शामे-ग़म कुछ उस निगाहे-नाज़ की बातें करो
वेखुदी बढ़ती चली है राज़ की बातें करो

ये सुकूते-नाज़ ये दिल की रगों का टूटना
ख़ामुशी में कुछ शिकस्ते-साज़ की बातें करो

नकहते-ज़ुल्फ़े-परीशाँ[1] दास्ताने - शामे - ग़म
सुव्ह होने तक इसी अन्दाज़ की बातें करो

हर रगे-दिल वज्द में आती रहे दुखती रहे
यूँ ही उस के जा-वो-वेजा नाज़ की बातें करो

जो अदम की जान है जो है पयामे-ज़िन्दगी
उस सुकूते-राज़ उस आवाज़ की बातें करो

इश्क़ रुसवा हो चला वेकैफ़-सा वेज़ार-सा
आज उस की नर्गिसे-ग़म्माज़[2] की बातें करो

नाम भी लेना है जिस का इक जहाने-रंगो-बू
दोस्तो उस नौ-वहारे-नाज़ की बातें करो

किस लिए उज़्रे-तग़ाफ़ुल किस लिए इल्ज़ामे-इश्क़
आज चर्ख़े-तफ़रक़ा-परदाज़ की बातें करो

कुछ क़फ़स की तीलिओं से छन रहा है नूर-सा
कुछ फ़ज़ा कुछ हसरते-परवाज़[3] की बातें करो

जो हयाते-जाविदाँ है जो है मर्गे-नागहाँ
आज कुछ उस नाज़ उस अन्दाज़ की बातें करो

इश्क़े-बे-पर्वा भी अब कुछ ना-शकेवा[4] हो चला
शोख़ी - ए - हुस्ने - करिश्मासाज़ की बातें करो

जिस की फ़ुर्क़त ने पलट दी इश्क़ की काया फ़िराक़
आज उस ईसा-नफ़स दमसाज़ की बातें करो

---

१. बिखरे हुए केशों की सुगन्ध। २. चुग़लख़ोर आँखों की। ३. उड़ने की कामना। ४. असन्तुष्ट।

● ८१ शीराज़ा[1] दिल का यूँ भी परीशाँ किये चलो
बेचाक के भी
जेबे - मुहब्बत सिये चलो

बादाकशो इस आँख का बस ये पयाम है
दोनों जहाँ की ख़ैर
मनाते पिये चलो

यूँ भी सुना है मौत को कहते हैं ज़िन्दगी
जीने का ख़ैर नाम है
लेकिन जिये चलो

शायद यही हयात की मंज़िल का राज़ है
तनहा चलो जहान को
लेकिन लिये चलो

आराम से है कौन सरे - रहगुज़ारे - इश्क़
दिल को मगर
फ़रेबे - सुकूँ भी दिये चलो

ये भी है एक राज़े - सुकूँ इज़्तराब में
चाके - जिगर को
सोज़ने - ग़म[2] से सिये चलो

फ़ुरसत ज़रूरी कामों से पाओ तो रो भी लो
ऐ अहले - दिल
ये कारे - अबस[3] भी किये चलो

क्या भाग जाऊँगा मैं कहीं लेके वो दयार
ऐ जाने वालो
साथ मुझ भी लिये चलो

हर गुफ़्तगू हो उससे बजुज़ अर्ज़े - मुद्दआ[4]
बातों में ए फ़िराक़
लबों को सिये चलो

---

१. क्रम । २. ग़म की सुई । ३. व्यर्थ के कार्य । ४. मतलब की बात करना ।

● ८२ ठान ली उसने मुँह छुपाने की — बच गयी आबरू ज़माने की
आ गयी रात तेरे जाने की — अब नहीं सुब्ह मुस्कुराने की
गेसु-ए-यार से जो हो के गयीं — वह हवाएँ नहीं अब आने की
फूटती पौ भी पा सकी न अदा — ज़ेरे-लब तेरे मुस्कुराने की
हुस्न आया नहीं शबाब पर और — आँख पड़ने लगी ज़माने की
सिमट आयी है उसकी आँखों में — सारी मस्ती शराबख़ाने की
कहते हो दास्ताने-आदम क्या — यह तो तम्हीद है फ़साने की
दिल भी सीनों में ठहरे-ठहरे हैं — कुछ खबर भी है उस के आने की
हाय शोलानवाइयाँ मेरी — जल गयी शाख़ आशियाने की
क्या है आलामे-रोज़गार ए दोस्त — इक अदा तेरे आज़माने की
उफ़ यह एहसासे-बेकसीं शबे-ग़म — बात अलग है तेरे न आने की
क्या किया उसने मुझसे यह मत पूछ — मैं ने की जिस से बारहा नेकी
जो मेरे दोस्तों ने मुझ से किया — इक हकायत है भूल जाने की
उन लबों ने बतायी है तरकीब — हर्फ़[1] को दास्ताँ बनाने की
क्यों तेरे हुस्न ने क़सम खायी — अब के बिलकुल न याद आने की
जाते-जाते हर एक लम्हा-ए-उम्र — कह गया दास्ताँ ज़माने की
फिर तो दुनिया को भूल बैठा हूँ — देर थी कोई याद आने की
चोट खा-खा के ग़ुंचा-ए-गुल को — हुई तौफ़ीक़[2] मुस्कुराने की
देख ली तेरी दोस्ती ऐ दोस्त — दोस्ती देख ली ज़माने की
यादे-अय्याम रंजो-ग़म में भी — थी अदा तेरे याद आने की
तू ने सीखी है यह कहाँ से अदा — नाज़ से मुँह छुपा के जाने की
तेरी मौहूम[3] दोस्ती के लिए — दुश्मनी मोल ली ज़माने की
सई-ए-अम्नो-अमाँ बजा लेकिन — कम नहीं शोरिशें ज़माने की

ऐ फ़िराक़ अब मुशाइरा है शुरू
देर थी आप ही के आने की

---

१. शब्द। २. सामर्थ्य। ३. भ्रमात्मक।

● ८३ खुशतर्ज़ इक नज़र मेरे दिल से परच गयी
बन कर मज़ाक़े-ग़म मेरी रग-रग में रच गयी

कल संगे - मुह्तसिब जो सरे - मैकदा गिरा
चोट आयी मेरे गर्दने - मीना तो बच गयी

बाज़ारे-दह्र में कोई शै काम की न थी
इक जिन्से-हुस्न थी जो निगाहों में जच गयी

बदनाम रहगुज़ारे-नज़र में हुआ है इश्क़
कुछ हर निगाह कहती हुई झूट - सच गयी

दिल की तहों से फिर उड़े यादों के कुछ ग़ुबार
फिर नोके-खारे-ग़म[१] इन्हें आ कर खुरच गयी

आँसू मिज़ह के पास तक आ कर पलट गये
कल बाल - बाल आबरू - ए - इश्क़[२] बच गयी

शोहरत की ज़द से बच न सके सानिहाते-दिल[३]
हमदम मेरे कलाम की तो धूम मच गयी

यह सोचता हूँ हिज्र में फिर क्या करूँगा मैं
रोने से ऐ फ़िराक़ जो कुछ रात बच गयी

● ८४ मैंने माना हुस्न में नाज़ो - नज़ाकत चाहिए
क़ौल दिल का है कि महबूबाना सीरत चाहिए

उस को पा कर भी उसे पाने की हसरत चाहिए
वस्ल में भी चाश्नी - ए - दर्दे - फुरक़त[४] चाहिए

हज़रते नासेह, हमें हमदर्दियाँ दरकार हैं
तुम यें समझे दर्द वालों को नसीहत चाहिए

ऐ मज़ाहिब के खुदा तेरी मशीयत जो भी हो
इश्क़ को दीगर खुदा दीगर मशीयत चाहिए

---

१. दुख के काँटे की नोक। २. प्रेम की मर्यादा। ३. दिल की मुसीबतें। ४. वियोग के दर्द का मज़ा।

वरना बज़्मे - नाज़ इक हैरत-कदा बन जायगी
हुस्ने बेपायाँ में अन्दाज़े - किफ़ायत चाहिए

क़ादिरे मुतलक़ ने जो कुछ भी मुक़द्दर कर दिया
वोह मुक़द्दर भी बदल सकता है हिम्मत चाहिए

है सजीलापन रसीलापन कटीलापन वही
साग़रे-मय में तेरी आँखों की नीयत चाहिए

आप ने मेह्‌रो-मुरव्वत से नवाज़ा हर तरह
शुक्रिया इस का मगर मुझ को महब्बत चाहिए

शेख साहब सब की नज़रों में फ़रिश्ते ही सही
हक़ तो यह है आदमी में आदमीयत चाहिए

इस जहाँ को रश्के-जन्नत हम करेंगे एक दिन
जिन का यह ईमाँ नहीं ऐसों को जन्नत चाहिए

एक दुनिया पर फ़रेबे-नाज़ जिस का चल गया
उस नज़र के झूठ में भी कुछ सदाक़त[1] चाहिए

खोल देंगे अहले-दिल - राज़े-अज़ल राज़े-अबद
इक नज़र की गर्दिशे - दौराँ में फ़ुर्सत चाहिए

गो हैं उन मासूम आँखों में हज़ारों खूबियाँ
कुछ शरारत भी मगर हस्बे - ज़रूरत चाहिए

अजनबीयत जिन की फ़ितरत बेरुख़ी जिन का शआर
कुछ न कुछ ऐसों से भी साहब - सलामत चाहिए

क़ाइदे - क़ानून दुनिया के कहाँ आते हैं काम
अम्रे-दिल में उन निगाहों की सियासत[2] चाहिए

इक सुहानी नरमो-नाज़ुक सी दमक हो हुस्न में
नग़्म - ए - सुब्हे - बहाराँ की सबाहत चाहिए

इज़्ज़तो-शोहरत सभी कुछ मुझ को हासिल है फ़िराक़
दोस्त भी मिलने को मिल सकता है क़िस्मत चाहिए

---

१. सच्चाई। २. राजनीति।

८५ उभरते हुस्न को यकसर ग़रूर होने दे
असर से कैफ़े - जवानी[१] के चूर होने दे
दिया है दिल तो इसे बाशऊर होने दे
ग़मे - मजाज़ो - हक़ीक़त से दूर होने दे
निसारे - शोख़ी - ए - मासूम मुस्कराए जा
फ़ज़ा को मौजे - शरावे तहूर होने दे
कहाँ ये फ़ुर्सतें-काविश निगाहे - जानाँ को
कि अह्ले - ग़म को भी ग़म का शऊर होने दे
सकूते - होश को मरकज़[२] बना महब्बत का
जुनूँ का ग़लग़ला नज़दीको - दूर होने दे
उठे हिजाव तो मन्सूर की भी याद आये
हो सामना तो यह ग़फ़लत ज़रूर होने दे
अभी कुछ और करिश्मे निगाहे-नाज़ के हैं
जहाने - इश्क़ की ज़ुल्मत को दूर होने दे
ज़माँ-मकाँ से बचा इज्तरावे - हिजराँ[३] को
यह ग़म भी कुछ ग़मे - दूरी से दूर होने दे
तू आप अपना जहाँ आप अपनी जन्नत है
हरम में क़िस्सा - ए - हूरो - क़सूर होने दे
ग़मो - ख़ुशी से अलग उम्रे - इश्क़ काटे जा
यूँ ही सवाबो - गुनह नाज़ो - नूर होने दे
तमाम वादी-ए-एमन तमाम ज़ौक़े - कलीम
नज़र को सिलसिला - ए - वर्क़ो - तूर होने दे
कभी-कभी तेरे सदक़े सरे-नयाज़ को भी
ब - ज़ोमे - इश्क़ सरे - पुर - ग़रूर होने दे
नज़र उठा कभी ग़म के सियाहख़ानों पर
इसी अन्धेरे को आँखों का नूर होने दे
छुप इस तरह कि फ़ज़ा सरबसर चमक जाये
इसे न अर्श न कावा न तूर होने दे
तमाम वादी-ए-ग़ुरवत हरीमे-राज़ तमाम
किसी को क्या कोई नज़दीको - दूर होने दे

१. यौवन का नशा। २. केन्द्र। ३. वियोग की उलझन।

तमाम शामे-ग़रीबाँ तमाम सुब्हे-वतन
करिश्मासाज़ी-ए-ज़ुल्मात-ओ-नूर होने दे

फ़रेबे-ज़ब्ते-महब्बत को नाशकेबा कर
सकूने-दिल को ग़मे-नासबूर होने दे

सकूते-ग़म को हमआहंगे-कायनात बना
नज़र को बेख़बर इस के हज़ूर[1] होने दे

गुबारे-इश्क़ सियहकार उड़ा ज़माने में
फ़ज़ा को मतला-ए-सुब्हे-नशूर होने दे

यह क़ैफ़े-इश्क़ तो क्या जानिए कहाँ ले जाए
जो मावराए-ख़ुमारे-सुरूर होने दे

फ़िराक़ दिल का धड़कना नवेदे-महशर[2] है
नफ़स को परदा-ए-आवाज़े-सूर होने दे

● ८६ दुआ सब करते आये हैं दुआ से कुछ हुआ भी हो
दुखी दुनिया में बन्दे अनगिनत कोई ख़ुदा भी हो

यही है हुस्न की ख़ूबी यही है शाने-महबूबी
ज़-सर-ता-पा तग़ाफ़ुल हो कोई जाने-वफ़ा भी हो

कहाँ वह खलवतें दिन-रात की और अब यह आलम है
कि जब मिलते हैं दिल कहता है कोई तीसरा भी हो

हयाते-नौ-ब-नौ के आलमे-रंगीं का क्या कहना
ख़ुशी की सर-बसर तसवीर भी हो ग़म नुमा भी हो

तो फिर क्या इश्क़ दुनिया में कहीं का भी न रह जाये
ज़माने से लड़ाई मोल ली तुझ से बुरा भी हो

महब्बत की नज़र चश्मो-चराग़े बज़्म-हस्ती[3] है
जब इतनी सूरतें हैं कोई सूरत-आश्ना भी हो

फ़िराक़ इन्सान से क्या फ़ैसला हो कुफ़्रो-ईमाँ का
यह हैरत-खेज़-दुनिया जब ख़ुदा भी मासिवा[4] भी हो

---

१. सामने। २. प्रलय-आगमन की सूचना। ३. जीवन के दीपक की आँख। ४. सांसारिक वस्तुएं।

● ८७

सोज़ो - साज़े - दिली को भूल गयी
ज़िन्दगी आशिक़ी को भूल गयी

ज़िन्दगी राज़े-कुफ़्र को खो बैठी शेवा - ए - आज़री[1] को भूल गयी
तेरी आँखों को देख कर दुनिया जादू - ए - सामरी को भूल गयी
आशिक़ी पा के इक पयामे-हयात[2] आलमे बेखुदी को भूल गयी
हैं महब्बत की आँख में आँसू अपनी खुशक़िस्मती को भूल गयी
आदमी आदमी को भूल गया ज़िन्दगी ज़िन्दगी को भूल गयी
या सुबक-री नहीं मेरी तख़ईल[3] या तेरी नाज़ुकी को भूल गयी
जुल्फ़े - शबरंग क्यों मेरी वहशत तीरे - हम - साएगी को भूल गयी
दीनो-दुनिया को कुफ़्रो-ईमाँ को आशिक़ी तो सभी को भूल गयी
ज़िन्दगी बन्दगी के चक्कर में मन्सबे - दावरी[4] को भूल गयी
क्यों महब्बत तेरी नज़र की क़सम आलमे - आगही को भूल गयी
लग गयी चुप ज़बाने-शिकवा को अज़्रे - नागुफ़्तनी को भूल गयी
शाने - पैग़म्बरी नहीं पाते शाइरी शाइरी को भूल गयी
इत्तफ़ाक़ात हैं ज़माने के दोस्ती दोस्ती को भूल गयी
यह भी इक इश्क़ का करिश्मा है दुश्मनी दुश्मनी को भूल गयी
तेरी रंगीनी-ए-जमाल अफ़सोस इश्क़ की सादगी को भूल गयी
हस्ती-ओ-नेस्ती को भूल गयी आशिक़ी तो सभी को भूल गयी

तीर-हो-तार शामे-हिज्र फ़िराक़
इश्क़ की शोलगी को भूल गयी

---

१. मूर्ति बनाने का तरीका। २. जीवन का सन्देश। ३. कल्पना। ४. न्याय के अधिकार।

● ८८

ताज़गी सुब्हे - चमन में तेरे रुखसारों की
ओस में लौ इन्हीं भीगे हुए अंगारों की

सौंप देता है जिस अन्दाज़ से खुद को वो शोख़
साफ़ घातें इन अदाओं में हैं वटमारों की

मौत ने इश्क़ की रग - रग में सरायत[1] कर के
ज़िन्दगी और वढ़ा दी तेरे वीमारों की

हाय रे हाय तवस्सुम का तेरे सोजो-गुदाज़
जैसे आँसू में नहा जायें लवें तारों की

क्या मेरा हाल महब्बत में वहुत नाज़ुक है
पुरसिशें देर से खामोश हैं ग़मख्वारों की

लड़खड़ाते हैं तो अफ़लाक को लेते हैं सँभाल
लग्ज़िशें देख मय - ए - इश्क़ के सरशारों की

सुब्ह तक देखिए क्या रंगे - जहाँ हो ऐ दोस्त
शाम से नब्ज़ धुआँ है तेरे वीमारों की

नर्मियाँ जिन की खयाले-दिले-शाइर की हरीफ़
उन निगाहों में भी तो काट है तलवारों की

चलती फिरती हुई परछाइयाँ पड़ जाती हैं
दिले अफ़सुर्दा पँ अब भी तेरे रुखसारों की

साज़े - दिल गो तुझे टूटे हुए जुग बीत गये
अब भी आती हैं सदाएँ[2] तेरी झंकारों की

खम-व-खम गेसु-ए-शवरंग तेरी उम्र दराज़
कोई मीआद नहीं तेरे गिरफ़्तारों की

निगहे - नाज़ उठी औ' बहुत आहिस्ता उठी
हो गयीं फिर भी सिवा गर्दिशें सैयारों[3] की

घर लुटा कर जो तेरे ग़म में हुए खाना-वदोश[4]
मंज़िलें देखती हैं राह उन आवारों की

गरमी-ए-हुस्न, पसीने की झलक, वन्द खुले
उभरे सीने में लवें छिटके हुए तारों की

हर अदा या तो है पैग़ाम महब्बत का फ़िराक़
या हर अन्दाज़ में झंकार है तलवारों की

---

१. प्रवेश। २. आवाज़ें। ३. ग्रहों। ४. बेघर।

● ८९

मज़हब वालों को ये हसरत
कब दुनिया से कुफ़्[1] मिटेगा
मैं तो बस इतना सोच रहा हूँ कब इन्सान इन्सान बनेगा

यारो बाहम गुँथे हुए हैं
कायनात के बिखरे टुकड़े
एक फूल को जुंबिश[2] दोगे तो इक तारा काँप उठेगा

महकी हुई ठंडी रातों में
साज़े-तरब पर गीत खुशी के
गाओ लेकिन दुख भरे दिल का सोया हुआ घर जाग उठेगा

सोच रहा हूँ तेरी यादें
कब तक दिल को मला करेंगी
वह भी दिन आने वाला है जब यह सब कुछ भूल चुकेगा

दस्ते - नाज़नीं[3] को समझाओ
देखो इस को यूँ न उठाओ
भरा - भरा है साग़र दिल का छलक पड़ेगा छलक पड़ेगा

पंखुड़ियों के खिलते ही वो
ले के फुरेरी उड़ जाएँगे
गुंचे में हैं बन्द वो सपने जिन को फूल नहीं देखेगा

दुनिया अपनी मुसीबत में है
या फिर है वो अपनी खुशी में
हम जैसों की राम - कहानी कौन कहेगा कौन सुनेगा

आने वाली नस्लों को कुछ
नग़मे दे कर उठ जाऊँगा
बार बार गायेंगे लेकिन जी न भरेगा जी न भरेगा

खुशियाँ तुम तो मनाते होगे
बदली हुई दुनिया में यारो
लेकिन तुम को फ़िराक़े - हज़ीं भी याद आयेगा याद आयेगा

---

१. पाप। २. गति। ३. कोमल हाथ।

● ९० डरता हूँ कामयाबी - ए - तक़दीर
देख कर
यानी सितम - ज़रीफ़ी - ए - तक़दीर
देख कर

क़ालिब[२] में रूह फूँक दी
या ज़हर भर दिया
मैं मर गया हयात की तसवीर
देख कर

ख्वाबे-अदम से जागते ही
जी पें बन गयी
ज़हराबा - ए - हयात[३] की तासीर
देख कर

ये भी हुआ है अपने
तसव्वुर[४] में होके महू्व[५]
मैं रह गया हूँ आप की तसवीर
देख कर

सब मरहले-हयात के तै करके अब
फ़िराक़
बैठा हुआ हूँ मौत में ताख़ीर[६]
देख कर

---

१. भाग्य का अत्याचार। २. शरीर। ३. जीवन के विष। ४. कल्पना। ५. तल्लीन। ६. विलम्ब।

०
०
०
मं ज़ू मा त
० ०

आधी रात

(१)

सियाह पेड़ हैं अब आप अपनी परछाईं
ज़मीं से ता-महो-अंजुम[१] सुकूत[२] के मीनार
जिधर निगाह करें इक अथाह गुमशुदगी
इक-एक कर के फ़सुर्दा[३] चराग़ों की पलकें
झपक गयीं—जो खुली हैं, झपकने वाली हैं
झलक रहा है, पड़ा चाँदनी के दर्पन में
रसीले कैफ़[४] भरे मंज़रों का जागता ख़्वाब
—फ़लक पँ तारों को पहली जमाहियाँ आयीं

(२)

तमोलियों की दुकानें कहीं-कहीं हैं खुली
कुछ ऊँघती हुई बढ़ती है शाहराहों[५] पर
सवारियों के बड़े घुँघरुओं की झंकारें
खड़ा है ओस में चुपचाप हरसिंगार का पेड़
दुल्हन हो जैसे हया[६] की सुगन्ध से बोझल
ये मौजे-नूर[७], ये भरपूर ये खिली हुई रात
कि जैसे खिलता चला जाय इक सफ़ेद कँवल
सिपाहे-रूस हैं अब कितनी दूर बर्लिन से ?
जगा रहा है कोई आधी रात का जादू
छलक रही है खुमे-ग़ैब[८] से शराबे-वजूद[९]
फ़ज़ा-ए-नीमशबी,[१०] नर्गिसे-खुमारआलूद[११]
कँवल की चुटकियों में बन्द है नदी का सुहाग

१. चाँद-तारों तक। २. शान्ति। ३. बुझे हुए। ४. सुख। ५. आम रास्ता। ६. लज्जा। ७. रोशनी की लहर। ८-९. अस्तित्व की मदिरा। १०. आधीरात का वातावरण। ११. नींद में डूबी हुई नरगिस।

(३)

ये रस का सेज, ये सुकुमार ये सुकोमल गात
नयन - कमल की झपक, कामरूप का जादू
ये रसमसायी पलक की घनी - घनी परछाईं
फ़लक पँ बिखरे हुए चाँद और सितारों की
चमकती अँगुलियों से छिड़ के साज़े - फ़ितरत[१] के
तराने जागने वाले हैं—तुम भी जाग उठो !

(४)

शुआ - ए - मेह्र[२] ने यूँ इन को चूम - चूम लिया
नदी के बीच कुमुदनी के फूल खिल उट्ठे
न मुफ़लिसी हो तो कितनी हसीन है दुनिया !
ये झाँय - झाँय - सी रह-रह के एक झींगुर की
हिना की टट्टियों में नर्म सरसराहट - सी
फ़ज़ा के सीने में ख़ामोश सनसनाहट - सी
लटों में रात की देवी की थरथराहट - सी
ये कायनात[३] अब इक नींद ले चुकी होगी

(५)

ये मह्वे[४] - ख़्वाब हैं रंगीन मछलियाँ तहे - आब
कि हौज़े - सह्न में अब उन की चशमकें भी नहीं
ये सरनिगूँ[५] हैं सरे - शाख़ फूल गुड़हल के
कि जैसे बेबुझे अंगारे ठंडे पड़ जायें
ये चाँदनी है कि उमड़ा हुआ है रस-सागर
इक आदमी है कि इतना दुखी है दुनिया में

(६)

क़रीब चाँद के मँडला रही है इक चिड़िया
भँवर में नूर के करवट से जैसे नाव चले

---

१. प्रकृति का संगीत। २. सूर्य की रोशनी। ३. विश्व। ४. आराम कर रही। ५. झुका हुआ।

कि जैसे सीना - ए - शाइर में कोई ख्वाब पले
वो ख्वाब—साँचे में जिस के नयी हयात ढले
वो ख्वाब—जिस से पुराना निज़ामे-ग़म[1] बदले
कहाँ से आती है मदमालती लता की लपट
कि जैसे सैकड़ों परियाँ गुलाबियाँ छिड़कायें
कि जैसे सैकड़ों वन - देवियों ने झूले पर
अदा - ए - ख़ास से इक साथ बाल खोल दिये
लगे हैं कान सितारों के जिस की आहट पर
इस इन्क़लाब की कोई खबर नहीं आती
दिले - नुजूम[2] धड़कते हैं कान बजते हैं !

(७)

ये साँस लेती हुई कायनात ये शबे - माह[3] !
ये पुरसुकूँ[4] ये पुरअसरार[5] ये उदास समाँ !
ये नर्म - नर्म हवाओं के नीलगूँ[6] झोंके
फ़ज़ा की ओट में मुर्दों की गुनगुनाहट है
ये रात मौत की बेरंग मुस्कुराहट है
धुआँ - धुआँ से मनाज़िर[7] तमाम नमदीदा[8]
खुनुक धुँदलके की आँखें भी नीम - खाबीदा[9]
सितारे हैं कि जहाँ पर हैं आँसुओं का कफ़न
हयात पर्दा - ए - शब में बदलती है पहलू
कुछ और जाग उठा आधी रात का जादू
ज़माना कितना लड़ाई को रह गया होगा
मेरे खयाल में अब एक बज रहा होगा !

(८)

गुलों ने चादरे - शबनम से मुँह लपेट लिया
लबों पँ सो गयी कलियों की मुस्कुराहट भी

---

१. दुखद व्यवस्था। २. तारों के दिल। ३. पूर्णमासी की रात्रि। ४. शान्तिमय।
५. रहस्यमय। ६. नीले। ७. दृश्य। ८. भीगे-भीगे। ९. अधसोयी।

ज़रा भी सुंबुले - तर की लटें नहीं हिलतीं
सुकूते - नीमशबी की हदें नहीं मिलतीं
अब इन्क़लाब में शायद ज़्यादा देर नहीं !
गुज़र रहे हैं कई कारवाँ धुँदलके में—
सुकूते - नीमशबी है उन्हीं के पाँव की चाप
कुछ और जाग उठा आधी रात का जादू !

(९)

नयी ज़मीन नया आसमाँ नयी दुनिया
नये सितारे नयी गरदिशें नये दिन - रात
ज़मीं से ता-ब-फ़लक[1] इन्तज़ार का आलम
फ़ज़ा - ए - ज़र्द में धुँधले ग़ुबार का आलम
हयात मौतनुमा इन्तिशार[2] का आलम
है मौजे - दूद[3] कि धुँदली फ़ज़ा की नब्ज़ें हैं
तमाम ख़स्तगी - ओ - माँदगी, ये दौरे - हयात
थके-थके-से ये तारे थकी-थकी-सी ये रात
ये सर्द - सर्द ये बे जान फीकी - फीकी चमक
निज़ामे - सानियाँ[4] की मौत का पसीना है
ख़ुद अपने आप में ये कायनात डूब गयी
ख़ुद अपनी कोख से फिर जगमगा के उभरेगी
बदल के केचुली जिस तरह नाग लहराये !

(१०)

ख़ुनुक फ़ज़ाओं में रक़साँ हैं चाँद की किरनें
कि आबगीनों पॅ पड़ती है नर्म-नर्म फुआर
ये मौजे - ग़फ़लते - मासूम ये ख़ुमारे - बदन
ये साँस नींद में डूबी ये आँख मदमाती
अब आओ, मेरे कलेजे से लग के सो जाओ
ये पलकें बन्द करो और मुझ में खो जाओ !

---

१. आसमान तक। २. विशृंखलता। ३. धुवाँ की लहर। ४. दूसरी व्यवस्था।

परछाइयाँ

(१)

ये शाम आइना-ए-नीलगूँ ये नम ये महक
ये मंज़रों की झलक, खेत, बाग़, दरिया, गाँव
वो कुछ सुलगते हुए कुछ सुलगने वाले अलाव
सियाहियों का दबे पाँव आसमाँ से नुज़ूल[1]
लटों को खोल दे जिस तरह शाम की देवी
पुराने वक़्त के बरगद की ये उदास जटायें
क़रीबो-दूर ये गोधूल की उभरती घटायें
ये कायनात का ठहराव ये अथाह सुकूत !
ये नीम-तीरा फ़ज़ा रोज़े-गर्म का ताबूत[2]
धुआँ-धुआँ-सी ज़मीं है घुला-घुला-सा-फ़लक

(२)

ये चाँदनी ये हवाएँ ये शाखे-गुल की लचक
ये दौरे-बादा ये साज़े-ख़मोश फ़ितरत के
सुनाई देने लगी जगमगाते सीनों में
दिलों के नाज़ुको-शफ़्फ़ाफ़ आबगीनों[3] में
तेरे ख़याल की पड़ती हुई किरन की खनक

(३)

ये रात छनती हवाओं की सोंधी-सोंधी महक
ये खेल करती हुई चाँदनी की नर्म दमक
सुगन्ध रात की रानी की जब मचलती है
फ़ज़ा में रूहे-तरब करवटें बदलती है

---

१. प्रकट होना। २. वह सन्दूक़ जिस में शव बन्द किया जाता है। ३. कोमल और साफ़ प्यालों में।

ये रूप, सर से क़दम तक हसीन, जैसे गुनाह
ये आरिज़ों[1] की दमक, ये फ़ुसूने-चश्मे-सियाह
ये धज, न दे जो अजन्ता की सनअतों को पनाह
ये सीना, पड़ ही गयी देवलोक की भी निगाह
ये सरज़मीन, है आकाश की परस्तिशगाह[2]
उतारते हैं तेरी आरती सितारा - ओ - माह
सजल बदन की बयाँ किस तरह हो कैफ़ीयत
सरस्वती के बजाते हुए सितार की गत
जमाले - यार तेरे गुलसिताँ की रह - रह के
जबीने - नाज़ तेरी कहकशाँ की रह - रह के
दिलों में आइना - दर - आइना सुहानी झलक

(४)

ये छब ये रूप ये जोबन ये सज ये धज ये लहक
चमकते तारों की किरनों की नर्म-नर्म फुआर
ये रसमसाते बदन का उठान और ये उभार !
फ़ज़ा के आइने में जैसे लहलहाये बहार
ये बेक़रार ये बेअख़्तियार जोशे - नुमूद
कि जैसे नूर का फ़व्वारा हो शफ़क़-आलूद[3]
ये जल्वे पैकरे - शबताब[4] के ये बज़्मे - शहूद[5]
ये मस्तियाँ कि मये - साफ़ो - दुर्द सब वे बूद
खजिल हो लाले - यमन अज़्व-अज़्व की वो डलक

(५)

बस इक सितारा - ए - शंगर्फ़[6] की जबीं पें झमक
वो चाल जिससे लबालब गुलाबियाँ छलकें
सुकूँ - नुमा ख़मे - अबरू ये अधखुली पलकें

१. गालों। २. पूजा-स्थल। ३. ऊषा की लालिमा में डूबा हुआ। ४. रात का चमकता हुआ शरीर। ५. हसीनों की महफ़िल। ६. सिन्दूर।

हर-इक निगाह से ऐमन की विजलियाँ लपकें
ये आँख जिस में कई आसमाँ दिखाई पड़ें
उड़ा दें होश वो कानों की सादा-सादा लवें
घटाएँ वज्द में आयें ये गेसुओं की लटक

(६)

ये कैफ़ो - रंगे - नज़ारा ये विजलियों की लपक
कि जैसे कृश्न से राधा की आँख इशारे करे
वो शोख़ इशारे कि रब्बानियत[1] भी जाये झपक
जमाल सर से क़दम तक तमाम शोला है
सुकूनो - जुंबिशो - रम तक तमाम शोला है
मगर वो शोला कि आँखों में डाल दे ठंडक

(७)

ये रात ! नींद में डूबे हुए - से हैं दीपक
फ़ज़ा में बुझ गये उड़-उड़ के जुगनुओं के शरार
कुछ और तारों की आँखों का बढ़ चला है ख़ुमार
फ़सुर्दा छिटकी हुई चाँदनी का धुँधला ग़ुबार
ये भीगी - भीगी उदाहट ये भीगा - भीगा नूर !
कि जैसे चशमा - ए - ज़ुलमात में जले काफ़ूर
ये ढलती रात सितारों के क़ल्ब का ये गुदाज़
ख़ुनुक फ़ज़ा में तेरा शबनमी तबस्सुमे - नाज़
झलक जमाल की ताबीरे - ख़्वाबे - आइनासाज़[2]
जहाँ से जिस्म को देखें तमाम नाज़ो-नियाज़
जहाँ निगाह ठहर जाये, राज़ अन्दर राज़
सुकूते - नीमशबी[3], लहलहे बदन का निखार
कि जैसे नींद की वादी में जागता संसार

---

१ खुदाई। २. दर्पण बनाने वाले के स्वप्न का परिणाम। ३. आधी रात का सन्नाटा।

है बज़्मे - माह कि परछाइयों की बस्ती है
फ़ज़ा की ओट से वो ख़ामुशी बरसती है
कि बूँद - बूँद से पैदा हो गोशो - दिल में खनक

(८)

किसी ख़याल में है ग़र्क़ चाँदनी की चमक
हवाएँ नींद के खेतों में जैसे आती हों
हयातो - मौत में सरगोशियाँ - सी होती हैं
करोरों साल के जामे सितारे नमदीदा
सियाह गेसुओं के सांप नीम ख़ाबीदा
ये पिछली रात ये रग - रग में नर्म - नर्म कसक

कार्तिकी पूर्णिमा

सुकूते नीमशबी ने उठा लिया है सितार
फ़लक पे जल्वा-ए-अंजुम उसी की है झंकार
ये वक़्त ! चर्ख़े-बरीं[1] से ये बारिशे-अनवार[2]
ये रात ! चाँद-नगर से शुआओं का यें उतार
इसी तरह कभी गंगा फ़लक से उतरी थी
मिली थी शिव की जटाओं में पहली जा-ए-क़रार[3]
जहाँनुमा[4] है ये सय्याले-ख़्वाबे-फ़ितरत[5] भी
कि माहताब की देवी है आइना-ब-कनार
ये ठंडी-ठंडी हवाएँ ये रसमयी शबे-माह
ये भीगी-भीगी फ़ज़ाएँ, इस अबतरी के निसार
ये थरथरायी लवें आज शब-नमिस्ताँ की
ये कपकपाती भवें रात की ये कैफ़ ख़ुमार
ये ख़ामुशी है सरासर उसी के पाँव की चाप
धुँदलके हैं ग़मे-हस्ती के कारवाँ के ग़ुबार
हवाएँ नींद में हैं और माहे-ताबाँ की
शुआएँ बादा-ए-शबनम[6] को पी के हैं सरशार
खिला हुआ है जो महताब का सफ़ेद गुलाब
छलक रहा है कोई आबगीना-ए-सरशार
ये हरसिंगार का साया ये भीनी-भीनी महक
ये फूल झड़ते हैं या है तरावशे-अनवार[7]
ये रसमसायी हुई अध-खिली कली सरे-शाख़
है रंगो-बू के हिजाबों[8] में लाजवन्ती नार
बहुत ही धीमी है इस माहे-नीम माह[9] की आँच
ये आँच वो है जिसे कहिए कीमिया-आसार
फ़ज़ा में नीम इशारे उरूसे-फ़ितरत[10] के
ख़ुनुक फ़ज़ा की लचक है कि अबरू-ए-ख़मदार[11]

---

१. आकाश। २. रौशनी की वर्षा। ३. पनाह की जगह। ४. विश्वदर्शी। ५. प्रकृति के स्वप्न की मदिरा। ६. ओस की शराब। ७. रौशनी ज़ाहिर होना। ८. परदों। ९. आधे महीने का चाँद। १०. प्रकृति की दुल्हन। ११. टेढ़ी भवें।

हर - एक वर्ग किसे आइना दिखाता है
झलक रहा है वसद आबो - ताब रू - ए - निगार[१]
ये कैफ़े - नीमशबी ! इस से क्या कहे शाइर
किसी क़दर जो है ग़ाफ़िल किसी क़दर बेदार
हवाएँ लरिज़शे - मस्ताँ[२] फ़ज़ाएँ मुश्क़ - आलूद[३]
बू-ए-परीदा[४] है रम - दीदा[५] आहू - ए - तातार[६]
गुलों के शह्‌र में शबनम की दीपमाला है
है ख़ुशबुओं के चराग़ों की आगे पीछे - क़तार
उजाली रात है या कोई ख़्वाबे - सीमीं[७] है
उतर रहे हैं शुआओं के भेस में असरार[८]
ये जू - ए - शीर[९] पहाड़ों से हो के आती है
सरे - कनारे - कुहिस्ताँ[१०] खनक रहे हैं सितार
ये सज ये रूप सिजिल चाँदनी की देवी का
किसी दुल्हन का भी ऐसा रचाव है न सिंगार
पिघल रही है ये ख़ुन्की की आँच से चाँदी
ये ग़ुस्ले - नूर से निखरे हुए गुलो - गुलज़ार
ये गूँजती हुई ख़ामोशी - ए - शबे - आखिर
जो कह रही है हर-इक नेको-बद[११] से पाँव पसार
है ख़्वाबगाह कि आईना शब-नमिस्ताँ का
कि गहरी नींद में है कायनाते - नक़्शो - निगार
ये नीमशब ये हम-आग़ोशी-ए-ज़मीनो-फ़लक[१२]
हर-एक क़तरा-ए-शबनम है आज मह-ब-कनार
फ़लक से ता - ब - ज़मीं[१३] मोजिज़े[१४] उतरते हैं
ज़मी से ता - ब - फ़लक शब है जादू - ए - बेदार
सिरे से तपते हुए माथे पड़ गये ठंडे
हर - इक जबीं पँ खिले नींद के गुले - बेख़ार
फ़लक पँ खेत कर आयी है चाँदनी हरसू
उफ़ुक़ से ता - ब - उफ़ुक ख़्वाबे - नूर के आसार

---

१. सुन्दर चेहरा। २. मस्तों की लड़खड़ाहट। ३. कस्तूरी की सुगन्ध से भरा। ४. सुगन्ध का उड़ना। ५. भागी हुई। ६. तातार की हिरन। ७. रूपहला स्वप्न। ८. रहस्य। ९. दूध की नहर। १०. पहाड़ के किनारे। ११. शुभ-अशुभ। १२. ज़मीन और आसमान का मिलना। १३. ज़मीन तक। १४. चमत्कार।

ज़मी से ता - व - फ़लक दूर तक वहद्दे निगाह
चहार[१] सम्त ये खुनकी - ओ - नूर[२] के कुहसार
ये खुशबुओं का धुवाँ मिस्ले - दूदे - काफ़ूरी[३]
ये चाँद - रात ये ठंडक ये नीद का संसार
फ़ज़ा में जैसे हो इक गूँज एक आहट - सी
सदा है शब के परों की ये अनसुनी झंकार
फ़ज़ा में नरमा - ए - महताब के हैं कोमल सुर
जो बाग़ो - राग़ पें पड़ती है नर्म - नर्म फुआर
फ़ुसूने - नीमशबी[४] का ये जागता जादू
महे - तमाम शबिस्ताँ का ताला - ए - बेदार[५]
उफ़ुक़ से ता - व - उफ़ुक़ जैसे एक चादरे - नूर
उफ़ुक़ से ता - व - उफुक़ इक तमव्वुजे - असरार[६]
खड़े हैं अबरक़े - सय्याल[७] के जो ये मीनार
ये हैं जुलूसे - शबे - माह[८] के अलमबरदार[९]
फ़ज़ा - ए - नीमशबी[१०] है तमाम कहकशाँ[११]
पिघलते जाते हैं हीरों के अनगिनत मीनार
ये रंगो - नूर के फ़व्वारे हैं कि रक़्से - नुजूम[१२]
फ़ज़ा - ए - सर्द में हर सम्त छूटते हैं अनार
भँवर से पड़ते चले दूधिया फ़ज़ाओं में
कि बनते जाते हैं गिरदाबे - नूर[१३] सिलसिलावार
गुलों के गिर्द जो पिघली हुई लकीरें हैं
ये चाँदनी की सुबुक[१४] उँगलियाँ है मीनाकार
ये चन्द्रमा है कि माथे पें कृश्न के है तिलक
ये जू - ए - नूर[१५] है राधा का जल्वा - ए - अनवार
ये चाँदनी है कि बारीक चादरे - ग़फ़लत[१६]
कि गहरी नींद में हैं चारसू[१७] दरो - दीवार
ये झाड़ियों में जो शबनम की झमझमाहट है
किसी के पायलों की है ये नुक़रई[१८] झंकार

---

१. चारों। २. ठंडक और रौशनी। ३. कपूर के धुवें की तरह। ४. आधी रात का जादू। ५. जागता हुआ भाग्य। ६. रहस्यों का मौजें मारना। ७. चमकती हुई शराब। ८. चाँदनी रात का जुलूस। ९. झंडा उठाने वाले। १०. आधी रात का वातावरण। ११. आकाशगंगा। १२. सितारों का नृत्य। १३. रौशनी के भँवर। १४. नाज़ुक। १५. रौशनी की नहर। १६. विस्मय की चादर। १७. चारों तरफ़। १८. रजतमयी।

दयारे - हिन्द की ऐ पूर्णिमा ! तेरी आँखें
हैं अह्द - अह्द[1] के देखे हुए चढ़ाव - उतार
हवाएँ हैं तेरे दामन की इक पयामे - सुकूँ
कि सो गये तेरे पहलू में काफ़िरो - दींदार
करोरों साल पुरानी भी हो के तू है नयी
हज़ारों दौरे - फ़लक तेरी ताज़गी पे निसार
हज़ारों जुग तेरी पलकों के साये में गुज़रे
बता रहा है मुझे तेरी अँखड़ियों का ख़ुमार
महे - तमाम[2] तेरी आरती का दीपक है
सितारे क्या तेरे मण्डप के हैं ये वन्दनवार
गुनूदगी का ये आलम ये महवीयत ये कैफ़
उजाली रात है इक दास्ताने - ख़्वाब - आसार
ख़ुनुक फ़ज़ाओं में सरगोशियों का आलम है
हर - इक लचकती किरन की ये नर्मी-ए-गुफ़्तार
सुकूते - नाज़ की धीमी दमक ये होटों की लव
हर - एक बात नज़र आ रही है दूर - अज़् - कार[3]
दफ़ीना[4] है तेरा सीना हमारे माज़ी[5] का
जो है हमारे लिए एक दौलते - बेदार
हमारी फ़िक्र में फ़न में तेरा भी हिस्सा है
रही है हिन्द की तारीख़ की तू इक किरदार
शऊरे - फ़िक्रो - फ़ने - हिन्द की ये नर्म लचक
ये ठंडक और सुकूँ, सब में है तेरी चमकार
ये एतदालो - तवाज़ुन[6] मिज़ाजे भारत का
तेरे तुफ़ैल[7] मिली ये दुरुस्ती - ए - किरदार
महे-तमाम से अमृत बरस रहा है फ़िराक़
छलक रही है फ़ज़ा मिस्ले - सागरे - सरशार[8]

---

१. युग-युग। २. पूरा चाँद। ३. असम्भव। ४. गुप्तधन। ५. अतीत। ६. समानता और संतुलन। ७. द्वारा। ८. भरे हुए प्याले की तरह।

तराना-ए-इश्क़

०

भोजपुरी के एक प्रसिद्ध लोकगीत से प्रभावित होकर,
उसी अन्दाज़ में यह नज़्म कही गयी है :

०

भोजपुरी लोकगीत की प्रथम पंक्ति :

जलवा चमके उजरी मछरिया रन चमके तर्वार
सभवा में चमके मोरे सइयाँ की पगड़िया सेजिया प बिंदिया हमार

इसी अन्दाज़ में यह नज़्म :

जलवा - ए - गुल को बुलबुल बहुत है शम्अ को गिरया-ए-शाम[1]
बादे - बहारी गुल को बहुत है मुझ को तेरा नाम
बिजली चमके काली घटा में जाम में आतिशे-सर्द[2]
चमके राख जोगी की जटा में मुझ में तेरा दर्द
बल न छुटे तेरे बालों से और नय[3] से फ़रियाद
पल भर मन न छुटे कालों से मुझ से तेरी याद
शाख़ पें शोला-ए-गुल की लपक हो चर्ख़[4] पें अन्जुमो-माह
दुनिया पर सूरज की चमक हो मुझ पर तेरी निगाह

---

१. संध्या का रोना । २. ठंडी आग । ३. बाँसुरी । ४. आसमान ।

हुस्न की देवी से

ये रंग - रंग जवानी, चमन - चमन पैकर
ये ग़ुंचा - ग़ुंचा तवस्सुम, क़दह - क़दह गुफ़्तार
निगाह फूल, लवे - नाज़ शोला - ए - ऐनी
शबाव मयकदा वरदोश गुलसिताँ ब - कनार

ये है सदा की खनक या तरन्नुमे - सहरी
ये गाम - गाम चराग़ाँ ये गर्मी - ए - रफ़्तार
जमाही लेते हुए भी पियालाज़न हर अज़्व
तमाम नश्शा ज़े - सर - ता - क़दम तमाम ख़ुमार

बरों में आइना - दर - आइना वहारे - जिनाँ
रगों में रागनियों की मिली - जुली झंकार
तनाव मद भरे सीने का ये कमर का कटाव
ख़ुतूते - जिस्म सारंगी के है खिंचे हुए तार

इन अँखड़ियों में जलें जुर्मे - अव्वलीं के चराग़
लपक गुनाह के शोलों की अवरू - ए - ख़मदार
ये सब सही मगर अल्लाह रे ! ये मासूमी
गुनह को भी करें पाकीज़ा हुस्न के अतवार

ये अंग-अंग में रस जस नज़र-नज़र में दुआयें
ये वात - बात में अमृत की हलकी - हलकी फुआर
फ़राज़े - सीना पें रखशिन्दा दो महे - कामिल
वो जिस्म, चाँदनी में जैसे छूटता हो अनार

क़दे - जमील है या कामदेव की है कमाँ
नज़र के फूल गुँधे, तीर करते जाते हैं वार
खिला - खिला शफ़क़िस्ताने-सुब्हे - पैकरे - नाज़
ये तह - बतह मू - ए - ज़ुल्फ़े - सियाह अब्रे - वहार

खमे - ज़क़न[1] है कि तर्शा हुआ कोई कौंदा
अज़ल के खिलते हुए गुलसिताँ गुले - रुख़सार
उफ़ुक़ से कनपटियों के पवें - सी फटती हुई
दमकती लौहे - जबीं साफ़ मतला - ए - अनवार

सुडौलपन है ग़ज़ब साअदे - बिलूरीं[2] में
कि ढल के साँचे में शोले को जैसे आये क़रार
लक़ा - ए - नाज़[3] पॅ परछाइयाँ - सी पड़ती हुई
ज़हे ये जलवों की तज्दीद सूरते - तकरार

हर एक अज़्व है आईना - ए - रुखे - यज़दाँ
बदन है शीशागराने - ग़याव[4] का शहकार
खरामे - नाज़ वो ऊँची करे जो सत्हे - हयात
निगाहे - नाज़ बढ़ाये जो ज़िन्दगी का वक़ार

ये चेहरा सुब्हे - बनारस, ये जुल्फ़ शामे - अवध
कमन्दे - पैकरे - नाजुक फ़ज़ा - ए - खुल्दशिकार
ज़े - फ़र्क़ - ता - ब - क़दम ये तनासुबे - आज़ा[5]
कि बुततराशी - ए - यूनानो - पारसो - हिन्द निसार

लताफ़ते - क़दे - राना रियाज़ते - तख़लीक़
सफ़ा - ए - आरिज़े - तर[6] ज़िन्दगी की आइनादार
वहीं वो खा के पछाड़ें चमन में तोड़े दम
बदन के लोच को देखे अगर नसीमे - बहार

नज़र के सामने है हुस्न आँख ओझल भी
तमाम लज़्ज़ते - दीदारो - हसरते - दीदार
जो सुन सके कोई हर अज़्व बात करता है
नज़र - नज़र है तकल्लुम अदा - अदा गुफ़्तार

इन उँगलियों के इशारे से जल उठे हैं कँवल
है इश्वा - इश्वा ज़ियापाश अदा - अदा गुलनार
गवाहे - दीदा - ए - मुश्ताक़ चेहरा है हर अज़्व
जहाँ से देखिए पैकर तमाम रू - ए - निगार

---

१. ठोड़ी। २. काँच जैसी बाँहें। ३. कोमल शरीर। ४. न दिखाई देने वाले शिल्पी।
५. अंग[illegible] ६. भीगे हुए गालों की सुन्दरता।

कशिश है हुस्न की या मर्जा-ए-हुजूमे-निगाह
हर अंग अरसा-ए-तंगस्तो-मर्दुमाँ बिस्यार[1]
शबाब रंग पॅ है बोलता है तूती-ए-नाज़
सदा फड़कती रगों में लहू की ये चहकार

बदन में सर से क़दम तक चटकती हैं कलियाँ
ज़हे-तबस्सुमे-हर-अज़्व रश्के-सुब्हे-बहार
नज़ाकते-ख़ते-गर्दन सुनहरी हल्क़ा-ए-नूर
लताफ़ते-तने-राना फ़ुनून का मेयार

न आइने की ज़रूरत न चश्मे-हैराँ की
बजा-ए-ख़ुद तने-रंगीं है जन्नते-दीदार
बसी किरन है वो आँखों में जिस की ताब न लायँ
फ़रिश्ते, इश्क़ से जिन को नहीं ज़रा सरो-कार

जमाल है कि मुजस्सम खिंची हुई इक अलाप
निशाने-नग़मा है एक-एक ख़त्त-जिस्मे-निगार
हिला-मिला के भी जिस को कोई न जान सका
निगाहे-नाज़ वो मानूसे-आलमे-असरार

निगाहे-शोख़ में सदहा मतालिबे-रंगीं
सुकूते-नाज़ में सदहा मआनी-ए-तहदार
ख़ुदा भी सोचे जो शकलों की इस्तिलाहों में
यही नुक़ूशे-बदन होंगे सरमदी[2] अफ़्कार

ख़याल के भी तो लफ़्ज़ों में अर्ज़ो-तूल[3] नहीं
इन्हीं के मिलने से पैदा हुआ ये जिस्मे-निगार
शबे-विसाल कटे फिर भी ये कुँवारापन
तमाम ग़ुंचा-सिफ़त है खिला हुआ गुलज़ार

ये बेख़ुदी-ए-नज़र, ये फ़ुसूनकारी-ए-हुस्न
ये ख़्वाबनाकी ये जलवा-ए-जादू-ए-बेदार
सदा-ए-नाज़ में जैसे चमक सितारों की
वो बात करने में आवाज़ का चढ़ाव-उतार

---

१. आदमियों की तादाद ज़्यादा है और जगह तंग है। २. सुरीली। ३. लम्बाई और चौड़ाई।

कनार[1] में भी उसे ले के ढूँढ़ते रहिए
सिपुर्दगी के भी पहलू में सद अदा-ए-फ़रार
फ़ज़ाएँ चौंक उठें उस की जुंबिशे-लब पर
पयामे-सरसरी-ए-हुस्न ज़िन्दगी की पुकार

पयामे-वहदते-इनसानियत वो आँखों में
कि कुफ़्रो-दीन भुला बैठे काफ़िरो-दीदार
ये दीदे-हुस्न के लम्हे-बरस-बरस के हैं दिन
मनाये जायें व-यकवक़्त जैसे कुल त्योहार

हर-इक निगाह में अन्देशाहाए-दूरो-दराज़
चे-खुशबुवद कि बर आयद बयक करिश्मा-दो-कार
मियाने-दारे-फ़ना हुस्न के तसव्वुर का
है नीम-लम्हा भी इक वक्फ़ा-ए-बक़ा[2] आसार

वही है हुस्न जो तारीख़ को मआनी दे
वही है इश्क़ जो बन जाये जेवरे-किर्दार
उसी के ज़ेरे-निगह पल रही हैं तहज़ीबें
रिदा-ए-नाज़ तमद्दुन की है अलम-बर्दार

जो दस्ते-नाज़ छुए मर्द की जबीने-ग़र्मी
करे वो हर शिकने-कर्ब ज़िन्दगी हमवार
करें न अज़मते औरत का इन से अन्दाज़ा
तमाम इल्मो-अमल उस की मामता पें निसार

वही तो मानी-ए-मेराज है जो क़दमों पर
झुकाये सर को तो ऊँचा हो मर्द का पिन्दार
ख़ुदा गवाह कि औरत है मलका-ए-आफ़ाक़
ये मेह्रो-माहो-कवाकिब सब उस के बाज-गुज़ार

उसी को हम तो ख़ुदा की सँवार कहते हैं
वो दिलनवाज़ अदा से नज़र की इक फटकार
जबीं से ता-कफ़े-पा-रूप यूसुफ़िस्ताँ है
वो चेहरे आये नज़र जिस्म है कि शहरे-निगार

---

१. पहलू। २. [illegible] का समय।

जमाल पलता रहा है शऊरे-यज़्दाँ में
नसीबे-इश्क़ की सूरत पकड़ गये अफ़्कार
डरा-डरा-सा हूँ मैं अपनी खुशनसीबी पर
कि उस को छीन न ले मुझ से गुम्बदे दव्वार

सुनाऊँ क्या मैं नदीम! अपनी दास्ताने-हयात
कि शहें-दोज़खो-जन्नत रहे हैं लैलो-नहार
फ़िराक़ हम तो कहेंगे हयात पर ईमाँ
अभी जो ला न सके उस को देख लें इक बार

शामे-अयादत

[अगस्त, १९४३ ई० में सिविल अस्पताल, इलाहाबाद, में बिस्तरे-अलालत से]

ये कौन मुस्कुराहटों का कारवाँ लिये हुए
शबाबो-शेरो-रंगो-नूर का धुआँ लिये हुए
धुआँ कि बर्क़े-हुस्न का दमकता शोला है कोई
चटीली ज़िन्दगी की शादमानियाँ लिये हुए
लबों से पंखड़ी गुलाब की हयात माँगे है
कँवल - सी आँख सौ निगाहे - मेहरबाँ लिये हुए
क़दम-क़दम पे दे उठी है लौ ज़मीने-रहगुज़र
अदा-अदा में बेशुमार बिजलियाँ लिये हुए
निकलते - बैठते दिनों की आहटें निगाह में
रसीले होंट फ़स्ले - गुल की दास्ताँ लिये हुए
ख़ुतूते-रुख़[1] में जलवागर वफ़ा के नक़्श सर-बसर
दिले-ग़नी में कुल 'हिसाबे-दोस्ताँ' लिये हुए
वो मुस्कुराती आँखें जिनमें रक़्स करती है बहार
शफ़क़ की, गुल की बिजलियों की दास्ताँ लिये हुए
अदा-ए-हुस्न बर्क़पाश शोलाज़न नज़ारासोज़
फ़ज़ा - ए - हुस्न ऊदी - ऊदी बिजलियाँ लिये हुए
जगाने वाले नग़मा-ए-सहर लबों पे मोजज़न[2]
निगाहें नींद लाने वाली लोरियाँ लिये हुए
वो नर्गिसे-सियाह नीमबाज़ मयकदा - बदोश
हज़ार मस्त रातों की जवानियाँ लिये हुए
तग़ाफ़ुलो-ख़ुमार[3] और बेख़ुदी के ओट में
निगाहें इक जहाँ की होशियारियाँ लिये हुए
हरी-भरी रगों में वो चहकता-बोलता लहू
वो सोचता हुआ बदन ख़ुद इक जहाँ लिये हुए

---

१. चेहरे की रेखाएँ। २. लहरें मारता हुआ। ३. उपेक्षा और नशा।

(३)

नये ज़माने में अगर उदास ख़ुद को पाऊँगा
ये शाम याद करके अपने ग़म को भूल जाऊँगा
अयादते-हबीब[1] से वो आज ज़िन्दगी मिली
ख़ुशी भी चौंक-चौंक उठी तो ग़म की आँख खुल गयी
अगरचे डॉक्टर ने मुझको मौत से बचा लिया
पर उस के बाद उस निगाह ने मुझे जिला लिया
निगाहे-यार तुझ से अपनी मंज़िलें मैं पाऊँगा
तुझे जो भूल जाऊँगा तो राह भूल जाऊँगा

(४)

क़रीब-तर मैं हो चला हूँ दुख की कायनात से
मैं अजनबी नहीं रहा हयात से ममात[2] से
वो दुख सहे कि मुझ पें खुल गया है दर्दे-कायनात
है अपने आँसुओं से मुझ पें आईना ग़मे-हयात
ये बेक़ुसूर जानदार दर्द झेलते हुए
ये ख़ाको-ख़ूँ के पुतले अपनी जाँ पें खेलते हुए
वो ज़ीस्त[3] की कराह जिस से बेक़रार है फ़ज़ा
वो ज़िन्दगी की आह जिस से काँप उठती है फ़ज़ा
कफ़न है आँसुओं का दुख की मारी कायनात पर
हयात क्या इन्हीं हक़ीक़तों से होना बेख़बर
जो आँख जागती रही है आदमी की मौत पर
वो अब्रे-रंगरंग को भी देखती है सादा-तर
सिखा गया है दुख मेरा परायी पीर जानना
निगाहे-यार थी यहाँ भी आज मेरी रहनुमा[4]
यही नहीं कि आज मुझको ज़िन्दगी नयी मिली
हक़ीक़ते-हयात मुझ पें सौ तरह से खुल गयी

---

१. मित्रोंके उपचार। २. मृत्यु। ३. ज़िन्दगी। ४. राह बताने वाला।

गवाह है ये शाम और निगाहे-यार है गवाह
खयाले-मौत को मैं अपने दिल में अब न दूँगा राह
जियूँगा, हाँ जियूँगा ! ऐ निगाहे-आश्ना-ए-यार
सदा सुहाग ज़िन्दगी है और जहाँ सदाबहार

(५)

अभी तो कितने नाशुनीदा[1] नग़्म-ए-हयात हैं
अभी निहाँ दिलों से कितने राज़े-कायनात हैं
अभी तो ज़िन्दगी के नाचशीदा[2] रस हैं सैकड़ों
अभी तो हाथ में हम अह्ले-ग़म के जस हैं सैकड़ों
अभी वो ले रही है मेरी शाइरी में करवटें
अभी चमकने वाली हैं छिपी हुई हक़ीक़तें
अभी तो वह्-रो-वर पँ सो रही हैं मेरी वो सदायें
समेट लूँ उन्हें तो फिर वो कायनात को जगायें
अभी तो रूह बन के ज़र्रे-ज़र्रे में समाऊँगा
अभी तो सुब्ह बन के मैं उफ़ुक़ पँ थरथराऊँगा
अभी तो मेरी शाइरी हक़ीक़तें लुटायेगी
अभी मेरी सदा-ए-दर्द इक जहाँ पँ छायेगी
अभी तो आदमी असीरे-दाम है ग़ुलाम है
अभी तो ज़िन्दगी सद इन्क़लाब का पयाम है
अभी तमाम ज़ख्मो-दाग़ है तमद्दुने-जहाँ
अभी रुख़े-बशर पँ हैं वहीमियत[3] की झाइयाँ
अभी मशीय्यतों[4] पँ फ़त्ह पा सका नहीं बशर
अभी मुक़द्दरों को बस में ला सका नहीं बशर
अभी तो इस दुखी जहाँ में मौत ही का दौर है
अभी तो जिस को ज़िन्दगी कहें वो चीज़ और है
अभी तो ख़ून थूकती है ज़िन्दगी बहार में
अभी तो रोने की सदा है नग़्मा-ए-सितार में
अभी तो उड़ती हैं रुखे - बहार पर हवाइयाँ
अभी तो दीदनी हैं हर चमन की बे-फ़ज़ाइयाँ

---

१. जो सुने न गये हों। २. जो चखे न हों। ३. जंगलीपन, बर्बरता। ४. ईश्वर की इच्छा।

अभी फ़ज़ा-ए-दह्र लेगी करवटों पॅ करवटें
अभी तो सोती हैं हवाओं की वो सनसनाहटें
कि जिन को सुनते ही हुकूमतों के रंगे-रुख उड़ें
चपेटें जिन की सर्कशों की गरदनें मरोड़ दें
अभी तो सीना-ए-वशर में सोते हैं वो ज़लज़ले
कि जिन के जागते ही मौत का भी दिल दहल उठे
अभी तो वत्ने-ग़ैब[1] में है उस सवाल का जवाव
खुदा-ए-खैरो-शर भी ला नहीं सका था जिस की ताव
अभी तो गोद में हैं देवताओं की वो माहो-साल
जो देंगे बढ़ के वर्क़े-तूर से हयात को जलाल
असी रगे-जहाँ में ज़िन्दगी मचलने वाली है
अभी हयात की नयी शराव ढलने वाली है
अभी छुरी सितम की डूव कर उछलने वाली है
अभी तो हसरत इक जहान की निकलने वाली है
अभी तो घन-गरज सुनाई देगी इन्क़लाव की
अभी तो गोश-वर-सदा है वज़्म आफ़ताव की
अभी तो पूँजीवाद को जहान से मिटाना है
अभी तो सामराजों को सज़ा-ए-मौत पाना है
अभी तो दाँत पीसती है मौत शह्रयारों[2] की
अभी तो खूँ उतर रहा आँखों में सितारों की
अभी तो इश्तराकियत के झंडे गड़ने वाले हैं
अभी तो जड़ से कुश्तो-खूँ के नज़्म उखड़ने वाले हैं
अभी किसानो - कामगार राज होने वाला है
अभी वहुत जहाँ में कामकाज होने वाला है
मगर अभी तो ज़िन्दगी मुसीवतों का नाम है
अभी तो नींद मौत की मेरे लिए हराम है
ये सब पयाम इक निगाह में वो आँख दे गयी
वयक नज़र कहाँ-कहाँ मुझे वो आँख ले गयी

---

१. भेद के गर्भ में, छिपा हुआ । २. राजाओं । ३. समाजवाद ।

जुगनू

[बीस बरस के उस नौजवान के जज़्बात, जिस की माँ उसी दिन मर गयी जिस दिन वह पैदा हुआ]

ये मस्त-मस्त घटा ये भरी-भरी बरसात
तमाम हद्दे-नज़र तक घुलावटों का समाँ !
फ़ज़ा-ए-शाम में डोरे-से पड़ते जाते हैं
जिधर निगाह करें कुछ धुआँ-सा उठता है
दहक उठा है तरावत की आँच से आकाश
ज़े-फ़र्श-ता-फ़लक अँगड़ाइयों का आलम है
ये मद भरी हुई पुर्वाइयाँ सनकती हुई
झिंझोड़ती है हरी डालियों को सर्द हवा
ये शाख़सार के झूलों में पेंग पड़ते हुए
ये लाखों पत्तियों का नाचना ये रक़्से-नबात[१]
ये बेख़ुदी-ए-मसर्रत ये वालहाना रक़्स
ये ताल-सम ये छमाछम—कि कान बजते हैं
हवा के दोश पँ कुछ ऊदी-ऊदी शक्लों की
नशे में चूर-सी परछाइयाँ थिरकती हुई
उफ़ुक़ पँ डूबते दिन की झपकती हैं आँखें
ख़मोश सोज़े-दरूँ[२] से सुलग रही है ये शाम !

मेरे मकान के आगे है एक सह्ने-वसीअ[३]
कभी वो हँसती नज़र आती है कभी वो उदास
उसी के बीच में है एक पेड़ पीपल का
सुना है मैं ने बुज़ुर्गों से ये कि उम्र इस की
जो कुछ न होगी तो होगी कोई छियानवे साल
छिड़ी थी हिन्द में जब पहली जंगे-आज़ादी

१. वनस्पतियों का नाच। २. हृदय की जलन। ३. विशाल दालान।

जिसे दवाने के वाद उस को ग़द्र कहने लगे
ये अह्ले-हिन्द भी होते हैं किस क़दर मासूम[1] !
वो दारो-गीर वो आज़ादी-ए-वतन की जंग
वतन से थी कि ग़नीमे-वतन[2] से ग़द्दारी
बिफर गये थे हमारे वतन के पीरो-जवाँ[3]
दयारे-हिन्द में रन पड़ गया था चार तरफ़
उसी ज़माने में, कहते हैं, मेरे दादा ने
जव अरज़े-हिन्द सिंची ख़ून से 'सपूतों' के
मियाने-सह्न लगाया था ला के इक पौदा
जो आबो-आतशो-ख़ाको-हवा से पलता हुआ
ख़ुद अपने क़द से वजोशे-नुमूँ निकलता हुआ
फ़ुसूने-रूहे-नवाती रगों में चलता हुआ
निगाहे-शौक़ के साँचों में रोज़ ढलता हुआ

सुना है रावियों से दीदनी[4] थी उस की उठान
हर-इक के देखते ही देखते चढ़ा पर्वान
वही है आज ये छतनार पेड़ पीपल का
वो टहनियों के कमण्डल लिये, जटाधारी
ज़माना देखे हुए है ये पेड़ बचपन से
रही है इस के लिए दाख़िली कशिश मुझ में
रहा हूँ देखता चुपचाप देर तक उस को
मैं खो गया हूँ कई बार इस नज़ारे में
वो उस की गहरी जड़ें थीं कि ज़िन्दगी की जड़ें
पसे-सुकूने-शजर कोई दिल धड़कता था
मैं देखता था कभी इस में ज़िन्दगी का उभार
मैं देखता था उसे हस्ती-ए-बशर की तरह
कभी उदास, कभी शादमा, कभी गम्भीर !

---

१. निश्चल। २. देश के दुश्मन। ३. बूढ़े-जवान। ४. देखने योग्य।

फ़ज़ा का सुरमई रंग और हो चला गहरा
घुला - घुला - सा फ़लक है धुआँ - धुआँ - सी है शाम
है झुटपुटा की कोई अज़दहा है मायले - ख़्वाब
सुकूते - शाम में दरमान्दगी[1] का आलम है
रुकी - रुकी - सी किसी सोच में है मौजे - सबा
रुकी - रुकी - सी सफ़ें मलगजी घटाओं की
उतार पर है सरे - सहन रक़्स पीपल का
वो कुछ नहीं है अब इक जुंबिशे - ख़फ़ी के सिवा
ख़ुद अपनी कैफ़ियते - नीलगूँ में हर लहज़ा
ये शाम डूबती जाती है छिपती जाती है
हिजाबे - वक़्त सिरे से है बेहिसो - हरकत
रुकी - रुकी दिले - फ़ितरत की धड़कनें यकलख़्त
ये रंगे - शाम कि गर्दिश ही आसमाँ में नहीं
बस एक वक़्फ़ा - ए - तारीक, लम्हा - ए - शहला
समा में जुंबिशे - मुबहम - सी कुछ हुई, फ़ौरन
तुली घटा के तले भीगे - भीगे पत्तों से
हरी - हरी कई चिंगारियाँ - सी फूट पड़ीं
कि जैसे खुलती - झपकती हों बेशुमार आँखें
अजब ये आँख - मिचौली थी नूरो - ज़ुलमत[2] की
सुहानी नर्म लवें देते अनगिनत जुगनू
घनी सियाह ख़ुनुक पत्तियों के झुरमुट से
मिसाले - चादरे - शबताब जगमगाने लगे
कि थरथराते हुए आँसुओं से साग़रे - शाम
छलक - छलक पड़े जैसे बग़ैर सान - गुमान
बतूने - शाम[3] में इन ज़िन्दा क़ुमक़ुमों की चमक
किसी की सोयी हुई याद को जगाती थी—
वो बेपनाह घटा वो भरी - भरी बरसात
वो सीन देख के आँखें मेरी भर आती थीं

---

१. थकन २. अँधेरा - रोशनी। ३. शाम के बीच में।

मेरी हयात ने देखी हैं बीस बरसातें
मेरे जनम ही के दिन मर गयी थी माँ मेरी
वो माँ कि शक्ल भी जिस माँ की मैं न देख सका
जो आँख भर के मुझे देख भी सकी न, वो माँ
मैं वो पिसर हूँ जो समझा नहीं कि माँ क्या है
मुझे खिलाइयों और दाइयों ने पाला था
वो मुझ से कहती थीं जब घिर के आती थी बरसात
जब आसमान में हरसू[1] घटाएँ छाती थीं
बवक़्ते - शाम जब उड़ते थे हर तरफ़ जुगनू
दिये दिखाते हैं ये भूली भटकी रूहों को !
मज़ा भी आता था मुझ को कुछ उन की बातों में
मैं उन की बातों में रह-रह के खो भी जाता था
पर उस के साथ ही दिल में कसक-सी होती थी
कभी - कभी ये कसक हूक बन के उठती थी

यतीम[2] दिल को मेरे ये खयाल होता था
ये शाम मुझ को बना देती काश ! इक जुगनू
तो माँ की भटकी हुई रूह को दिखाता राह
कहाँ-कहाँ वो बिचारी भटक रही होगी !
कहाँ - कहाँ मेरी ख़ातिर भटक रही होगी !
ये सोच कर मेरी हालत अजीब हो जाती
पलक की ओट में जुगनू चमकने लगते थे
कभी-कभी तो मेरी हिचकियाँ - सी बँध जातीं
कि माँ के पास किसी तरह मैं पहुँच जाऊँ
और उस को राह दिखाता हुआ मैं घर लाऊँ
दिखाऊँ अपने खिलौने दिखाऊँ अपनी किताब
कहूँ कि पढ़ के सुना तू मेरी किताब मुझे
फिर उस के बाद दिखाऊँ उसे मैं वो कापी
कि टेढ़ी - मेढ़ी लकीरें बनी थीं कुछ जिस में

---

१. चारों तरफ़। २. अनाथ।

ये हर्फ़ थे जिन्हें लिक्खा था मैं ने पहले - पहल
दिखाऊँ फिर उसे आँगन में वो गुलाव की वेल
सुना है जिस को उसी ने कभी लगाया था
ये जब की बात है जब मेरी उम्र ही क्या थी
नज़र से गुज़री थीं कुल चार - पाँच बरसातें !

गुज़र रहे थे महो - साल और मौसम पर
हमारे शहर में आती थी घिर के जब बरसात
जब आसमान में उड़ते थे हर तरफ़ जुगनू
हवा की मौजे - रवाँ पर दिये जलाये हुए
फ़ज़ा में रात गये जब दरख़्त पीपल का
हज़ारों जुगनुओं से कोहे - तूर बनता था
हज़ारों वादी - ए - ऐमन थीं जिस की शाख़ों में
ये देख कर मेरे दिल में ये हूक उठती थी
कि मैं भी होता इन्हीं जुगनुओं में इक जुगनू
तो माँ की भटकी हुई रूह को दिखाता राह
वो माँ, मैं जिस की महब्बत के फूल चुन न सका
वो माँ, मैं जिस की महब्बत के बोल सुन न सका
वो माँ, कि भींच के जिस को कभी मैं सो न सका
मैं जिस के आँचलों में मुँह छिपा के रो न सका
वो माँ, कि घुटनों से जिस के कभी लिपट न सका
वो माँ, कि सीने से जिस के कभी चिमट न सका
हुमक के गोद में जिस की कभी मैं चढ़ न सका
मैं ज़ेरे - साया - ए - उम्मीद[2] जिस के बढ़ न सका
वो माँ, मैं जिस से शरारत की दाद पा न सका
मैं जिस के हाथों महब्बत की मार खा न सका
सँवारा जिस ने न मेरे झंडूले वालों को
बसा सकी न जो होंटों से मेरे गालों को
जो मेरी आँखों में आँखें कभी न डाल सकी

१. रोशनी का पहाड़। २. आशा की छाया में।

न अपने हाथों से मुझ को कभी उछाल सकी
वो माँ, जो कोई कहानी मुझे सुना न सकी
मुझे सुलाने को जो लोरियाँ भी गा न सकी
वो माँ, जो दूध भी अपना मुझे पिला न सकी
वो माँ, जो हाथ से अपने मुझे खिला न सकी
वो माँ, गले से जो अपने मुझे लगा न सकी
वो माँ, जो देखते ही मुझ को मुस्कुरा न सकी
कभी जो मुझ से मिठाई छिपा के रख न सकी
कभी जो मुझ से दही भी बचा के रख न सकी
मैं जिस के हाथ में कुछ देख कर डहक न सका
पटक - पटक के कभी पाँव मैं ठुनक न सका
कभी न खींचा शरारत से जिस का आँचल भी
रचा सकी न मेरी आँखों में जो काजल भी
वो माँ, जो मेरे लिए तितलियाँ पकड़ न सकी
जो भागते हुए बाज़ू मेरे जकड़ न सकी
बढ़ाया प्यार कभी कर के प्यार में न कमी
जो मुँह बना के किसी दिन न मुझ से रूठ सकी
जो ये भी कह न सकी—जा न बोलूँगी तुझ से !
जो एक बार ख़फ़ा भी न हो सकी मुझ से
वो जिस को जूठा लगा मुँह कभी दिखा न सका
कसाफ़तों[1] पॅ मेरी जिस को प्यार आ न सका
जो मिट्टी खाने पॅ मुझ को कभी न पीट सकी
न हाथ थाम के मुझ को कभी घसीट सकी
वो माँ जो गुफ़्तुगू की रौ में सुन के मेरी बड़
कभी जो प्यार से मुझ को न कह सकी—घामड़ !
शरारतों से मेरी जो कभी उलझ न सकी
हिमाक़तों का मेरी फ़लसफ़ा[2] समझ न सकी
वो माँ जिसे कभी चौंकाने को मैं लुक न सका
मैं राह छेंकने को जिस के आगे रुक न सका
जो अपने हाथ से बहरूप मेरा भर न सकी
जो अपनी आँखों को आईना मेरा कर न सकी

१. गन्दगी। २. दर्शन।

गले में डाली न बाँहों की फूलमाला भी
न दिल में लौहे - जबीं[1] से किया उजाला भी
वो माँ, कभी जो मुझे बद्धियाँ पिन्हा न सकी
कभी मुझे नये कपड़ों से जो सजा न सकी
वो माँ, न जिस से लड़कपन के झूठ बोल सका
न जिस के दिल के दर इन कुंजियों से खोल सका
वो माँ मैं पैसे भी जिस के कभी चुरा न सका
सज़ा से बचने को झूठी क़सम भी खा न सका
वो माँ कि आयते - रहमत हैं जिस की चीने-जबीं
वो माँ कि 'हाँ' से भी होती है बढ़के जिस की 'नहीं'
दमे - इताब जो बनती फ़रिश्ता रहमत का
जो राग छेड़ती झुँझला के भी महब्बत का
वो माँ कि घुड़कियाँ भी जिस की गीत बन जायें
वो माँ, कि झिड़कियाँ भी जिस की फूल बरसायें
वो माँ, हम उस से जो दम भर को दुश्मनी कर लें
तो ये न कह सके—अब आओ दोस्ती कर लें !
कभी जो सुन न सकी मेरी तूतली बातें
जो दे सकी न कभी थप्पड़ों की सौग़ातें
वो माँ, बहुत-से खिलौने जो मुझ को दे न सकी
खिराजे - सरखुशी - ए - सरमदी[2] जो ले न सकी
वो माँ, लड़ाई न जिस से कभी मैं ठान सका
वो माँ, मैं जिस पें कभी मुट्ठियाँ न तान सका
वो मेरी माँ, कभी मैं जिस की पीठ पर न चढ़ा
वो मेरी माँ, कभी कुछ जिस के कान में न कहा
वो माँ, कभी जो मुझे करधनी पिन्हा न सकी
जो ताल हाथ से देकर मुझे नचा न सकी
जो मेरे हाथ से इक दिन दवा भी पी न सकी
कि मुझ को ज़िन्दगी देने में जान ही दे दी
वो माँ, न देख सका ज़िन्दगी में जिस की चाह
उसी की भटकी हुई रूह को दिखाता राह !

१. जलाल। २. हमेशा रहनेवाली मस्ती का लगाव।

२२

ये सोच - सोच के आँखें मेरी भर आती थीं
तो जा के सूने बिछौने पें लेट रहता था
किसी से घर में न राज़ अपने दिल के कहता था
यतीम थी मेरी दुनिया यतीम मेरी हयात
यतीम शामो - सहर थी यतीम थे शवो - रोज़
यतीम मेरी पढ़ाई थी मेरे खेल यतीम
यतीम मेरी मसर्रत थी मेरा ग़म भी यतीम
यतीम आँसुओं से तकिया भीग जाता था
किसी से घर में न कहता था अपने दिल के भेद
हर - इक से दूर अकेला उदास रहता था
किसी शमायले - नादीदा[1] को मैं तकता था
मैं एक वहशते - वेनाम से हुड़कता था

गुज़र रहे थे महो - साल और मौसम पर
इसी तरह कई वरसात आयीं और गयीं
मैं रफ़्ता - रफ़्ता पहुँचने लगा वसिन्ने - शऊर
तो जुगनुओं की हक़ीक़त समझ में आने लगी
अव उन खिलाइयों और दाइयों की वातों पर
मेरा यक़ीं न रहा मुझ पें हो गया ज़ाहिर
कि भटकी रूहों को जूगनू नहीं दिखाते चराग़
वो मन-गढ़त-सी कहानी थी इक फ़साना था
वो वेपढ़ी - लिखी कुछ औरतों की थी वकवास
भटकती रूहों को जुगनू नहीं दिखाते चराग़
ये खुल गया—मेरे वहलाने को थीं ये वातें
मेरा यक़ीं न रहा इन फ़ुज़ूल क़िस्सों पर—

१. अनदेखी आकृति।

हमारे शह्‌र में आती हैं अब भी बरसातें
हमारे शह्‌र पें अब भी घटाएँ छाती हैं
हनोज़ भीगी हुई सुरमई फ़ज़ाओं में
ख़ुतूते - नूर[१] बनाती हैं जुगनुओं की सफ़ें
फ़ज़ा - ए - तीरा[२] में उड़ती हुई ये क़न्दीलें
मगर मैं जान चुका हूँ इसे बड़ा होकर
किसी की रूह को जुगनू नहीं दिखाते राह
कहा गया था जो बचपन में मुझ से झूठ था सब !
मगर कभी - कभी हसरत से दिल में कहता हूँ
ये जानते हुए, जुगनू नहीं दिखाते चराग़
किसी की भटकी हुई रूह को—मगर फिर भी
वो झूठ ही सही कितना हसीन झूठ था वो
जो मुझ से छीन लिया उम्र के तक़ाज़े ने
मैं क्या बताऊँ वो कितनी हसीन दुनिया थी
जो बढ़ती उम्र के हाथों ने छीन ली मुझ से
समझ सके कोई ऐ काश ! अह्‌दे - तिफ़ली[३] को
जहान देखना मिट्टी के एक रेज़े को
नुमूदे - लाला - ए - ख़ुदरौ[४] में देखना जन्नत
करे नज़ारा - ए - कौनेन[५] इक घिरौंदे में
उठा के रख ले ख़ुदाई को जो हथेली पर
करे दवाम को जो क़ैद एक लमहे में
सुना ? वो क़ादिरे-मुतलक़[६] है एक नन्हीं-सी जान
ख़ुदा भी सजदे में झुक जाये सामने उस के

ये अक़्लो - फ़ह्‌म[७] बड़ी चीज़ है मुझे तसलीम[८]
मगर लगा नहीं सकते हम इस का अन्दाज़ा
कि आदमी को ये पड़ती है जिस क़दर महँगी
इक-एक कर के वो तिफ़ली के हर ख़याल की मौत

१. रोशनी की लकीरें। २. अँधेरा वातावरण। ३. बाल्यकाल। ४. आप से ही उगने वाले फूलों का बढ़ना-फैलना। ५. विश्व-दर्शन। ६. परमशक्ति, ईश्वर। ७. बुद्धि-ज्ञान। ८. स्वीकार।

बुलूग़े - सिन में वो सदमे नये खयालों के
नये खयाल का धक्का नये खयालों की टीस
नये तसव्वुरों का क़र्ब[1], अलअमाँ[2], कि हयात
तमाम ज़ख्मे - निहाँ[3] हैं तमाम नशतर हैं
ये चोट खा के सँभलना मुहाल होता है
सुकूत रात का जिस वक़्त छेड़ता है सितार
कभी - कभी तेरी पायल की आती है झंकार
तो मेरी आँखों से आँसू बरसने लगते हैं
मैं जुगनू बन के तो तुझ तक पहुँच नहीं सकता
जो तुझ से हो सके ऐ माँ! तो वो तरीक़ा बता
तू जिस को पाले वो काग़ज़ उछाल दूँ कैसे
ये नज़्म मैं तेरे क़दमों में डाल दूँ कैसे

नवा - ए - दर्द[4] से कुछ जी तो हो गया हलका
मगर जब आती है बरसात क्या करूँ इस को
जब आसमान पें उड़ते हैं हर तरफ़ जुगनू
शराबे-नूर लिये सब्ज़ आबगीनों[5] में
कँवल जलाते हुए ज़ुलमतों के सीनों में
जब उन की ताबिशे - बेसाख्ता से पीपल का
दरख्त सरवे - चरागाँ को मात करता है
न जाने किस लिए आँखें मेरी भर आती हैं!

---

१. यातना। २. खुदा पनाह दे। ३. छिपा घाव। ४. दर्द की आवाज़। ५. प्यालों।

हिंडोला

दयारे - हिन्द था गहवारा, याद है हमदम ?
बहुत ज़माना हुआ—किस के - किस के बचपन का
इसी ज़मीन पें खेला है राम का बचपन
इसी ज़मीन पें उन नन्हें - नन्हें हाथों ने
किसी समय में धनुष - बान को सँभाला था
इसी दयार ने देखी है कृष्ण की लीला
यहीं घिरौंदों में सीता, सुलोचना, राधा
किसी ज़माने में गुड़ियों से खेलती होंगी
यही ज़मीं यही दरिया, पहाड़, जंगल, बाग़
यही हवाएँ यही सुब्हो - शाम ! सूरज, चाँद
यही घटाएँ यही बर्क़ो - रादो - क़ौसेक़ुज़ह[1]
यहीं के गीत, रवायात, मौसमों के जुलूस
हुआ ज़माना कि सिद्धार्थ के थे गहवारे
इन्हीं में आँख खुली थी अशोके - आज़म की
इन्हीं नज़ारों में बचपन कटा था विक्रम का
सुना है भर्तृहरी भी इन्हीं से खेला था
भरत, अगस्त, कपिल, व्यास, पाशी, कौटल्या
जनक, वसिष्ठ, मनू, वाल्मीकि, विश्वामित्र
कनाद, गौतमो - रामानुजो - कुमारिल भट्ट
मोहनजोडारो - हड़प्पा के और अजन्ता के
बनाने वाले यहीं बल्लमों से खेले थे
इसी हिंडोले में भवभूति - कालीदास कभी
हुमक - हुमक के जो तुतलाये - गुनगुनाये थे
सरस्वती ने ज़बानों को उन की चूमा था
यहीं के चाँद व सूरज खिलौने थे उन के
इन्हीं फ़ज़ाओं में बचपन पला था खुसरो का

---

१. बिजली, बादल और इन्द्रधनुष।

इसी ज़मीं से उठे तानसेन और अकबर
रहीमो - नानको - चैतन्य और चिश्ती ने
इन्हीं फ़ज़ाओं में बचपन के दिन गुज़ारे थे
इसी ज़मीं पॅ कभी शाहज़ाद - ए - खुर्रम
ज़रा - सी दिल-शिकनी पर जो रो दिया होगा
भर आया था दिले - नाज़ुक तो क्या अजब उस ने
उन आँसुओं में झलक ताज की भी देखी हो
अहल्याबाई, दमन, पद्मिनी - ओ - रज़िया ने
यहीं के पेड़ों की शाख़ों में डाले थे झूले
इसी फ़ज़ा में बढ़ायी थी पेंग बचपन की
इन्हीं नज़ारों में सावन के गीत गाये थे
इसी ज़मीन पॅ घुटनों के बल चले होंगे
मलिक मुहम्मदो - रसखान और तुलसीदास
इन्हीं फ़ज़ाओं में गूँजी थी तोतली बोली
कबीरदास, टुकाराम, सूरो - मीरा की
इसी हिंडोले में विद्यापती का कण्ठ खुला
इसी ज़मीन के थे लाल मीरो - ग़ालिब भी
ठुमक - ठुमक के चले थे घरों में, आँगन में
अनीसो - हाली - ओ - इक़बाल और वारिसशाह
यहीं की ख़ाक से उभरे थे प्रेमचन्द, टैगोर
यहीं से उट्ठे थे तहज़ीबे - हिन्द के मेमार[१]
इसी ज़मीन ने देखा था बालपन उन का
यहीं दिखायी थीं इन सब ने बाल - लीलाएँ
यहीं हर - एक के बचपन ने तरबियत[२] पायी
यहीं हर - एक के जीवन का बालकाण्ड खुला
यहीं से उठते बगूलों के साथ दौड़े हैं
यहीं की मस्त घटाओं के साथ झूमे हैं
यहीं की मदभरी बरसात में नहाये हैं
लिपट के कीचड़ो - पानी से बचपने उन के
इसी ज़मीन से उट्ठें वो देश के सावन्त

१. भारत की सभ्यता के रचयिता। २. प्रशिक्षण।

उड़ा दिया था जिन्हें कम्पनी ने तोपों से
इसी जमीन से उट्ठी हैं अनगिनत नसलें
पले हैं हिन्द - हिंडोले में अनगिनत बच्चे
मुझ ऐसे कितने ही गुमनाम बच्चे खेले हैं
मुझ ऐसे कितने ही गुमनाम मर्दो - ज़न[1] उट्ठे
इसी जमीं से, इसी में सिपुर्दे - खाक हुए
ज़मीने - हिन्द अब आरामगाह है उन की
इस अर्ज़े - पाक से उट्ठीं बहुत - सी तहज़ीबें
यहीं तुलूअ हुईं और यहीं ग़ुरूब हुईं
इसी जमीन से उभरे कई उलूमो - फ़ुनून[2]
फ़राज़े - कोहे - हिमाला, ये रौदे - गंगो - जमन
और इन की गोद में परवर्दा कारवानों ने
यहीं रुमूज़े - खरामे - सुकूँ - नुमा[3] सीखे
नसीमे - सुब्हे - तमद्दुन ने भैरवी छेड़ी
यहीं वतन के तरानों की वो पवें फूटीं
वो बेक़रार सुकूँ - जाँ[4] तरन्नुमे - सहरी
वो कपकपाते हुए सोज़ो - साज के शोले
इन्हीं फ़ज़ाओं में अँगड़ाइयाँ जो ले के उठे
लवों से जिन के चराग़ाँ हुई थी बज़्मे - हयात
जिन्होंने हिन्द की तहज़ीब को, ज़माना हुआ
बहुत से ज़ावियों से आइना दिखाया था
इसी ज़मीं पॅ ढली है मेरी हयात की शाम
इसी ज़मीन पॅ वो सुब्ह मुस्कुरायी है
तमाम शोला - ओ - शबनम[5] मेरी हयात की सुब्ह
सुनाऊँ आज कहानी मैं अपने बचपन की—
दिलो - दिमाग़ की कलियाँ अभी न चटकी थीं
हमेशा खेलता रहता था भाई - बहनों में
हमारे साथ मुहल्ले की लड़कियाँ - लड़के
मचाये रखते थे बालक, उधम हरेक घड़ी
लहूतरंग उछल - फाँद का ये आलम था

१. स्त्री-पुरुष। २. ज्ञान-कला। ३. धीमे-धीमे चलने की शान्तिमयता का रहस्य। ४. शान्तिमय। ५. आग व ओस।

मुहल्ले सर पें उठाये फिरे जिधर गुज़रे
हमारे चहचहे और शोर गूँजते रहते
चहार-सम्त मुहल्ले के गोशे-गोशे में
फ़ज़ा में आज भी लारैब[1] गूँजते होंगे !
अगरचे[2] दूसरे बच्चों की तरह था मैं भी
बज़ाहिर औरों के बचपन-सा था मेरा बचपन
ये सब सही मेरे बचपन की शख़्सियत भी थी एक
वो शख़्सियत कि बहुत शोख़ जिस के थे ख़दो-ख़ाल[3]
अदा-अदा में कोई शाने-इन्फ़िरादी थी
ग़रज़ कुछ और ही लच्छन थे मेरे बचपन के
मुझे था छोटे-बड़ों से बहुत शदीद लगाव
हर-एक पर मैं छिड़कता था अपनी नन्हीं-सी जाँ
दिल उमड़ आता था ऐसा कि जो ये चाहता था
उठा के रख लूँ कलेजे में अपनी दुनिया को
मुझे है याद अभी तक कि खेल-कूद में भी
कुछ ऐसे वक़्फ़े पुरअसरार[4] आ ही जाते थे
कि जिन में सोचने लगता था कुछ मेरा बचपन
कई मआ़नी-ए-बेलफ़्ज़[5] छूने लगते थे
बतूने-ग़ैब[6] से मेरे शऊरे-असग़र[7] को
हर-एक मंज़रे-मानूस, घर का हर गोशा
किसी तरह की हो घर में सजी हुई कोई चीज़
मेरे मुहल्ले की गलियाँ, मकाँ, दरो-दीवार
चबूतरे, कुएँ, कुछ पेड़, झाड़ियाँ, बेलें
वो फेरी वाले कई उन के भाँति-भाँति के बोल
वो जाने-बूझे मनाज़िर वो आसमानो-ज़मीं
बदलते वक़्त का आईना गर्मी-ओ-ख़ुन्की
ग़ुरूबे-मेह्र[8] में रंगों का जागता जादू
शफ़क़ के शीशमहल में गुदाज़े-पिनहाँ से
जवाहरों की चटानें-सी कुछ पिघलती हुई
शजर-हजर[9] की वो कुछ सोचती हुई दुनिया

---

१. बेशक, प्रशंसा-वाचक। २. यद्यपि। ३. नख-शिख। ४. रहस्यमय। ५. बिना अर्थों के शब्द। ६. अन्तर्याम के बीच से। ७. लघु विवेक। ८. सूर्यास्त। ९. पेड़-पत्थर।

सुहानी रात का मानूस रम्ज़ियत[१] का फ़ुसूँ[२]
अलस्सबाह[३] उफ़ुक़ की वो थरथराती भवें
किसी का झाँकना आहिस्ता फूटती पव से
वो दोपहर का समय दर्जा-ए-तपिश[४] का चढ़ाव
थकी-थकी-सी फ़ज़ा में वो ज़िन्दगी का उतार
हवा की वंसियाँ बसवाड़ियों में बजती हुई
वो दिन कि बढ़ते हुए साये सेह-पहर का सुकूँ
सुकूत शाम का जब दोनों वक़्त मिलते हैं
ग़रज़ झलकते हुए सरसरी मनाज़िर पर
मुझे गुमान परिस्तानियत का होता था
हर-एक चीज़ की वो खावनाक अस्लीयत
मेरे शऊर के चिल्मन से झाँकता था कोई
लिये रुबूबीयते-कायनात[५] का एहसास
हर-एक जल्वे में ग़ैबो-शहूद[६] का वो मिलाप
हर-इक नज़ारा इक आईनाखाना-ए-हैरत
हर-एक मंज़रे-मानूस एक हैरत-ज़ार
कहीं रहूँ कहीं खेलूँ कहीं पढ़ूँ लिक्खूँ
मेरे शऊर पें मँडलाते थे मनाज़िरे-दहर
मैं अकसर उन के तसव्वुर में डूब जाता था
वफ़ूरे-जज़्बा से हो जाती थी मिज़ह पुरनम
मुझे यक़ीन है उन उनसुरी[७] मनाज़िर से
कि आम बच्चों से लेता था मैं ज़्यादा असर
किसी समय मेरी तिफ़्ली[८] रही न बेपर्वा
न छू सकी मेरी तिफ़्ली को ग़फ़लते-तिफ़्ली
ये खेल-कूद के लमहों में होता था एहसास
दुआएँ देता हो जैसे मुझे सुकूते-दवाम
कि जैसे हाथ अवद[९] रख दे दोशे-तिफ़्ली पर
हर-एक लम्हा के रख़नों से झाँकती सदियाँ
कहानियाँ जो सुनूँ उन में डूब जाता था
कि आदमी के लिए आदमी की जग-बीती

---

१. रहस्यमयता। २. जादू। ३. प्रातः। ४. तापमान। ५. विश्व-प्रभुत्व। ६. प्रत्यक्ष-परोक्ष। ७. भौतिक। ८. बचपन। ९. अनन्तकाल।

से बढ़ के कौन - सी शै और हो ही सकती है
इन्हीं फ़सानों में पिनहाँ थे ज़िन्दगी के रुमूज़
इन्हीं फ़सानों में खुलते थे राज़हाए-हयात
उन्हीं फ़सानों में मिलती थीं ज़ीस्त की क़दरें
रुमूज़े - बेशबहा ठेठ आदमीयत के
कहानियाँ थीं कि सद दर्सगाहे - रिक़्क़ते - क़ल्ब[1]
हर - इक कहानी में शाइस्तगीए-ग़म[2] का सबक़
वो उनसुर[3] आँसुओं का दास्ताने इन्साँ में
वो नल - दमन की कथा सरगुज़श्ते - सावित्री[4]
शकुन्तला की कहानी भरत की क़ुर्बानी
वो मर्गे-भीष्मपितामह वो सेज तीरों की
वो पाँचों पाण्डवों की स्वर्गयात्रा की कथा
वतन से रुख़सते - सिद्धार्थ राम का बनवास
वफ़ा के बाद भी सीता की वो जिलावतनी
वो रातों - रात श्रीकृष्ण को उठाये हुए
बला की क़ैद से वसुदेव का निकल जाना
वो अन्धकार वो बारिश, बढ़ी हुई जमुना
ग़म - आफ़रीन[5] कहानी वो हीर-राँझा की
शऊरे - हिन्द के बचपन की यादगारे - अज़ीम
कि ऐसे-वैसे तख़य्युल की साँस उखड़ जाये
कई मुहय्यरे - इदराक[6] देवमालाएँ
हितोपदेश के क़िस्से, कथा सरित - सागर
करोड़ों सीनों में वो गूँजता हुआ आल्हा
मैं पूछता हूँ किसी और मुल्क वालों से
कहानियों की ये दौलत ये बेबहा दौलत
फ़साने देख लो उन के, नज़र भी आती है
मैं पूछता हूँ कि गहवारे और क़ौमों के
बसे हुए हैं कहीं ऐसी दास्तानों से ?
कहानियाँ जो मैं सुनता था अपने बचपन में
मेरे लिए वो न थीं महज़ बाइसे - तफ़रीह[7]

१. दिलों को तड़पाने वाले पाठ। २. दुःख की शालीनता। ३. तत्त्व। ४. सावित्री की कहानी। ५. दुखभरी। ६. चेतना को अचम्भे में डालने वाली। ७. मनोरंजन का साधन।

फ़सानों से मेरे बचपन ने सोचना सीखा
फ़सानों से मुझे संजीदगी के दर्स मिले
फ़सानों में नज़र आती थी मुझ को ये दुनिया
ग़मो - ख़ुशी में रची प्यार में बसायी हुई
फ़सानों से मेरे दिल ने घुलावटें पायीं
यही नहीं कि मशाहीर[1] ही के अफ़साने
ज़रा - सी उम्र में करते हों मुझ को मुतअस्सिर[2]
मुहल्ले - टोले के गुमनाम आदमीयों के
कुछ ऐसे सुनने में आते थे वाक़िआते - हयात
जो यूँ तो होते थे फ़र्सूदा और मामूली
मगर थे आईने एख़लास और महब्बत के
ये चन्द आयी - गयी बातें, ऐसी बातें थीं
कि जिन की ओट चमकता था दर्दे - इन्सानी
ये वारदात नहीं रश्मिये हयात के हैं
ग़रज़ कि ये हैं मेरे बचपने की तस्वीरें
नदीम ! और भी कुछ ख़त्तो - ख़ाल हैं इन के
ये मेरी माँ का है कहना कि जब मैं बच्चा था
मैं ऐसे आदमी की गोद में न जाता था
जो बद-क़वारा[3] हो, ऐबी हो या हो बद-सूरत
मुझे भी याद है नौ-दस बरस ही का मैं था
तो मुझ पें करता था जादू - सा हुस्ने - इन्सानी
कुछ ऐसा होता था महसूस जब मैं देखता था
शिगुफ़्ता रंग, तरो - ताज़ा रूप वालों का
कि उन की आँच मेरी हड्डियाँ गला देगी
इक आज़माइशे-जाँ[4] थी कि था शऊरे-जमाल[5]
और उस की नश्तरियत उस की उस्तुख़ाँ - सोज़ी[6]
ग़मो - नशात, लगावट, महब्बतो - नफ़रत
इक इन्तिशार, सुकूँ, इज़्तिराब, प्यार, इताब[7]
वो बेपनाह ज़की-उल-हिसी,[8] वो हिल्मो-ग़ुरूर[9]
कभी - कभी वो भरे घर में हिस्से - तनहाई

---

१. मशहूर लोगों । २. प्रभावित । ३. बुरी आदत वाला । ४. आत्म-परीक्षा । ५. सौन्दर्य-ज्ञान । ६. हड्डियों की जलन । ७. क्रोध । ८. तीव्र इन्द्रिय-बोध । ९. सहनशीलता व घमण्ड ।

वो वहशतें मेरी माहौले - खुशगवार में भी
मेरी सरिश्त[१] में ज़िद्दैन[२] के कई जोड़े
शुरू ही से थे मौजूद आबो - ताब के साथ
मेरे मिज़ाज में पिनहाँ थी एक जदल्लीयत[३]
रगों में छूटते रहते थे बेशुमार अनार
नदीम ! ये हैं मेरे बालपन के कुछ आसार
वफ़ूरो - शिद्दते - जज़्बात का ये आलम था
कि कौंदे जस्त करें दिल के आबगीने में
वो बचपना जिसे बर्दाश्त अपनी मुश्किल हो
वो बचपना जो खुद अपने पँ त्योरियाँ-सी चढ़ाय
नदीम ! ज़िक्रे - जवानी से काँप जाता हूँ
जवानी आयी दबे पाँव और यूँ आयी
कि उस के आते ही बिगड़ा बना-बनाया खेल
वो ख्वाहिशात के जज़्बात के उमड़ते हुए
वो हौंकते 'हुए, बेनाम आग के तूफ़ाँ
वो फूटता हुआ ज्वालामुखी जवानी का
रगों में उठती हुई आँधियों के वो झटके
कि जो तवाज़ुने - हस्ती[४] झिंझोड़ कर रख दें
वो ज़लज़ले कि पहाड़ों के पैर उखड़ जायें
बुलूग़ियत[५] की वो टीसें वो कर्बे - नश्वो - नुमा[६]
और ऐसे में मुझे ब्याहा गया—भला किस से
जो हो न सकती थी हरगिज़ मेरी शरीके - हयात
हम एक दूसरे के वास्ते बने ही न थे
सियाह हो गयी दुनिया मेरी निगाहों में
वो जिस को कहते हैं शादी - ए - खाना - आबादी
मेरे लिए हुई शादी - ए - खाना - बर्बादी
मेरे लिए वो बनी बेवगी जवानी की
लुटा सुहाग मेरी ज़िन्दगी का मांडव में
नदीम ! खा गयी मुझ को नज़र जवानी की
बला - ए - जान मुझे हो गया शऊरे - जमाल

---

१. स्वभाव। २. भौतिकता। ३. द्वन्द्व। ४. जीवन-संतुलन। ५. जवानी। ६. विकास पाने की पीड़ा।

तलाशे - शोल - ए - उलफ़त से ये हुआ हासिल
कि नफ़रतों का अगनकुण्ड बन गयी हस्ती
वो हल्क़ो - सीना - ओ - रग - रग में बेपनाह चुभन
नदीम[1] ! मैं ने निगल ली हो जैसे नागफनी
ज़े-इश्क़-आदमो-इश्क़म वकिश्त ज़ारो-दरेग़
खबर न बुर्द व रुस्तम कसे कि सुहराबम
न पूछ आलमे - कामो - दहन नदीम ! मेरे
समर हयात का जब राख बन गया मुँह में
मैं चलती - फिरती चिता बन गया जवानी की
मैं काँधा देता रहा अपने जीते मुर्दे को
ये सोचता था कि अब क्या करूँ किधर जाऊँ
बहुत से और मसाएब भी मुझ पँ टूट पड़े
मैं ढूँढने लगा हर सम्त सच्ची - झूठी पनाह
तलाशे - हुस्न में, शेरो - अदब में, दोस्ती में
रुँधी सदा से महब्बत की भीक माँगी है !
नये सिरे से समझना पड़ा है दुनिया को
बड़े जतन से सँभाला है मैं ने ख़ुद को नदीम !
मुझे सँभलने में चालीस साल गुज़रे हैं
मेरी हयात तो विषपान की कथा है नदीम !
मैं ज़हर पी के ज़माने को दे सका अमृत
न पूछ मैं ने जो ज़हराबा - ए - हयात[2] पिया
कोई उतार ले उस को तो हड्डियाँ उड़ जायँ
मगर हूँ दिल से मैं इस के लिए सिपास-गुज़ार[3]
लरज़ते हाथों से दामन ख़ुलूस का न छुटा
बचा के रक्खी है मैं ने अमानते - तिफ़ली[4]
उसे न छीन सकी मुझ से दस्ते - बुर्दे - शबाब
ब - कौले - शाइरे - मुल्के - फरंग, हर बच्चा
ख़ुद अपने अह्दे - जवानी का बाप होता है !
ये कम नहीं है कि तिफ़्ली - ए - रफ़्ता छोड़ गयी
दिले - हज़ीं में कई छोटे - छोटे नक़्शे - क़दम

---

१. साथी, मित्र। २. जीवन-विष। ३. अभिनन्दन करने वाला। ४. बचपन की अमानत।

मेरी अना की रगों में पड़े हुए हैं अभी
न जाने कितने बहुत नर्म उँगलियों के निशाँ
हनोज़ वक़्त के बेदर्द हाथ कर न सके
हयाते - रफ़्ता[1] की ज़िन्दा निशानियों को फ़ना
ज़माना छीन सकेगा न मेरी फ़ितरत से
मेरी सफ़ा मेरी तहतुश्शऊर की इस्मत
तख़य्युलात की दोशीज़गी - ए - रद्दे - अमल
जवान हो के भी बेलौस तिफ़्लवश[2] जज़बात
सयाना होने पँ भी ये जिबिल्लतें[3] मेरी
ये सरख़ुशी - ओ - ग़मे - बे - रिया ये क़ल्बे - गुदाज़
बग़ैर बैर के अनबन, ग़रज़ से पाक तपाक
ग़रज़ से पाक ये आँसू, ग़रज़ से पाक हँसी
ये दश्ते - दह्‌र में हमर्दर्दियों का सर - चश्मा
क़ुबूलियत का ये जज़्बा ये कायनातो - हयात
इस अर्ज़े - पाक पँ ईमान ये हम - आहंगी
हर आदमी से हर-इक ख़ूबो - ज़िश्त[4] से ये लगाव
ये माँ की गोद का एहसास सब मनाज़िर में
क़रीबो - दूर ज़मी में ये बू - ए - वतनीयत
निज़ामे - शम्सो - क़मर में पयामे - हिफ़्ज़े - हयात
बचश्मे - शामो - सहर, मामता की शबनम - सी
ये साज़े दिल में मेरे नग़मा - ए - अनलकौनैन
हर इज़्तिराब में रूहे - सुकूने - बे - पायाँ
ज़माना - ए - गुज़राँ में दवाम का सरगम
ये बज़्मे - जश्नो - हयातो - ममात सजती हुई
किसी की याद की शहनाइयाँ - सी बजती हुई
ये रम्ज़ियत के अनासिर, शऊरे - पुख़्ता में
फ़लक पँ वज्द में लाती है जो फ़रिश्तों को
वो शायरी भी बुलूग़े '- मिज़ाजे - तिफ़्ली है
ये नश्तरीयते - हस्ती ये उस की शेरीयत
ये पत्ती - पत्ती पँ गुलज़ारे - ज़िन्दगी के किसी
लतीफ़ नूर की परछाइयाँ - सी पड़ती हुई

१. बीते जीवन। २. बच्चों की तरह के। ३. आदतें। ४. भले-बुरे।

वहम ये हैरतो - मानूसियत की सरगोशी[1]
वशर की ज़ात की मुहरे-उलूहियत-व-जवीं
अवद के दिल में जड़ें मारता हुआ सब्ज़ा
ग़मे - जहाँ मुझे आँखें दिखा नहीं सकता
कि आँखें देखे हुए हूँ मैं अपने वचपन की
मेरे लहू में अभी तक सुनाई देती है
सुकूते - हुस्न में भी घुँघरुओं की झंकारें
ये और वात कि मैं उस पें कान दे न सकूँ
इसी वदीअते - तिफ़्ली[2] का अव सहारा है!
यही हैं मरहमे - काफ़ूर दिल के ज़ख़्मों पर
इन्हीं को रखना है महफ़ूज़[3] ता - दमे - आख़िर
ज़मीने - हिन्द है गहवारा आज भी हमदम
अगर हिसाव करें दस करोड़ वच्चों का
ये वच्चे हिन्द की सब से बड़ी अमानत हैं
हर एक वच्चे में है सद जहाने - इम्कानात
मगर वतन का हलो - अक़्द जिन के हाथ में है
निज़ामे - ज़िन्दगी - ए - हिन्द जिन के वस में है
रवैया देख के उन का ये कहना पड़ता है
किसे पड़ी है कि समझे वो इस अमानत को
किसे पड़ी है कि वच्चों की ज़िन्दगी को वचाय
ख़राव होने से, मिटने से, सूख जाने से
वचाये कौन? इन आज़ुर्दः[4] होनहारों को
वो ज़िन्दगी जिसे ये दे रहे हैं भारत को
करोड़ों वच्चों के मिटने का एक अलमीया[5] है
चुराये जाते हैं वच्चे अभी घरों से यहाँ
कि जिस्म तोड़ दिये जायें उन के, ताकि मिले
चुराने वालों को ख़ैरात माघ मेले की
जो इस अज़ाव से वच जायें तो गले पड़ जायें
वो लानतें कि हमारे करोड़ों वच्चों की
नदीम! ख़ैर से मिट्टी ख़राव हो जाये

१. कानाफूसी। २. बचपन की धरोहर। ३. सुरक्षित। ४. पीड़ित। ५. दुःखान्त।

वो मुफ़्लिसी कि खुशी छीन ले वो - वेरंगी
उदासियों से भरी ज़िन्दगी की वे - रंगी
वो यासियात न जिस को छुए शुआ - ए - उमीद
वो आँखें देखती हैं हर तरफ़ जो वे - नूरी
वो टकटकी कि जो पथरा के रह गयी हो नदीम
वो वे - दिली कि हँसी छीन ले जो होंटों से
वो दुख कि जिस से सितारों की आँख भर आये
वो गन्दगी वो कसाफ़त मरज़-ज़दा पैयकर
वो वच्चे छिन गये हों जिन से वचपने उन के
हमीं ने घोंट दिया जिन के वचपने का गला
जो खाते-पीते घरों के हैं वच्चे उन को भी क्या
समाज फूलने-फलने के दे सकी साधन
वो साँस लेते हैं तहज़ीव - कुश फ़ज़ाओं में
हम उन को देते हैं वेजान और ग़लत तालीम
मिलेगा इल्मे - जहालत - नुमा से क्या उन को
निकल के मद्रिसों और यूनिवर्सिटीयों से
ये वदनसीव न घर के, न घाट के होंगे !
मैं पूछता हूँ—ये तालीम है कि मक्कारी
करोड़ों ज़िन्दगियों से ये बे - पनाह दग़ा
निसाव ऐसा कि मेहनत करें अगर उस पर
वजाय इल्म जहालत का इक्तिसाव करें
ये उलटा दर्से - अदव ये सड़ी हुई तालीम
दिमाग़ की हो ग़िज़ा, या ग़िज़ा - ए - जिस्मानी
हर - इक तरह की ग़िज़ा में यहाँ मिलावट है
वो जिस को वच्चों को तालीम कह के देते हैं
वो दर्स उलटी छुरी है गले पें बचपन के
ज़मीने - हिन्द हिंडोला नहीं है वच्चों का
करोड़ों वच्चों का ये देश अव जनाज़ा है
हम इन्क़िलाव के ख़तरों से ख़ूव वाक़िफ़ हैं
कुछ और रोज़ यही रह गये जो लैलो-निहार
तो मोल लेना पड़ेगा हमें ये ख़तरा भी
कि वच्चे क़ौम की सव से बड़ी अमानत हैं !

धरती की करवट

सूरज, चाँद, अँगड़ाई लेंगे
तारे अपनी गत वदलेंगे
पर्वत, सागर, लहरायेंगे
जव ये धरती करवट लेगी

हल, कुदाल, फावड़े, बसूले
उठे हथौड़े वोल पड़ेंगे
नया जनम है आज़ादी का
देश के राजा देश - निवासी

परजा ही है देश का राजा
घर की चटाई राजसिंहासन
सव की टोपी राजमुकुट है
फूस का घर भी राजमहल है

जनम - जनम का पाप कटेगा
अव तक किस का राज रहा है ?

× × × ×
× × × ×

वागी, रागी, रतन - पारखी
कलाकार, ज्ञानी, विज्ञानी
पत्रकार, लेखक, लासानी
चित्रकार, शाइर, सैलानी

वीर, सूरमा, धर्मी, दानी
आठों गाँठ कुमैत जवानी
जिस की छवि नहिं जाय वखानी
'गिरा अनयन नयन विनु वानी'

लेकिन कब तक ये मनमानी
यारो ! दुनिया आनी - जानी
किस बिरते पर तत्ता - पानी
अब न चलेगी आनाकानी
× × × ×

तोड़ा धरती का सन्नाटा
किस ने ? हम मज़दूरों ने
डंका बजा दिया आदम का
किस ने ? हम मज़दूरों ने !

दुनिया की अन्धी नगरी में
जगमग दीप जलाया, किस ने ?
जग में रंगारंग चमाचम
ये बाज़ार सजाया, किस ने ?

ओट में छिपी हुई तहज़ीबों
का घूँघट सरकाया किस ने
शर्मीली तक़दीर की देवी
का आँचल ढलकाया किस ने

कामचोर सपनों की काया
में शोला भड़काया किसने
बदन - चोर इस प्रकृति - कामिनी
का सीना धड़काया किस ने

परत - परत को इस धरती के
साथी खोल दिया है किस ने
छिपे दफ़ीने पर क़ुदरत के
धावा बोल दिया है किस ने

जीवन के समुद्र - मन्थन में
हम ने भँवर क्या डाले हैं
भू - सागर से इन हाथों ने
क्या - क्या रत्न निकाले हैं

वन - उपवन के हर काँटे से
हँसता फूल खिलाया किस ने
पत्थर के पथरीले दिल को
तप - तप कर पिघलाया किस ने

इस ऊसर - वंजर धरती पर
धन का ढेर लगाया किस ने
इस भू की प्यासी दुनिया में
हुन - पर - हुन वरसाया किस ने

× × × ×

नभ - चुम्वी शिखरों पर साथी
हम वेखटके चढ़ जाते थे
जहाँ मौत जाते हुए झिझके
ताल ठोंक कर बढ़ आते थे

आकाशों के, पातालों के
दिल का चोर निकाला किस ने
खाली था भर कर छलकाया
इस जीवन का प्याला किस ने

× × × ×
× × × ×

जिस क़िस्मत की मार ग़ज़ब थी
उसका पंजा मोड़ दिया है

दह्‌र की हर तखरीवी क़ूवत
को साँचे में ढाल लिया है
क़ुदरत के चैलेंज का हम ने
कल्ला-तोड़ जवाब दिया है

खून - पसीने के हिलोर में
तदवीरें मुँह देख रही हैं
इस लहराते आईने में
तक़दीरें मुँह देख रही हैं

अपने कस-बल से सानों में
तूफ़ानों को बन्द किया है
सधे हुए सौ - सौ हाथों से
भूचालों को थाम लिया है

लाख जतन से जीवन खेती
मुरझाने से किस ने रोका
सूरज की इस अग्नि - गेंद को
किस ने उछाला लोका किस ने

कई बार रहती दुनिया की
आयी को हम टाल चुके हैं
कई बार तक़दीरे - जहाँ की
आँखों में आँखें डाल चुके हैं

× × × ×

चाँद औ सूरज की किरनों से
चादर बुन कर रख देते हैं
इसी हथौड़े की ज़र्बों से
लोहा धुन कर रख देते हैं

कर के बराबर रख देते हैं
ऊबड़ - खाबड़, पेचो - ख़म
कड़े कोस नर्मा देते हैं
अपने धरती तोड़ क़दम

ज़रा ठेस लगते ही साथी
नींद की दुनिया जाग उठती है
ठुकरा दें जिस पड़ी शिला को
बन के अहल्या जाग उठती है

यूँ गुदगुदा दिया है हम ने
संग का पहलू फड़क रहा है
यूँ उकसाया है जड़ता को
पत्थर का दिल धड़क रहा है

× × × ×

इन हाथों की गुलकारी में
सुब्हे - बहार साँस लेती है
हम ने दवा दी हैं वो आँचें
मिट्टी लौ पर लौ देती है
× × × ×

इस धरती को छू कर हमने
चाँद - सितारों को छेड़ा है
कर के बसर काँटों पर साथी
हमने बहारों को छेड़ा है

अक्सर इस धरती की छींटे
देवलोक पर पड़ जाती हैं
आज उसी दुनिया की आँखें
इन्द्रपुरी से लड़ जाती हैं

अपने इरादों के उठान में
रूहे - तमद्दुन की बरनायी
इन्हीं हथौड़ों के सरगम में
तारीख़ों ने ली अँगड़ायी
× × × ×

जीवन की काली रातों का
धरती जहाँ पता देती है
गाती हुई मशीनों की लय
वहाँ चराग़ जला देती है

रेलों की घनगरज, जहाज़ों
का वो सागरफाड़ बहाव
साफ़ मण्डलाकार फ़ज़ा में
तय्यारों का निडर चढ़ाव

नदियों का मुँह मोड़ दिया है
वीराना लहराता है
रेगिस्तानों में अब पानी
गगन खेलता जाता है
× × × ×

कर्मयोग की महाशक्ति को
हमने अपने साथ लिया है
इस जीवन के शेषनाग को
इन हाथों ने नाथ लिया है
× × × ×

सर्वोदय के सुख-सपने में
कौन पुकार रहा है साथी !
जीवन सागर नयी दिशा में
ठाठें मार रहा है साथी
× × × ×

ज़र्रा - ज़र्रा जाग उठेगा
क़तरा - क़तरा जाग उठेगा
पत्ता - पत्ता जाग उठेगा
बूटा - बूटा जाग उठेगा

कोना - कोना जाग उठेगा
चप्पा - चप्पा जाग उठेगा
तप्ता - तप्ता जाग उठेगा
क़स्वा - क़स्वा जाग उठेगा

सूवा - सूवा जाग उठेगा
दरिया - दरिया जाग उठेगा
सह्‌रा - सह्‌रा जाग उठेगा
जीवन - सपना जाग उठेगा

लक्ष्मीनाथ

क़लम-बन्दी

[इन 'तज़्मीनों' में मशहूर शेरों पर तीन मिस्रे लगाये गये हैं।]

नसीमे - ख़ुल्द को भी इस तरह चलना नहीं आया
ख़रामे - कौसरो - तसनीम[१] में अन्दाज़ कब वो था
हर - इक का उस के आगे दावा - ए - रफ़्तार है बेजा
'वली उस गौहरे - काने - नमक का वाह क्या कहना
मेरे घर इस तरह आवे है ज्यूँ सीने में राज़ आवे।'

—'वली' दक्कनी

साक़ी की नज़र में एक हैं सब, तफ़रीक़[२] उस का ईमान नहीं
अपने हों या बेगाने हों तरजीहों[३] का इमकान नहीं
अह्‌ले - मयख़ाना में इस्तयाज़, उस के शायाने - शान नहीं
'ले जाम लबालब भर देना, फिर साक़ी को कुछ ध्यान नहीं
ये साग़र पहुँचे दोस्त तलक या हाथ लपक ले दुश्मन का'

—'नज़ीर' अकबराबादी

जलवे - ब - जलवे माहे - मुनव्वर[४] के बज़्म में
मयख़ार[५] थे शरीक बराबर के बज़्म में
ख़ास एहतेमामे - बादाकशी[६] करके बज़्म में
'साक़ी ने सब को जाम दिये भर के बज़्म में
साग़र जो हम ने माँगा तो शीशा हिला दिया'

—'नज़ीर' अकबराबादी

---

१. स्वर्ग की दो नदियों के बहाव। २. विभेद। ३. प्रधानता, प्राथमिकता। ४. चमकते चाँद। ५. शराब पीने वाले। ६. शराब पीने के लिए विशेष आयोजन।

ली तारों ने बार - बार झपकी
लेकिन मेरी नींद ने कमी की
दिल में इक हूक - सी उठा की
'झपकी नहीं आँख मुसहफ़ी की
ऐ हिज्र की शब गवाह रहना'

—'मुसहफ़ी' लखनवी

यूँ कोई जान से गुज़रता है
आह ऐसा भी कोई करता है
दिल में नश्तर - सा इक उतरता है
'मीर अमदन भी कोई मरता है
जान है तो जहान है प्यारे'

—मीर तक़ी 'मीर'

न तवस्सुम[1] का कारख़ाना है
न तकल्लुम[2] का कारख़ाना है
न तरन्नुम का कारख़ाना है
'ये तवह्हुम[3] का कारख़ाना है
याँ वही है जो एतबार किया'

—मीर तक़ी 'मीर'

कितने इल्ज़ाम अपने सर लायी
ज़िन्दगी, ज़िन्दगी से शरमायी
थी जो इक शख़्स से शनासायी
'हो गयी शह्र - शह्र रुसवाई
ऐ मेरी मौत तू भली आयी'

—मीर तक़ी 'मीर'

१. मुस्कान । २. वार्तालाप । ३. अन्धविश्वास ।

कैसे कटें इलाही ये रात और ये दिन
क्यों कर रहेंगे उस बिन, क्यों कर जियेंगे उस बिन
इस ज़िन्दगी का या रब ! शायद हो कोई ज़ामिन
'हम तौरे - इश्क़ से तो वाक़िफ़ नहीं है लेकिन
सीने में कोई जैसे दिल को मला करे है'

—मीर तक़ी 'मीर'

गुज़र जाते हैं आ के दिन और रात
शबो - रोज़[1] गरदिश में है कायनात
चमन में उठायी थी कल एक बात
'कहा मैं ने कितना है गुल को सबात[2]
कली ने ये सुन के तबस्सुम किया'

—मीर तक़ी 'मीर'

ये तज़करा - ए - ख़ातिरे - नाशाद[3] है सौदा
ये गरदिशे - दौराँ[4] भी इक उफ़ताद[5] है सौदा
दौरे - मये - सरजोश से फ़रयाद है सौदा
'कैफ़ीयते - चश्म इस की मुझे याद है सौदा
साग़र को मेरे हाथ से लेना कि चला मैं'

—मिर्ज़ा रफ़ी 'सौदा'

अब उस दिले - हज़ी[6] में खुशियाँ न मस्तियाँ हैं
अब मेरी ज़िन्दगी में बस ग़म - परस्तियाँ हैं
यादों में बसने वाली यारों की हस्तियाँ हैं
'वो सूरतें इलाही किस देस बस्तियाँ हैं
अब जिन के देखने को आँखें तरस्तियाँ हैं'

—मिर्ज़ा रफ़ी 'सौदा'

---

१. दिन-रात। २. ठहराव, अस्तित्व। ३. दुखी स्वभाव की चर्चा। ४. समय-चक्र।
५. विपद। ६. दुखी हृदय।

अब किसी से नहीं सवाल मेरा
जी ही रहता है कुछ निढाल मेरा
मैं कहीं हूँ, कहीं खयाल मेरा
'इन दिनों कुछ अजव हैं हाल मेरा
देखता कुछ हूँ ध्यान में कुछ है'

—ख़्वाजा मीर 'दर्द'

आने वाली है सदा अव उठते जाव
मयकदा खुद हम से कहता था कि आव
आज तक था मयकदा अपना पड़ाव
'साक़िया याँ लग उठा है चल - चलाव
जब तलक बस चल सके साग़र चले'

—ख़्वाजा मीर 'दर्द'

गुलिस्ताँ ही में हम -जीते गुलिस्ताँ ही में हम मरते
गुलिस्ताँ ही के हम होते गुलिस्ताँ ही का दम भरते
चमन में रह के दौरे - आसमाँ से भी नहीं डरते
'ये हसरत रह गयी क्या - क्या मजों से ज़िन्दगी करते
अगर होता चमन अपना, गुल अपना, बाग़वाँ अपना'

—मज़हर 'जानजानाँ'

चमन में आ गया था मैं कहाँ से
यहाँ अव तक रहा अम्नो - अमाँ[1] से
चमन वाले हैं अब तो बदगुमाँ से
'कुछ अनवन हो चली है बाग़वाँ से
मुझे निकला ही समझो गुलसिताँ से'

—मीर 'मजरूह'

१. सुख-शान्ति।

कहता था रोज़ अपना दुखड़ा
नामुमकिन हो गया था सोना
कल तक उस का था ये रवैया
'फिर छेड़ा हसन ने अपना क़िस्सा
बस आज की शब भी सो चुके हम'

—मीर 'हसन'

अपने सर मोल ये ले ली है मुसीबत कैसी
हो गयी बैठे - बिठाये ये महब्बत कैसी
आह ! ये कैसी लगावट थी ये चाहत कैसी
'ज़ुल्फ़ में फँस के फ़ुसूँ अब है ये वह्शत कैसी
साँप जब काट चुका, सीखने मन्तर बैठे'

—'फ़ुसूँ' अज़ीमाबादी

चमन में गुल .खिलाने के सिवा किस काम तू आयी
खबर तुझ को कहाँ है ज़िन्दगी में रंज भी, दुख भी
हम ऐसे बेदिलों से आ के तू बेफ़ायदा उलझी
'न छेड़ ऐ नक्हते - बादे - बहारी[1] ! राह लग अपनी
तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं हम बेज़ार बैठे हैं'

—इन्शाअल्लाह ख़ाँ 'इन्शा'

जगह नहीं मेरे दिल में चमन के फूलों की
कि गुलसिताँ है जगह गुलरुख़ों[2] के झूलों की
ये गर्दो - बाद[3] कहाँ है, वहाँ बगूलों की
'जुनूँ - पसन्द मुझे छाँव है बबूलों की
अजब बहार है इन ज़र्द - ज़र्द फूलों की'

—'नासिख़' लखनवी

---

१. बहार की हवाओं की .ख़ुशबू। २. फूलों की तरह चेहरा रखने वाले, हसीनों। ३. धूल और हवा

अपनी जगह तमाम सफ़आरा - ए - बज़्म[1] थे
चंगो - रबाबो - नग़मा के क्या - क्या समाँ बँधे
अलक़िस्सा,[2] दौरे - जश्नो - तरब[3] ख़त्म हो गये
'आये भी लोग बैठे भी, उठ भी खड़े हुए
मैं जाँ[4] ही ढूँढ़ता तेरी महफ़िल में रह गया'

—ख़ाजा 'आतश'

बाक़ी नहीं शबाब, पर अब भी कभी - कभी
हस्ती ख़यालो - ख़्वाब, पर अब भी कभी - कभी
हस्ती है इक सुराब,[5] पर अब भी कभी - कभी
'ग़ालिब छुटी शराब, पर अब भी कभी - कभी
पीता हूँ रोज़े - अब्रो - शबे - माहे - ताब[6] में'

—मिर्ज़ा 'ग़ालिब'

मेरी आँखें देख के ये रंग हैराँ हो गयीं
कितनी शम्एँ बज़्मे - गुलशन में फ़रोज़ाँ[7] हो गयीं
कुछ तो मिट्टी में मिलीं कुछ फिर दुरख़्शाँ[8] हो गयीं
'सब कहाँ कुछ लाला - ओ - गुल में नुमायाँ हो गयीं
ख़ाक में क्या सूरतें होंगी कि पिनहाँ[9] हो गयीं'

—मिर्ज़ा 'ग़ालिब'

ख़ाबे - गराने - इशरते - लज़्ज़तकशी से जाग
नादान सोज़े - जलवा - हक़ तो है ऐसी लाग
फ़िरदौस जिस को देख के चिल्ला उठे कि भाग
'ताअत में ता रहे न मयो - अंगबीं की लाग
दोज़ख़ में डाल दो कोई ले कर बहिश्त को'

—मिर्ज़ा 'ग़ालिब'

---

१. सभा को सजाने वाले। २. संक्षेप में। ३. उत्सव और सुख का दौर। ४. जगह। ५. धोखा। ६. बादलों से घिरे हुए दिन और चाँदनी रात। ७. प्रकाशमान। ८. रौशन। ९. लुप्त।

हैं क्या नज़र-फ़रेब[1] ख़यालात का जमाल[2]
शाइर की तरह देख ख़यालों के ख़त्तो-ख़ाल
ख़्वाबो-ख़याल दोनों हैं क्या हिज्र, क्या विसाल
'है आदमी वज़ाते-ख़ुद[3] इक महशरे-ख़याल
हम अंजुमन समझते हैं, ख़िलवत ही क्यों न हो'

—मिर्ज़ा 'ग़ालिब'

इस महफ़िले-हयात में रौनक़ भी थी कभी
आया वो इन्क़लाब हवा ही बदल गयी
अपनी फ़सुर्दगी-ए-निहाँ[4] से बुझी-बुझी
'दाग़े-फ़िराक़ सुहबते-शब की जली हुई
इक शम्अ रह गयी थी सो वो भी ख़मोश है'

—मिर्ज़ा 'ग़ालिब'

वो शेफ़्ता कि आँख न सू-ए-बुताँ[5] उठी
वो शेफ़्ता कि ज़िद मय-ओ-नग़मा से जिन को थी
वो शेफ़्ता कि तकिया न ये छोड़ते कभी
'वो शेफ़्ता कि धूम थी हज़रत के ज़ुहद[6] की
मत पूछिये कि रात मुझे किस के घर मिले'

—नव्वाब मुस्तफ़ा ख़ाँ 'शेफ़्ता'

बाद मेरे कहीं रहने का बहाना कर ले
कोई घर जिस में बसर जाके शबाना कर ले
ऐसी हालत में जो करता है ज़माना, कर ले
'तू कहाँ जायेगी कुछ अपना ठिकाना कर ले
हम तो कल ख़्वाबे अदम में शबे-हिज्राँ[7] होंगे'

—मोमिन ख़ाँ 'मोमिन'

---

१. निगाहों को धोखा देनेवाला। २. सौन्दर्य। ३. अपने आप में। ४. आन्तरिक दुख। ५. माशूकों की तरफ़। ६. परहेज़गारी, निस्पृहता। ७. वियोग की रातें।

एक दिन कूच ज़माने ही से कर जायेंगे
जानिबे-मुल्के-अदम[१] खाक-ब-सर जायेंगे
जान ही से ग़मे-फ़ुरसत में गुज़र जायेंगे
'अब तो घबरा के ये कहते हैं कि मर जायेंगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे'

—शेख़ इब्राहीम 'ज़ौक़'

अरे! आता रहा आड़े बड़ी मुद्दत से ये चर्चा
जभी तक चीज़ है जब तक कि ये पर्दा नहीं उठता
इसी पर्दे ने ता-इमरोज़[२] काबे का भरम रक्खा
'ख़ुदा के वास्ते जाहिद उठा पर्दा न काबे का
कहीं ऐसा न हो याँ भी वही काफ़िर सनम निकले'

—बहादुरशाह 'ज़फ़र'

अयाँ[३] में ढूंढ आया और निहाँ[४] में
यही थी फ़िक्र बज़्मे-दोस्ताँ[५] में
यही धुन थी दयारे-दुश्मनाँ[६] में
'कोई महरम[७] नहीं मिलता जहाँ में
मुझे कहना है कुछ अपनी ज़बाँ में'

—ख़ाजा अलताफ़ हुसैन 'हाली'

हर चश्मे-हुस्नबीं[८] की वहाँ तक नज़र कहाँ
हर क़ल्बे-बेक़रार को उस की ख़बर कहाँ
देखा निगाहे-शौक़ ने उस को मगर कहाँ
'है जुस्तुजू[९] कि ख़ूब से है ख़ूबतर कहाँ
अब ठहरती है देखिए जा कर नज़र कहाँ'

—ख़ाजा अल्ताफ़ हुसैन 'हाली'

---

१. मृत्यु-देश की ओर। २. आज तक। ३. खुले। ४. छिपे। ५. मित्रों की सभा। ६. शत्रुओं की नगरी। ७. राज़दार। ८. सौन्दर्य-परख आँखें। ९. तलाश।

क़िस्सा - ए - जौर यारे - जानी का
वाक़िया मेरी वे - जवानी का
माजरा उस की जाँ-सतानी का
'हाल सब मेरी सख़्त - जानी का
वाढ़ कहती है मुड़ के ख़ंजर से'

—पं० रतननाथ 'सरशार'

हम मिट गये तो वक़्फ़े-अलम[१] इक जहाँ है अब
हम उठ गये तो हर तरफ़ आहो-फ़ुग़ाँ[२] है अब
अब हम नहीं तो ग़मज़दा हर क़ल्बो-जाँ है अब
'हम मर गये तो पुरसिशे-नामो-निशाँ[3] है अब
इस की तलाश कर कि महब्बत कहाँ है अब'

—'दाग़' देहल्वी

रहा जो ये कुश्तो-ख़ूँ[४] का मन्ज़र रहेगी दुनिया भी रंग लाकर
हुए हैं जो वार ये बराबर ये सीना - ए - वक़्त में हैं नश्तर
ज़माना ख़ुद इन्तक़ाम[५] लेगा मिटेंगे अह्ले - सितम[६] सरासर
'क़रीब है यारो ! रोज़े - महशर, छुपेगा कुश्तों का ख़ून क्यों कर
जो चुप रहेगी ज़बाने - ख़न्जर, लहू पुकारेगा आस्तीं का'

—'अमीर' मीनाई

ये इश्क़ का सहरा है ऐ दिल, याँ आलमे-वज्द बराबर है
जो ज़र्रा हवा में उड़ता है इक हालो - क़ाल का दफ़्तर है
मीनारे - ग़ुबारे - पेचीदा क्या हिम्मत - अफ़्ज़ा मंज़र है
'हर चंद बगूला मुज़्तर है, इक जोश तो उस के अन्दर है
इक वज्द तो है, इक रक्स तो है, बेताब सही, बरबाद सही'

—'अकबर' इलाहाबादी

---

१. दुख भोगने में व्यस्त। २. रोना-पीटना। ३. नेकियों और अच्छाइयों की चर्चा। ४. मार-काट। ५. बदला। ६. अत्याचार करने वाले।

इसी से जौरे-पिनहाँ-ओ-अयाँ से मना करते थे
सितमरानी-ए-नाज़े-दिलबराँ[१] से मना करते थे
तुम्हें ख़ूँरेज़ी - ए - दिलदादगाँ[२] से मना करते थे
'इसी दिन को तो क़त्ले-आशिक़ाँ से मना करते थे
अकेले फिर रहे हो युसुफ़े-बे-कारवाँ हो कर'

—ख़्वाजा 'वज़ीर'

मेरी कहीं सुब्ह है कहीं शाम
यकसाँ हैं, इशरतें कि आलाम
रह जाऊँ जहाँ वहीं है आराम
'घर-बार से क्या फ़क़ीर को काम
क्या लीजिए छोड़े घर का नाम'

—पं० दयाशंकर 'नसीम'

ज़रा - सी बात पें हो जाती है मिज़ह[३] पुरनम[४]
ज़रा-सी भूल से उतरे दिलों में नश्तरे-ग़म[५]
ख़फ़ीफ़[६] इशारे भी बन-बन गये हैं तेग़े-सितम
'ख़याले - ख़ातिरे - अहबाब[७] चाहिए हरदम
अनीस ठेस न लग जाये आबगीनों[८] को'

—मीर 'अनीस'

हम कभी अपने नशेमन में थे शादो-आबाद
हमवतन थे गुलो-लाला-ओ-सर्व-ओ-शमशाद
एत्तफ़ाक़ाते - ज़माना[९] से पड़ी ये उफ़्ताद
'था कभी वो भी असीराने-क़फ़स का सैयाद
अब तो इक फूल को मुहताज है, गुलशन कैसा ?'

—तअश्शुक़ 'लखनवी'

---

१. महबूब की अदाओं के अत्याचार। २. दिल देने वालों की ख़ूँरेज़ी। ३. पलक। ४. भीगना। ५. दुख के भाले। ६. हल्के। ७. दोस्तों की ख़ातिर का ख़याल। ८. शीशे का बर्तन, आशिक का दिल। ९. समय-संयोग।

बेकसों पर मेह्रबाँ कुछ चर्खे-गर्दां हो गया
गो न कोई बर-सरे-क़ब्र[१] अश्क-अफ़्शाँ[२] हो गया
आसमाँ पुरसाने - हाले - करमपुरसाँ[३] हो गया
'कुछ न कुछ गोरे-ग़रीबाँ[४] पर भी सामाँ हो गया
चार तारे चर्ख़ से टूटे चराग़ाँ हो गया'

—'तअश्शुक़' लखनवी

मुझे समझते हैं सब यूँ तो एक दीवाना
नसीब सब को नहीं हिम्मते, ये मरदाना
वो इक निगाह थी अपनी जगह इक अफ़साना
'मुझी को नाज़ से देखा जला जो परवाना
तुम एक बज़्म में मरदुम-शिनास[५] बैठे हो!'

—'तअश्शुक़' लखनवी

यहाँ तो बस अमल[६] ही में है खुशकामी-ओ-खुशनामी
नहीं करते जो कुछ ऐसों की क़िस्मत में है नाकामी
जो चूके सामने की चीज़ भी उन को नहीं मिलती
'ये बज़्मे-मय है याँ कोताह-दस्ती[७] में है महरूमी[८]
जो बढ़ कर खुद उठा ले हाथ में मीना उसी का है'

—'शाद' अज़ीमाबादी

पूछते हो मुझ से क्या वजहे - मलाल
बेरुखी पर है तुले अह्ले - जमाल
हम सुनायें भी तो किस को अपना हाल
'वो तो वो तस्वीर भी उन की जलाल
कहती है तुम बात के क़ाबिल नहीं'

—'जलाल' लखनवी

---

१. क़ब्र के ऊपर। २. आँसू बहाना। ३. मजबूरों का हाल पूछने वाला। ४. ग़रीबों को क़ब्र। ५. आदमी पहचानने वाला। ६. क्रिया। ७. हतोत्साह। ८. असफलता।

हर गुंचे में चुटकियाँ बजाती
दामन से हज़ारों गुल खिलाती
ख़ाबीदा ज़मीन को जगाती
'इठलाती, लजाती, मुस्कुराती
किस नाज़ से है वहार आयी'

—ज्वालाप्रसाद 'बर्क़'

पशेमाँ[1] हो के भी मुझ को नहीं होती पशेमानी
परीशाँ हो के भी मुझ को नहीं होती परीशानी
कि हर अफ़साना-ए-ख़ुशफ़हमी-ए-उल्फ़त है तूलानी[2]
'ज़माने भर में रुसवा[3] हूँ मगर, ऐ वाय! नादानी
समझता हूँ कि राज़े-इश्क़ मेरे राज़दाँ तक है'

—अल्लामा 'इक़बाल'

अव न वो गुल है न वो गुलशन न वो अह्ले-चमन
अव है सन्नाटा जहाँ जमता था रंगे-अंजुमन
नक़्शे-दौराँ हो गयी ऐ दिल! वो वज़्मे-फ़िक्रो-फ़न
'अव न वो सुहवत न वो जलसे न वो लुत्फ़े-सुख़न
ख़्वाव था जो कुछ कि देखा जो सुना अफ़साना था'

—मौलाना 'शिब्ली'

इस ग़ुलामी में कुल आसार हैं वरवादी के
मानी ही क्या हैं ग़ुलामों के ग़मो-शादी के
नग़मा-ए-साज़ के नाले किसी फ़रियादी के
'दिल में इस तरह से अरमान है आज़ादी के
जैसे गंगा में झलकती है चमक तारों की'

—'चकवस्त' लखनवी

१. लज्जित। २. लम्बा, सविस्तार। ३. बदनाम।

तवज्जुह इधर मेरे हमराज़ देना
सहारा मुझे मेरे दमसाज़ देना
कुछ इस वक़्त भी कोई अंदाज़ देना
'ग़ज़ल उस ने छेड़ी मुझे साज़ देना
ज़रा उम्रे-रफ़्ता को आवाज़ देना'

—'सफ़ी' लखनवी

हस्ती अज़ीज़ की भी गिनते हैं हस्तियों में
हुश्यारियों में गुज़री अपनी न मस्तियों में
ढूँढ़ा किया हूँ सत्हे - हस्ती की बस्तियों में
'उम्रे - अज़ीज़ गुज़री हसरत - परस्तियों में
ऐसी भी ज़िन्दगी का या रब ! हिसाब होगा'

—'अज़ीज़' लखनवी

हिकायत फ़र्दे - वाहिद[1] की कहाँ मालूम होती है
सरासर ये तो तारीखे - जहाँ मालूम होती है
ये हर इनसान का अपना बयाँ मालूम होती है
'कहानी मेरी रूदादे - जहाँ[2] मालूम होती है
जो सुनता है उसी की दास्ताँ मालूम होती है'

—'सीमाब' अकबराबादी

पिनहाँ थी जो हर - इक नज़र से, यारो ! वो शय और ही थी
आँखों को भी क्या नज़र आये, दिल ही अगर कर जाय कमी
जिस को किसी ने भी नहीं देखा, देखने की थी चीज़ वही
'तारा टूटते सब ने देखा ये नहीं देखा एक ने भी
किस की आँख से आँसू टपका किस का सहारा टूट गया'

—'आरज़ू' लखनवी

---

१. एक व्यक्ति। २. संसार की कहानी।

तोड़ने से टूटती हैं ग़म की ज़ंजीरें कहीं
अपने बस की हैं भला ख्वाबों की तावीरें कहीं
खुल के हँसती - बोलती हैं दिल की तस्वीरें कहीं
'वस्ल की बनती हैं इन बातों से तदबीरें कहीं
आरज़ूओं से फिरा करती हैं तक़दीरें कहीं!'

—'हसरत' मोहानी

हक़ीक़त आँख ओझल और झगड़ा कुफ़्रो - ईमाँ का
इसी के वास्ते जिस को किसी ने भी नहीं देखा
समझ कर बात असली ठीक ही शाइर ने फ़रमाया
'हिजाबे - नाज़े - बेजा'[1] यास 'जिस दिन बीच में आया
उसी दिन से लड़ाई ठन गयी शेखो - बरहमन में'

—मिर्ज़ा 'यास' 'यगाना' चंगेज़ी

अजब समाँ था निगाहों में था अजब मंज़र
हर - एक मोड़ पें गुमराहियों का खौफ़ो - खतर
न हम कभी के मुसलमाँ न हम कोई काफ़र
'ठिठक गये हरमो - दैर[2] के दोराहे पर
खिलाफ़ जा न सके शाहराहे - फ़ितरत के'

—मिर्ज़ा 'यास' 'यगाना' चंगेज़ी

वो बज़्मे - तरब, नग़्मा - ए - मुद्दई - होश
उठती हुई साक़ी की नज़र मयकदा बरदोश
लो रात गयी, बात गयी, हो रहो खामोश!
'हर शाम हुई सुब्ह को इक ख्वाबे - फ़रामोश
दुनिया यही दुनिया है तो क्या याद रहेगी'

—मिर्ज़ा 'यास' 'यगाना' चंगेज़ी

१. महबूब का अनुचित परदा करना। २. काबा और बुतखाना।

ज़िन्दगी ख़त्म हुई शह्‌रे-ख़मोशाँ[1] को चलो
जो अमानत थी ज़मीं की, वो ज़मीं को सौंपो
उम्र भर हिज्र में जागे थे अब आराम करो
'नासिरी' क़ब्र पॅ इबरत[2] के लिए लिखवा दो
तूल[3] खींचा है यहाँ तक शबे-तन्हाई ने'

—प्रो० मेहदी हसन 'नासिरी'

ज़िक्र था शोख़ी-ओ-शरारत का
फ़ितना-ख़ेज़ाने-सर्वो-क़ामत का
नाज़ो-अन्दाज़ो-शानो-शौकत का
'ज़िक्र जब छिड़ गया क़यामत का
बात पहुँची तेरी जवानी तक'

—'फ़ानी' बदायूनी

कहते हैं आकाश के तारे
खायें क़सम दिन के उजयारे
पलकें भी करती हैं इशारे
'क्यों काजल दे काहे सँवारे
ये नैना बिन काजल कारे'

—लोकगीत

नाख़ुश हो तो ख़ुश भी हो लो
और दुआएँ दो जीवन को
आख़िर कब तक ये लीला हो
'कहत कबीर सुनो भाई साधो
मौत गुरू जग चेला'

—कबीरदास

---

१. अर्थात् क़ब्र। २. सीख। ३. विस्तार।

फ़लक ने किसे तीर मारा नहीं है
जिगर किस का याँ पारा-पारा नहीं है
क़ज़ा पर किसी का इजारा नहीं है
'ज़माने की गर्दिश से चारा नहीं है
ज़माना हमारा - तुम्हारा नहीं है'

—'इब्रत' गोरखपुरी

क्या ग़मो - रंजो - मुसीबत से नहीं हम वाक़िफ़
क्या सितमरानी - ए - क़िस्मत से नहीं हम वाक़िफ़
फिर भी असरारे - मशीअत[1] से नहीं हम वाक़िफ़
'ज़िन्दगानी की हक़ीक़त से नहीं हम वाक़िफ़
मौत का नाम जो सुनते हैं तो मर जाते हैं'

—'इबरत' गोरखपुरी

मुझ को ऐ जोशे - जुनूँ ! बस यही आता है ख़याल
फ़र्क़ वालों में ये किस वज्ह से है, बाल तो बाल
मुझ पें इस ख़ूबी - ए - तक़दीर का खुलता नहीं हाल
'एक वो बाल है जो है सरो - गर्दन पें ववाल
एक वो बाल हैं जो ता - ब - कमर जाते हैं'

—'इबरत' गोरखपुरी

हो आयी है बता दे मुझे तू कहाँ - कहाँ
क्या हर जगह है एक-ही-सा रंगे-बोस्ताँ
हर बाग़ में नहीं है यहाँ एक ही समाँ
'क्या ढूँढ़ती है मेरे गुलिस्ताँ में ऐ खिज़ाँ !
तू जानती है सब कि चमन में बहार है'

—'इबरत' गोरखपुरी

---

१. ईश्वर के भेद, मर्म।

कल जो ज़रा निकल गया घर से मैं इज़्तराब में
कहती थी शोख़ी - ए - बयाँ हुस्न के इस ख़िताब में
रह गया मैं तो दम - ब - ख़ुद कुछ न कहा जवाब में
'बोले वो देख कर मुझे यों शबे - माहताब में
देखो कहीं पकड़ न ले चाँदनी रात चोर को'

—'इब्रत' गोरखपुरी

हातिफ़ ने ये कल मुझे ख़बर दी
हालत कब आज है जो कल थी
अन्दाज़ा नहीं है ग़ैब को भी
'इस दौर में ज़िन्दगी बशर की
बीमार की रात हो गयी है'

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

तू मुअत्तर कर गयी ये सरज़मीं, ऐ बू - ए - दोस्त !
ये कसक इस में कहाँ से आ गयी, ऐ ख़ू - ए - दोस्त !
उठते हैं शोले पयापय ऐ जमाले - रू - ए - दोस्त !
'दिल दुखे रोये है शायद इस जगह, ऐ कू - ए - दोस्त !
ख़ाक का इतना चमक जाना ज़रा दुश्वार था !'

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

वो जगमगाती शुआएँ निगाहे - जानाँ की
फ़ज़ा में आतिशे - सय्याल - सी[1] छलकती हुई
दिलों में रक़्स - कुनाँ आयते - हयात उतरी
'किसी की बज़्मे - तरब में हयात बटती थी
उमीदवारों में कल मौत भी नज़र आयी !'

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

१. शमअ की तरह।

कोई किसी की बात न पूछे इस दुनिया की रस्म यही है
एक दूसरे से बेगाना, जहाँ जाव, नफ़सी - नफ़सी है
जिस दरे - दिल को खड़कायेंगे, देखेंगे ज़ंजीर लगी है
'सब को अपने-अपने दुख हैं, सब की अपनी-अपनी पड़ी है
ऐ दिले-ग़मगीं ! तेरी कहानी कौन सुनेगा किस को सुनायें ?'

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

मैं देखता हूँ ठहरी हुई कायनात है
गर्दिश नहीं सपह्र[1] में, क्या आज बात है
बस मैं हूँ और रब्बे-दो-आलम की जात है
'अब दौरे - आसमाँ है न दौरे - हयात है
ऐ दर्दे-हिज्र, तू ही बता कितनी रात है'

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

हम वक़्त के सीने में इक शम्अ जला जायें
सोयी हुई राहों के ज़र्रों को जगा जायें
कुछ रंग उड़ा जायें कुछ रंग जमा जायें
इस दश्त को नग़्मों से गुलज़ार बना जायें
'जिस सम्त से गुज़रें हम कुछ फूल खिला जायें'

—'फ़िराक़' गोरखपुरी

---

१. आकाश।

० दोहे ०

नया घाव है प्रेम का जो चमके दिन - रात।
होनहार बिरवान के चिकने - चिकने पात॥

आँखें छत से लग गयीं ऐसे पड़े बीमार।
वो आँखें जब से फिरीं भूले लैलो-नहार[1]॥

यही जगत की रीत है यही जगत की नीत।
मन के हारे हार है मन के जीते जीत॥

मैं यूँ मालामाल हूँ जैसे ज्ञान से वेद।
मेरे घर आया कोई जैसे मन में भेद॥

जो न मिटे ऐसा नहीं कोई भी संजोग।
होता आया है सदा मिलन के बाद बियोग॥

जग के आँसू बन गये निज नयनों के नीर।
अब तो अपनी पीर भी जैसे परायी पीर॥

पिया मिलन हो जायगा सब को देर-सबेर।
ऐ राही अनगिनत हैं प्रेम-बाट में फेर॥

तुम छूटे तो छुट गये जनम-जनम के मीत।
तुम रूठे रूठा जगत मानी जगत की रीत॥

धरती में क्या शक्ति है मन में करो विचार।
बड़े-बड़े जब पग धरें डगमगायें सौ बार॥

इस धरती से जो लड़े क्यों न हार वो जाय।
नद्दी गिर को काट के धरती ही में समाय॥

कहाँ कमर सीधी करे कहाँ ठिकाना पाय।
तेरा घर जो छोड़ दे दर-दर ठोकर खाय॥

---

१. रात-दिन।

जगत - धुदलके में वही चित्रकार कहलाय।
कोहरे को ज़ो काट कर अनुपम चित्र बनाय॥

शीशमहल है ये जगत देख ऊँच या नीच।
मुखड़े आते हैं नज़र दीवारों के बीच॥

बन में पंछी जिस तरह भूल जाय निज नीड़।
हम बालक सम खो गये थी वो जीवन - भीड़॥

याद तेरी एकान्त में यूँ छूती है विचार।
जैसे लहर समीर की छुए गात सुकुमार॥

रूप नगर में जा बसे जो चाहे विश्राम।
मुखड़ों की वाँ सुबह है केशों की वाँ शाम॥

मैंने छेड़ा था कहीं दुखते दिल का साज़[1]।
गूँज रही है आज तक दर्द भरी आवाज़॥

दूर तीरथों में बसे वो है कैसा राम।
मन-मंदिर की यात्रा मूरख चारों धाम॥

वेद, पुरान और शास्त्र को मिली न उस की थाह।
मुझ से जो कुछ कह गयी इक बच्चे की निगाह॥

रेखा तेरे रूप की सकल ज्ञान-विज्ञान।
जीवन के हर साँस की यहीं टूटती तान॥

बिन खिड़की बिन द्वार के चार तरफ़ है भीत।
इन गलियों में हम कहाँ गायें तेरे गीत॥

मूरख तेरी समझ में आये समय का घेर।
वहाँ नहीं अँधेर है भले लगे कुछ देर॥

नमक भी कितना पाक है घर-घर में भी लोन।
आँसू की हर बूँद में सागर में भी लोन॥

दीप धरा पर फूल के गगन पर अंजुमो-माह[2]।
सब पर सूरज की किरन मुझ पर तेरी निगाह॥

---

१. बाजा। २. तारे और चाँद।

कोमल - कोमल जड़ - कणों से पहाड़ कट जाय ।
तरल नदी की चोट से पत्थर भी फट जाय ॥

कलाकार को चाहिए केवल तेरा ध्यान ।
कविता का उपहार है एक मृदुल मुस्कान ॥

पल भर का ये साथ है जनम-जनम का साथ ।
क्यों मैं ने कैसी कही ? साजन लाना हाथ ॥

विश्व एक है ये नियम कभी न ऐ मन भूल ।
इक तारा थर्रा उठा जब तोड़ा इक फूल ॥

क्या छोटा कैसा बड़ा धोका तुझे महान ।
क्या निर्बल, कैसा सबल भरम मान - अपमान ॥

तेरा दर्शन जो करे सो अवाक् हो जाय ।
गूँगे का सपना हुआ समझ - समझ पछताय ॥

मूल, फूल, फल, पात हैं गुप्त और अज्ञात ।
मूल, फूल, फल, पात को नहीं चाहिए ख्यात ॥

निर्धन - निर्बल के लिए धन-बल का क्या काम ।
निर्धन के धन राम हैं निर्बल के बल राम ॥

एक दिल अपने पास है आ जाये जिस काम ।
लाया हूँ बाजार में बिक जाये जिस दाम ॥

पिया मिलन की याद में मलते रहिये हाथ ।
प्रिय की प्यारी बात सब गयी प्रिया के साथ ॥

चंचल जिस जानिब[1] चले टेढ़ी-चाल दिखाय ।
मन की नाव समुद्र में आड़े-तिरछे जाय ॥

बुझा हुआ दिल भी कभी जान चुका है लाग ।
राख समझ न कुरेदिये दबी हुई है आग ॥

निर्धन कवि के पास क्या कुछ पीड़ा, कुछ प्रीत ।
कुछ अनदेखे स्वप्न हैं दर्द भरे कुछ गीत ॥

---

१. दिशा में ।

समझो तो क्या चीज़ है दर्द भरे ये गान।
अमर हुई है ज़िन्दगी कर के ये विषपान ॥

मैं ऐसी बातें करूँ जो हर दिल में समायँ।
सत्य समझ कर भी जिन्हें दुबधे में पड़ जायँ ॥

शब्दों की धुन है कोई या बजते हैं कान।
या दिल में हैं गूँजते भूले - बिसरे गान ॥

पाप - पुन्य की जंग[1] है जीवन जिस का नाम।
जारी है हर हृदय में देव-दनुज संग्राम ॥

वो सुकुमार सुगंध है हिलते ही निकले प्रान।
हर करवट इक मौत है हरेक साँस इक बान ॥

आँसू की वो बूँद जो पलक ओट रह जाय।
उस से कहीं बहुमूल्य है जो आँसू बह जाय ॥

बन असीम विस्तार का मन है वो मैदान।
बिन-पानी बिन हवा के उठे जहाँ तूफ़ान ॥

सुनी अनसुनी एक है गले कान भी सोय।
सब रामायन सुन गये सीता किस को जोय ? ॥

वो मन उड़ती धूल है जो मन डावाँडोल।
अपने में रह कर तपे तो हीरा अनमोल ॥

पिया दरस हो जायगा सुन मेरे दो बोल।
सर की आँखें बन्द कर मन की आँखें खोल ॥

जिन के मन में भेद है उन में ही ये सूझ।
औरों के मन भेद को वही सकेंगे बूझ ॥

धरती को जीता मगर ज़र्रे[2] से गये हार।
सागर एक छलाँग का क़तरा अपरमपार ॥

---

१. युद्ध। २. कण।

०
०
अ ह् आ र
० ०

नश्तरे - सुख़न

(चन्द ऐसी ग़ज़लों के अश्आर जो यहाँ शामिल नहीं हो सकीं)

अभी फ़ितरत से होना है नुमायाँ शाने - इन्सानी
अभी हर चीज़ में महसूस होती है कमी अपनी



शाम के साये घुले हों जिस तरह आवाज़ में
ठंडकें जैसी खनकती हों गले के साज़ में



बेज़रर[1] है फ़िराक़ की गाली
उसकी गाली, फ़क़ीर की गाली



शाख़े-गुल जिस तरह हवा से मुड़े
याद है तेरे रूठने की अदा



हुस्न-परस्ती पाक मुहब्बत बन जाती है जब कोई
वस्ल[2] की जिस्मानी लज़्ज़त[3] से रूहानी कैफ़ीयत[4] ले

---

१. अहानिकारक। २. मिलन। ३. शारीरिक आनन्द। ४. आत्मिक भावना।

हम से क्या हो सका महब्बत में
ख़ैर, तुम ने तो बेवफ़ाई की



दुनिया को बदलने का तसलीम[1] तेरा दावा
हम फिर भी ये कहते हैं दुनिया वही दुनिया है



ग़रज़ कि काट दिये ज़िन्दगी के दिन ऐ दोस्त
वो तेरी याद में हों या तुझे भुलाने में



दिल-दुखे रोये है शायद इस जगह ऐ कूए-दोस्त[2]
ख़ाक का इतना चमक जाना ज़रा दुश्वार था



ख़ाक में चोट दबी थी यँ न जाने कब की
रगे - पैमाना लहू देने लगी ऐ साक़ी !



इक फ़ुसूँ-सामाँ[3] निगाहे-आसमाँ[4] की देर थी
इस भरी दुनिया में हम तनहा नज़र आने लगे



शबे - हिज्र थी यूँ तो मगर पिछली रात को
वो दर्द उठा फ़िराक़ कि मैं मुस्कुरा दिया

---

१. स्वीकार। २. मित्र की गली। ३. जादू भरी। ४. आकाश की दृष्टि।

ये ज़िन्दगी के कड़े कोस याद आता है
तेरी निगाहे-करम का घना-घना साया



जो उलझी थी कभी आदम के हाथों
वो गुत्थी आज भी सुलझा रहा हूँ



जहाँ में थी बस इक अफ़वाह तेरे जल्वों की
चराग़े-दैरो-हरम[1] झिलमिलाये हैं क्या-क्या



तअज्जुब क्या, तेरे आगे जो हम कुछ चुप-से रहते हैं
हमारे दरमियाँ ऐ दोस्त! लाखों ख्वाब हाइल[2] हैं



तुम मुख़ातिब भी हो क़रीब भी हो
तुम को देखें कि तुम से बात करें



कौन ये ले रहा है अँगड़ाई
आसमानों को नींद आती है



कोई आया, न आयेगा लेकिन
क्या करें गर न इन्तज़ार करें

१. काबे एवं बुतख़ाने के दीपक। २. रुकावट।

चुप हो गये तेरे रोने वाले
दुनिया का ख़याल आ गया है



या इश्क़ नहीं करते या लोग हैं बे-परवा
क्यों इश्क़ में अब कोई बदनाम नहीं होता



उस का सरापा हम से पूछो
चेहरा ही चेहरा, पाँव से सर तक



विसाल उस से मैं चाहूँ कहां मेरी क़िस्मत
ये रो रहा हूँ कि क्यों उस को मैंने देखा था



तुम से आज़ुर्दा[1] फ़िराक़ आज बहुत आये नज़र
कुछ तो लाज़िम था तुम्हें उन की बुज़ुर्गी का ख़याल



इश्क़ में सच ही का रोना है
झूठे नहीं तुम, झूठे नहीं हम



इस पुर्सिशे-करम पॅ तो आँसू निकल पड़े
क्या तू वही ख़ुलूसे-सरापा है आज भी

---

१. रुष्ट।

जो तेरे गेसू-ए-पुरख़म से खेल भी न सकें
उन उँगलियों से सितारों को छेड़ सकता हूँ

●

आज आँखों में काट ले शबे-हिज्र
ज़िन्दगानी पड़ी है सो लेना

●

वो आलम और ही है जिस में मीठी नींद आ जाये
ग़मो-शादी में सोनें के लिए रातें नहीं होतीं

●

टूटा है फ़लक से एक तारा
या टूटा है आसरा किसी का

●

तू याद आये तेरे जौरो-सितम लेकिन न याद आयें
महब्बत में ये मासूमी बड़ी मुश्किल से आती है

●

रमता - जोगी बहता पानी
इश्क़ भी मंज़िल छोड़ रहा है

●

ये जाहो-इज़्ज़त, ये नामो-शुहरत, है छांव बस एक चलती-फिरती
बहुत न मग़रूर[1] हो जाइयेगा फ़िराक़ साहब, फ़िराक़ साहब

१-अभिमानी।

जिन की तामीर इश्क़ करता है
कौन रहता है उन मकानों में



तेरा विसाल बड़ी चीज़ है मगर ऐ दोस्त
विसाल को मेरी दुनिया-ए-आरज़ू न बना



शिव का विष - पान तो सुना होगा
मैं भी ऐ दोस्त, पी गया आँसू



ज़िन्दगी तो गयी शबाब के साथ
ज़िन्दगी का खुमार बाक़ी है



हम ने किये हैं गुनाह को सिज्दे, सिद्क़ो-हुज़ूरी-ए-क़ल्ब[1] के साथ
बड़ी रयाज़त की तब जाके, नमाज़े-गुनह के इमाम हुए



जाती - जागती दुनिया में भी
चलते - फिरते मुर्दे देखे



अभी जबीने - बशर मुन्तज़र-सी[2] हो जैसे
कि आदमी अभी फ़ितरत का शाहकार नहीं

१. हृदय की सच्चाई। २. प्रतीक्षा में।

रयाज़े-दह्र में झूठी हँसी भी हम ने देखी है
गुलिस्ताँ दर बग़ल हर ग़ुंचा-ए-ख़न्दाँ[1] नहीं होता



फ़िराक़ इक-इक से बढ़कर चारासाज़े-दर्द[2] हैं लेकिन
ये दुनिया है यहाँ हर दर्द का दरमाँ नहीं होता



अब न तुम वो रहे न हम वो रहे
इत्तेफ़ाक़ात हैं ज़माने के



देख रफ़्तारे - इन्क़लाब फ़िराक़
कितनी आहिस्ता और कितनी तेज़



न अपने आप बदली है न अपने आप बदलेगी
ये दुनिया है, तू दुनिया को बदल दे, देखता क्या है



तारीकियाँ चमक गयीं आवाज़े - दर्द से
मेरी ग़ज़ल से रात की ज़ुल्फ़ें सँवर गयीं



समा सका न कहीं जब नशाते-लामहदूद[3]
तो उस को हुस्न ने दो मुट्ठियों में बन्द किया

---

१. हँसता हुआ ग़ुंचा। २. दर्द की दवा करनेवाले। ३. असीम प्रसन्नता।

ग़मे-फ़िराक़ तो उस दिन ग़मे-फ़िराक़ हुआ
कि उन को प्यार किया मैं ने जिन से प्यार नहीं

•

जब-जब इसे सोचा है दिल थाम लिया मैं ने
इन्सान के हाथों से इन्सान पँ जो गुज़री

•

तू एक था मेरे अश्आर में हज़ार हुआ
इस इक चराग़ से कितने चराग़ जल उट्ठे

•

शिकवा किया सितम का तो नमदीदा हो गये
तुम तो ज़रा-सी बात पँ संजीदा[1] हो गये

•

उम्र में मुझ से बड़े मेरे मुआसिर[2], ऐ फ़िराक़
मरते दम उर्दू ग़ज़ल को मेरे ज़िम्मे कर गये

•

ख़ुद को अह्ल उन की अमानत का जो साबित कर सकूँ
तो ये समझूँगा वसीयत उन की पूरी हो गयी

•

फ़िराक़ अब अह्ले-दुनिया से विदा-ए-आख़िरी ले लो
वो देखो, शाइराने - रफ़्ता इस्तक़बाल[3] को आये

---

१. गम्भीर। २. समकालीन। ३. अभ्यर्थना।

तुम हो पसमाँदगाने - दौरे - फ़िराक़
बख़्श दो! सब कहा - सुना मेरा



याद रखना कि था तुम्हीं - सा कोई
बज़्मे - हस्ती में दर्द की तस्वीर



किस को रोता है उम्र भर कोई
आदमी जल्द भूल जाता है



कुछ ऐसी भी गुज़री हैं तेरे हिज्र[1] में रातें
दिल दर्द से ख़ाली हो मगर नींद न आये



फ़रेबे-रंगो-बू खाकर चमन से हाथ धो बैठे
तेरे वहशी तो कब के ले उड़े होते गुलिस्ताँ को



दर्दे-दिल क्या है खुला आज तेरे लड़ने पर
तुझ से इतनी थी महब्बत मुझे मालूम न था



मुझ को ख़राब कर गयीं नीम-निगाहियाँ[2] तेरी
मुझ से हयातो-मौत भी आँखें चुरा के रह गयीं

---

१. विरह २. अधखुली आँखें।

गुज़रे हैं इश्क़ नाम के ऐ दोस्त इक बुज़ुर्ग
हम लोग भी फ़क़ीर उसी सिलसिले के हैं



और कुछ इश्क़ में नहीं मक़दूर[1]
क्या करें हम भी रो के रह जायें



तेरा दीदार[2] फ़िक्रे-शेर के वक़्त
आज बिगड़ी बनी - बनायी बात



खुद अपने जीते मुर्दे को तुझे देना पड़े काँधा
गराँ इस दर्जा बारे - इनफ़रादीयत न हो जाये



कुछ दर्द दे गया हूँ ज़माने को ऐ फ़िराक़
यह सोच कर कि बाद को ये याद आयेंगे



इक उतरता हुआ ख्वाबे - सीमीं[3]
चाँद से चाँदनी का सफ़र है



है ये तेरा खयाल या कोई और
रास्ता रोक कर खड़ा है कौन

---

१. बस में। २. दर्शन। ३. रूपहला स्वप्न।

रगे-जाँ से नाज़ुक हैं ख़त उस बदन के
इलाही ये किस की क़लम-कारियाँ हैं



इन का शजरा आफ़ताबों से भी ऊँचा है बहुत
आप से मिलिए, जनाबे इश्क़ आली ख़ान्दाँ



तेरी वो नर्म दोशीज़ा-निगाही दिल नहीं भूला
पड़ी जब-जब नज़र तेरी निगाहे-अव्वलीं[1] निकली



झिलझिल झिलमिल तारों ने भी पायल की झंकार सुनी थी
चली गयी कल छमछम करती पिया मिलन की रात कहाँ



तुझे तो हाथ लगाया है बारहा लेकिन
तेरे ख़याल को छूते हुए मैं डरता हूँ



थे ख़ज़ाने भरे दो-आलम के
एक आँसू जो मोल ले न सके



तेरा पैमाना जब टूटा न आवाज़े-शिकस्त[2] आयी
वह टूटा इस तरह जैसे किसी का आसरा टूटे

---

१. पहली नज़र। २. टूटने की ध्वनि।

जागे हैं फ़िराक़ आज ग़मे - हिज्र में ता-सुब्ह
आहिस्ता चले आओ अभी आँख लगी है



शाम के झुटपुटे में यूँ तेरा खयाल दिल में आय
जैसे जबीने-चर्ख़[1] पर कोई सितारा जगमगाय



ऐ मौत आके हम को ख़ामोश कर गयी तू
सदियों दिलों के अन्दर हम गूँजते रहेंगे



सुनो मुझ से असरारे-आलम[2] कि मैं ने
सुकूते - लबे - नाज़[3] से बात की है



महब्बत को हँसी - खेल आज तू ने कह दिया नादाँ
ख़बर है कुछ महब्बत की ? बड़ी तकलीफ़ होती है !



इश्क़ के कुछ लम्हों की क़ीमत उजले - उजले आँसू हैं
हुस्न से जो कुछ भी पाया था कौड़ी - कौड़ी अदा किया



कभी पिछली रात को यक-ब-यक जो हवाए-सर्द इधर आ गयी
मुझे ख़ुद भी हो न सकी ख़बर तेरी याद आँसू बहा गयी

---

१. आकाश के ललाट । २. जगत् के भेद । ३. महबूब के ख़ामोश ओठों ।

हवाए - जवानी के झोंके न पूछो
फ़िराक़ इस हवा में न जागे न सोये

•

शरीके - बज़्म हो कर यों उचट कर बैठना तेरा
खटकती है तेरी मौजूदगी में भी कमी तेरी

•

फ़रेबे - अह्दे - महब्बत की सादगी की क़सम
वो झूट बोल कि सच को भी प्यार आ जाये

•

हम भी मुसाफ़िर तुम भी मुसाफ़िर
साथ चलें तो अच्छा हो

•

सो रही हैं हक़ीक़तें हर सू
बोलो आहिस्ता और आहिस्ता

•

वो जिन्हें याद करके रोता हूँ
कभी मुझ को भी याद करते हैं ?

•

दमक रहेगी मेरी सन्दली जबीनों[1] पर
मुझे ज़वाल[2] नहीं हुस्न का सुहाग हूँ मैं

---

१. नारी माथों पर । २. गिरावट ।

मोती के दो थाल सजाए आज हमारी आँखों ने
तुम जाने किस देश सिधारे भेजें ये सौग़ात कहाँ



हर लिया है किसी ने सीता को
ज़िन्दगी है कि राम का बनवास



फ़ज़ा तबस्सुमे - सुब्हे - बहार थी लेकिन
पहुँच के मंज़िले - जानाँ पॅ आँख भर आयी



खुदा को भूल गया हूँ बना के सौ काबे
बुतों को तोड़ के रक्खी बिनाए-बुतख़ाना[1]



मेरे अश्आरे-दिलकश को जगह दे अपने पहलू में
कि ये नग़मे तेरे सच्चे रफ़ीक़े - ज़िन्दगी होंगे



महब्बत में मेरी तनहाइयों के हैं कई उनवाँ[2]
तेरा आना तेरा मिलना तेरा उठना तेरा जाना



पूछते हो कौन हूँ कोई बता दे तुम को काश
शाइरे - आज़म फ़िराक़े - खातिमुलमुतग़ज़्ज़लीन[3]

---

१. मन्दिर की नींव। २. शीर्षक। ३. महाकवि फ़िराक़ जो ग़ज़ल कहने वालों में अन्तिम हैं।